विचार दृष्टि

वर्ष : 8 अंक : 27 अप्रैल-जून 2006 25 रुपये

'लाभ के पद' को लेकर राष्ट्रीय राजनीति गरमायी

- तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति
- साहित्यकार और प्रेम के विविध रूप
- बिहार विकास की ओर

शहादत दिवस के अवसर पर 30 जनवरी, 2006 को अणुव्रत महासमिति, अहिंसा समवाय द्वारा राष्ट्रीय विचार मंच एवं अन्य समानधर्मी संस्थाओं की सहभागिता से अणुव्रत भवन से राजघाट तक आयोजित 'मौन अहिंसा यात्रा' की झांकी

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष- 8 अप्रैल-जून, 2006 अंक- 27

संपादक-प्रकाशक : सिद्धेश्वर
सं. सलाहकार : गिरीश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन
उप संपादक : डॉ० शाहिद जमील
सहायक संपादक : अंजलि
आवरण साज-सज्जा :
शब्द संयोजन : एस०पी० इनफोटेक
डी-55, शिपरा होटल के पास,
लक्ष्मीनगर, दिल्ली-92

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय
'दृष्टि', 6 विचार विहार, यू०-207,
शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
☎ : (011) 22530652 / 22059410
मोबाईल : 9811281443 / 9811310733
फैक्स : (011) 52487975
E-mail: vichardrishti@hotmail.com
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
☎ : 0612-2228519

पटना कार्यालय
आर० ब्लॉक, पथ सं० 5, आवास सं० सी०/6,
पटना-800001 ☎ : 0612-2226905

ब्यूरो प्रमुख
नागपुर : मनोज कुमार ☎ : 2553701
कोलकाता : जितेन्द्र धीर ☎ : 24692624
चेन्नई : डॉ० मधु धवन ☎ : 26262778
तिरूवनंतपुरम : डॉ० ऋषभदेव शर्मा
बैंगलूर : पी०एस०चन्द्रशेखर ☎ : 26568867
हैदराबाद : श्री चंद्रमौलेश्वर प्रसाद
जयपुर : डॉ० सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎: 2225676
अहमदाबाद : रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र'

प्रतिनिधि
दिल्ली : श्री उदय कुमार 'राज़'
लखनऊ : प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,
ग्वालियर : डॉ. महेन्द्र भटनागर
सतना : डॉ. राम सिया सिंह पटेल
देहरादून : डॉ. राज नारायण राय

मुद्रक
प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड एक्स-47, ओखला
इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य एक प्रति :	25 रुपये
वार्षिक :	100 रुपये
द्विवार्षिक :	200 रुपये
आजीवन सदस्य :	1000 रुपये
विदेश में एक प्रति :	US $ 05
वार्षिक :	US $ 20
आजीवन:	US $ 250

एक नज़र में रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना ... 02
संपादकीय ... 04
विचार-प्रवाह :
अशांत आधुनिकता ... 06
-प्रो. प्रेम मोहन लखोटिया
बिहार का नव निर्माण और रेणु ... 07
-प्रो. नवल किशोर प्र. श्रीवास्तव
साहित्य :
साहित्यकार और प्रेम के विविधा रूप ... 10
-चंद्र मौलेश्वर प्रसाद
कहानी :
बिल्ली—डॉ. अनुपमा ... 12
पहचान—कमला प्रसाद 'बेखबर' ... 15
काव्य-कुंज : ... 18
युगल, 'राही', नलिनी कांत, वीणा, चितरंजन, मधुर शास्त्री, रघुवंश, दयानन्द, औरंगाबादी
समीक्षा :
गीत उत्तरार्द्ध : उत्कट जिजीविषा के विमोहक गीत—विनय कु. चौधरी ... 22
व्यंग्य :
प्रोफेसर किंकर्त्तव्यविमूढ़ ... 26
-राधा कांत भारती
क्यों मनाते हैं पहली अप्रैल को मूर्ख दिवस? ... 28
-डॉ. हरिकृष्ण प्र. गुप्त 'अग्रहरि'
राजनीतिक नजरिया :
तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति ... 29
-उदय कुमार 'राज़'
आधी आबादी :
वर्तमान परिवेश में गृहिणी के समक्ष नई चुनौतियाँ—अंजलि ... 30
समाज :
भारतीय समाज: समस्या एवं समाधान ... 32
-डॉ. महेशचन्द्र शर्मा
बिहार :
बिहार विकास की ओर—सिद्धेश्वर ... 34
गतिविधियाँ :
बिहार में युवा एवं फिल्म महोत्सव ... 37
साझा कृति 'मयुरा' का लोकार्पण ... 38
सोनिया के इस्तीफे पर किसने क्या कहा ... 39
नई दिल्ली में अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला ... 40
रेणु जयंती पर विचार संगोष्ठी ... 41
पंजाब में अणुव्रत कार्यशाला ... 42
दक्षिण भारत :
हैदराबाद की चिट्ठी ... 44
सम्मान :
विंदा को ज्ञानपीठ पुरस्कार ... 45
कुँवर को शलाका सम्मान ... 45
संस्मरण:
पद्मश्री डॉ. शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव ... 46
वासुदेव नारायण 48
आर.पी. सिन्हा 50
गाँव-जवार :
ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना ... 51
अध्यात्म :
क्या इतना नाजुक है हिंदू धर्म ... 52
साभार स्वीकार ... 55

लाभ के पद — बिहार और रेणु — सम्मान — संस्मरण — संस्मरण — साहित्य — श्रद्धांजलि

पत्रिका-परामर्शी

❑ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि' ❑ प्रो० राम बुझावन सिंह ❑ प्रो. धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❑ श्री जियालाल आर्य ❑ डॉ० बालशौरि रेड्डी ❑ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❑ श्री बाँकेनन्दन प्र० सिन्हा ❑ डॉ० सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❑ डॉ० एल०एन० शर्मा

पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं
रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

पाठकीय पन्ना

संपूर्णता में विलक्षण पत्रिका

'विचार दृष्टि' का 25वाँ अंक हस्तगत हुआ और शीघ्र ही मैं इसकी ओर आकर्षित हो गया। एक-पर-एक निबंध और कहानियाँ मेरी अंतरात्मा को छू गयीं। विशेषत: संपादकीय पढ़ने में मैं डूब गया और पाया कि क्यों इस पत्रिका का नाम 'विचार दृष्टि' है। जिस गहराई से राष्ट्रीय एकता की चुनौतियों की पड़ताल की गयी है वह अविस्मरणीय है। आजादी के समय से लेकर आधुनिक चुनौतियों के काल तक की परिस्थितियों के अनुरूप राष्ट्रीयता को परिभाषित, विश्लेषित एवं पल्लवित किया गया है वह अपूर्व है।

महामहिम राष्ट्रपति जी का अंतरात्मा पर चिंतन आचार्य शुक्ल की 'चिन्तामणि' की याद दिलाता है। स्मिता पाटिल की कहानी 'कड़वा सच' में सच्चे साहित्य और साहित्यकारों की दुर्दशा का यथार्थ अंकन मिलता है।

'काला नाग' लघुकथा अज्ञेय की पँक्तियों

''साँप तुम सभ्य तो हुए नहीं
शहर में रहना भी नहीं सीखा,
एक बात पूछँ बताओगे?
तुमने डँसना कहाँ से सीखा?''

की याद दिलाती है। नागेश्वर शर्मा 'आहत' की कविता 'अंतर की पुकार' दिल को झकझोरती है। संजय जोशी प्रेमी का 'एक पैगाम' छू गया। आबादी पर 'अंकुश का औचित्य' मुझे भी उचित लगा। बेबी अंजलि का निबंध 'छोटा होता...बच्चे' वर्तमान समाज की सही तस्वीर खींचने में सक्षम है पर इस परिस्थिति के कारक तत्त्वों बच्चों में अंतर की कमी और उनकी अधिकता की ओर ध्यान जाना भी आवश्यक है।

- कुमार रजनीकांत रंजन
हिंदी विभाग, आर.एन. कॉलेज, हाजीपुर

संपादकीय विचारोत्तेजक, प्रभावोत्पादक एवं समसामयिक

आपके द्वारा प्रेषित 'विचार दृष्टि' का अक्टूबर-दिसम्बर अंक से पर्याप्त प्रसन्नताएँ हुई। पत्रिकाएँ आद्योपांत पढ़ने पर हृदयांतर्गत एक अपूर्व उमंगोत्साह की लहरें उद्वेलित होने लगीं।

पत्रिकीय गेट-अप, सेट-अप, पठनीय सामग्रियाँ व आकर्षक आवरण की साज-सजावट ने मन को मोह लिया। आपके प्रेरणादायक संपादकीय काफी विचारोत्तेजक, प्रभावोत्पादक और समसामयिक तथा सटीक लगे। इसके लिए आपको कोटिश: बधाईयाँ व अनोकनेक साधुवाद भी है।

आप सचमुच एक साहसिक साहित्यिक योद्धा हैं जो इस भौतिकवादी युग में पत्रिका प्रकाशन का बीड़ा उठाया है, क्योंकि इस युग में पत्रिका का संपादन-प्रकाशन एक जोखिम भरा कार्य है यानी नंगी तलवार पर चलने के समान है। इसके लिए श्रम-व्यय के साथ अर्थ व्यय की आवश्यकता है। आपने अपने श्रम-सीकर और तेज आत्मबल, विश्वास, धैर्य के बल पर पटना से चलकर देश की राजधानी दिल्ली तक जो यात्राएं की हैं; जो यातनाएँ सही हैं; जो वेदनाएँ उठायी हैं वह तो कोई भुक्तभोगी ही बता सकता है। जो भी हो यह पत्रिका-पुष्प दिनप्रतिदिन खिल रही है; और हिंदी साहित्य गुलशन को अपनी सौरभ से सुरभित कर रही है। मैं इसके उत्तरोत्तर विकास की हार्दिक मंगल कामनाएँ करता हूँ।

- डॉ० हरिकृष्ण प्रसाद गुप्त 'अग्रहरि'
'अग्रहरि भवन', पोस्ट- भेलाही, पू. चंपारण

'सरफरोशी की तमन्ना...' एक खोजी रपट

'सरफरोशी की तमन्ना...' डॉ० शांति जैन की एक खोजी रपट है, जिसकी जितनी भी सराहना की जाए, कम है, सत्यनारायण भटनागर का व्यंग्य 'आप है कार्यकर्ता' पसंद आया, 'जाले में फंसी मकड़ी' निस्संदेह एक अच्छी रचना है, मगर इसमें प्रयुक्त अरबी-फारसी के शब्द आरोपित से हैं, इसे कठिन बना देते हैं।

- चितरंजन भारती
246, एच.पी.सी. न्यू टाऊनशिप, पो.-पंचग्राम, असम

मुस्लिम पारिवारिक जीवन की यथार्थ मूलक कहानी

धारदार, तर्कसंगत मुहावरों, शब्दों से सजी-संवरी यह कहानी भारतीय जीवन के महतादर्शों और उद्धात्त संस्कृति के मद्देनजर प्रथम दृष्टया उटपटांग या अप्रासंगिक भले ही लगे, किंतु मेरी दृष्टि में पारिवारिक जीवन के यथार्थ को बारीकी से उकेरने में कहानीकार को आशातीत सफलता मिली है।

कहानी की शब्द योजना, प्रस्तुति हृदयग्राही है। मैं जमील साहब की लेखनी को दाद देता हूँ। जीवन-अनुभव में पकी कहानी का कथ्य घरेलू जीवन से लिया गया है।

कहानी इस अर्थ में प्रतीकात्मक है कि चित्रित पात्र व्यक्ति या खास व्यक्ति की बजाय टाइप का प्रतिनिधित्व करता जान पड़ता है। 'मकड़ी' समस्याग्रस्त व्यक्ति का और 'जाला' समस्या प्रतिकूल परिस्थिति, गंदे पारिवारिक परिवेश का प्रतीक है। एक परिवार में घटी घटना तो उदाहरण है, अन्य घरों में ऐसा घटित होता रहता है। कोई जाति इसका अपवाद नहीं, किसी जाति के घर में ऐसा

रचनाओं पर आपकी प्रतिक्रिया का स्वागत है, क्योंकि वे ही हमारे संबल हैं। आपके सुझाव हमारे लिए बहुत ही कीमत रखते हैं।

हमें इस पते पर लिखें:
पाठकीय पन्ना, 'विचार दृष्टि'
'दृष्टि', यू०-207, शकरपुर,
विकास मार्ग, दिल्ली-92

घटित हो सकता है।

देवर भाभी के बीच विकसित प्रेम को अनैतिक माना जाता है। यथार्थ की प्रस्तुति को निंदनीय इसलिए भी नहीं कहा जा सकता है चूँकि इस कृत्य का मौन विरोध नायिका की भाव-दशा से व्यंजित हुआ है। नायिका पारिवारिक जीवन मूल्यों या रिश्ते को पवित्रता के प्रति सजग जान पड़ती है। पूरा परिवार इस अनैतिक प्रेम-व्यापार से मर्माहत है। यदि इस प्रेम का मौन या मुखर समर्थन किया जाता तो निश्चय ही यह कहानी अपसंस्कृति के पोषक की दोषी मानी जाती । जीवन मूल्य के प्रति सजगता दिखलाना ही मेरी दृष्टि में, कहानीकार का अभीष्ट है। इसे अनैतिक प्रेम संबंध की कहानी मानना कहानीकार के प्रति अन्याय करना होगा।

युगल किशोर प्रसाद
बिहारी पथ, न्यू विग्रहपुर पटना-1

संपादकीय बेमिसाल

विगत कई वर्षों से विचार दृष्टि के अध्ययन- अवलोकन ने हमें यह कहने के लिए विवश कर दिया है कि पत्रकारिता की दुनिया में सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक कथा-कहानियाँ और उपन्यास के माध्यम से सारे संसार का सारा सत्य स्वरूप 'विचार दृष्टि' में ही समाहित है। 25वें अक 'संपादकीय बेमिसाल' और साभार-स्वीकार में 'मधुशाला की मधुबाला' का उल्लेख कर के आपने हमें जो गौरवांवित किया है उसका मैं आजन्म आभारी और ऋणी रहूँगा। अक्टूबर-दिसम्बर 2005 के 25वें अंक के तमाम शिर्षावलियों की महत्ता स्वीकार करते हुए प्रकाशित विचार प्रवाह के अंतर्गत महामहिम राष्ट्रपति डॉ॰ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के 'अंतरात्मा पर चिंतन' ने हमें प्रभावित किया है।

- राजेश कुमार सिंह
235 डी, किदवईनगर, अल्लापुर, इलाहाबाद-6

हम आपसे ही मुख़ातिब हैं

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मज़ा आता है उतना मुफ़्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका के नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बनना अपना कर्त्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निर्बोधित होने पर पिछले आठ साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठाकों एवं साहित्य-सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तक़ाज़ा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और हम भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकेंगे। पिछले छः महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरुचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता, उदारता एवं सेवाभाव का द्योतक है। हम तहेदिल से आभारी हैं आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें।

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय
'दृष्टि', चू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 फोन: 011-22059410 / 22530652
'बसेरा', पुरन्दरपुर पटना-800001 फोन: 0612- 2228519 एवं
आर॰ ब्लॉक, पथ सं॰-5, आवास सं॰-सी॰/6, पटना- 800001 फोन: 0612- 2226905

जरा इनकी भी सुनें

भारत म्यांमार में लोकतंत्र की समर्थक नेता आंग सांग सूकी को लेकर चिंतित है और सैन्य शासित म्यांमार में लोकतंत्र की स्थापना चाहता है।

- राष्ट्रपति डॉ॰ एपीजे अब्दुल कलाम

भारतीय विदेश नीति की जड़ें हमारी सभ्यता और विरासत की गहराई से जुड़ी हैं अमेरिका के साथ संबंध बनाने में भी हम अपनी स्वायत्तता और स्वाभिमान से समझौता नहीं करते।

- प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह

हमें ईरान के खिलाफ किसी भी प्रकार का प्रतिबंध लगाने की जल्दबाजी नहीं है।

- अमेरिकी विदेशमंत्री कोंडोलीजा राइस

मात्र सौ दिनों के शासनकाल में ही बिहार में नई कार्य संस्कृति का माहौल तैयार करने में सरकार कामयाब हो रही है।

- मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

मुझे संविधान ने 2007 तक वर्दी पहनने का अधिकार दिया है जिसका शासन करूँगा। सन् 2007 के बाद मामले को संविधान के अनुरूप ही सुलझाया जाएगा।

- पाक राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ

भाजपा, काँग्रेस और बसपा द्वारा मिलकर सपा के खिलाफ की जा रहीं साजिशों का सपा कार्यकर्ता मुँहतोड़ जवाब दें।

- मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव

गुजरात से छह अप्रैल से प्रारंभ रथयात्रा से राष्ट्रीय राजनीति का मार्ग बदल जाएगा।

- प्रतिपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी

अमेरिका के साथ परमाणु समझौता करके भारत ने अमेरिका की मदद की है।

- पूर्व विदेशमंत्री यशवंत सिंह

'लाभ के पद' के सवाल पर राष्ट्रीय राजनीति गरमायी

लाभ के पद को लेकर उठे विवाद के बीच सोनिया गाँधी ने जिस प्रकार लोकसभा की सदस्यता और राष्ट्रीय सलाहकार परिषद् के अध्यक्ष पद से त्याग पत्र दिया उससे उन लोगों के समक्ष एक चुनौती बन गयी जो लोग उनकी ही तरह लाभ के पदों पर विराजमान हैं। देखना यह है कि सोनिया की तरह कितने और लोग अपने पदों से त्याग पत्र देते हैं? हालांकि यह भी सच है कि इस बार सोनिया गाँधी के पास इस्तीफे के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं बचा था। यदि वे इस्तीफा नहीं देतीं तो उन्हें जया बच्चन की तरह से अपनी संसद सदस्यता खोनी पड़ सकती थी, क्योंकि लाभ के पद के मामले में अकेले जया बच्चन नहीं, बल्कि करीब 60 सांसदों एवं अनेकों विधायकों पर उँगली उठ रही है। तेलुगु देशम पार्टी ने सोनिया गाँधी सहित कर्ण सिंह, टी सुब्बारामी रेड्डी और कपिला वात्स्यायन चार नाम, तृणमूल काँग्रेस ने लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी, माकपा नेता नीलोत्पल बसु समेत दस सांसदों के नाम राष्ट्रपति को दिए थे। इस बीच अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में 62 सांसदों ने राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम से मिलकर स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि जया बच्चन और सोनिया गाँधी के मामले में एक जैसा नजरिया अपनाया जाए। राष्ट्रपति को यह बताना पड़ा कि सोनिया गाँधी समेत सभी याचिकाएँ चुनाव आयोग को भेज दी है। इसके बाद ही काँग्रेस में खलबली मची और उसे लगा कि वह घिर गई है। राष्ट्रपति के बाद गेंद चुनाव आयोग के पाले में थी। वहाँ से सिफारिश होने से पूर्व सोनिया गाँधी को राजमाता बनाने का एक ही विकल्प बचा था कि इस्तीफा दिलाया जाए।

बोल्कर मामले में भी काँग्रेस पार्टी के नाम पर लिए गए कूपन और क्वात्रोची का खाता खुलवाने के मामले में सोनिया गाँधी पर सीधे उँगली उठी थी। लेकिन उस वक्त उनकी अंतरात्मा नहीं जगी। लेकिन इस बार उन्हें लगा जब यह एहसास हुआ कि सरकार और संसद बचाने में सप्रंग के कदम बढ़ रहे हैं और यह संदेश जनता के बीच जा रहा है तो इस्तीफा देने की रणनीति बनी। उनका यह निर्णय भावनात्मक नहीं, बल्कि उसे दूरगामी रणनीति का हिस्सा है जिसके तार मध्यावधि चुनाव से लेकर आगामी पाँच विधान सभा चुनावों तक जुड़े हैं और इन चुनावों में काँग्रेस की स्थिति अच्छी नहीं नजर आ रही है।

जो भी हो, लाभ के पद पर भी किसी निर्णय आने से पहले ही इस्तीफा देकर सोनिया गाँधी ने देश के उन 60 से अधिक दिग्गजों के सामने संकट पैदा कर दिया है जो इन्हीं आरोपों के घेरे में हैं। उनके इस्तीफे से जहाँ दिल्ली विधान सभा के अंजलि राय, नरेन्द्र नाथ, राजेश लिलोठिया, अशोक आहूजा, राकेश जैन समेत करीब एक दर्जन काँग्रेसी विधायक ऐसे हैं जिनपर लाभ के पद की तलवार लटक रही है, वहीं काँग्रेस, भाजपा, माकपा, सपा सहित कई पार्टियों के सांसद एवं विधायक लाभ के पद पर हैं जिन्हें सोनिया गाँधी वाला रास्ता अपनाना होगा या अध्यादेश अथवा कानून के जरिए अपने बचाव का रास्ता निकालना होगा।

हिमाचल प्रदेश के 12 विधायकों पर भी यह तलवार लटक रही है और लाभ के पद का यह भूत उत्तराँचल विधान सभा में भी घुस गया है। दरअसल संविधान के अनुसार अगर संसद या विधान सभा का कोई सदस्य लाभ का पद धारण करता है, तो वह सदन का सदस्य नहीं रह सकता। ध्यातव्य है कि जया बच्चन के खिलाफ सबसे पहले एक याचिका कानपुर के काँग्रेस नेता मदन मोहन शुक्ला ने दायर की थी।

सोनिया गाँधी के त्याग पत्र से लाभ के पदों को लेकर उपजा विवाद शीघ्र ही सुलझ जाएगा, इसमें संदेह है, क्योंकि एक ओर जहाँ राज्य सरकारें लाभ के पदों की मनमानी व्याख्या करने में लगी हैं, वहीं दूसरी ओर केंद्र सरकार भी, लाभ के पदों को सुरक्षित रखने के लिए अध्यादेश लाने पर विचार कर रही है। आखिरकार तभी तो उ.प्र. में मुलायम सरकार ने आनन-फानन में लाभ के पदों को सुरक्षित रखने के लिए अपने यहाँ कानून में संशोधन कर जया बच्चन तथा अमर सिंह आदि को बचाने का प्रयास किया, किंतु राज्यपाल ने उस पर अपना हस्ताक्षर करना उचित नहीं समझा और शीघ्र ही चुनाव आयोग ने जया बच्चन की राज्यसभा की सदस्यता रद्द कर दी। केंद्र की सप्रंग सरकार को भी जैसे ही यह अहसास हुआ कि काँग्रेस अपने

ही डाले इस जाल में फंस गई है तो हड़बड़ी में अध्यादेश लाने की बेशक कोशिशें हुई जबकि संसद के चल रहे सत्र में ऐसा सोचा जाना लोकतंत्र का अपमान है, लेकिन काँग्रेसियों ने शासन चलाना इंदिरा गाँधी से भी सीखा है जिन्हें संवैधानिक संस्थाओं का पैर की जूती बनाने में मजा आता था। यह अभी भी एक रहस्य है कि सरकार ने संसद के बजट सत्र को अनिश्चितकाल के लिए स्थगित क्यों किया? क्या इसलिए की मनमाफिक अध्यादेश लाकर लाभ के पदों पर बैठे लोगों की रक्षा की जा सके या फिर विपक्ष को निरूत्तर करने के लिए सोनिया गाँधी अपना त्यागपत्र देकर राजनतिक वाहवाही लूट सकें।

सोनिया का यह कदम राजनीति में शुचिता, त्याग का प्रतीक है या सियासती दांव-पेंचों की कोई कूटनीतिक चाल, यह तो वक्त ही बताएगा, लेकिन इतना जरूर है कि अपने विरोधियों से लड़ने के लिए उन्होंने ठेठ भारतीय हथियारों का चयन किया। इस्तीफा जैसा अमाघ अस्त्र फेंककर उन्होंने जन-भावनाओं को अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश की है। जब कोई नेता नैतिकता के आधार पर त्यागपत्र देता है तो जनता स्वतः उसके पक्ष में खड़ी नजर आती है। हालाँकि बजट सत्र अभूतपूर्व ढंग से अकस्मात स्थगित करके अध्यादेश लाने की खूफिया तैयारियों का पर्दाफाश हो जाने के बाद सोनिया और काँग्रेस का एकमात्र सहारा नैतिक पैतरा ही हो सकता था, इस ख्याल से नैतिकता और त्याग की गोली निगलने के लिए कोई तैयार नहीं है। आखिर तभी तो उत्तर प्रदेश के कौड़ी राम विधान सभा के उप-चुनाव में काँग्रेस की करारी हार हुई। केंद्रीय मंत्री महावीर प्रसाद के संसदीय क्षेत्र बारू गाँव के अंतर्गत आनेवाले इस विधानसभा में सोनिया गाँधी के पद छोड़ने को त्याग और बलिदान बताकर मतदाताओं को रिझाने के सारे प्रयासों के बावजूद काँग्रेस को जहाँ मात्र छह हजार वोट से ही संतोष करना पड़ा वहीं सपा उम्मीदवार को करीब 52 हजार मत मिले। मसलन इस उप-चुनाव में सोनिया गाँधी का त्याग भी काम नहीं आया। हाँ इतना हम अवश्य कह सकते हैं कि बहरहाल, सोनिया गाँधी ने कम से कम एक मायने में स्वयं को अपनी सासू माँ से अलग साबित किया है कि इंदिरा गाँधी ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के बावजूद इस्तीफा देने से इंकार कर दिया था। उनकी उस निरंकुश जिद का नतीजा आपातकाल के काले अध्याय में निकला था। सोनिया गाँधी को जैसे ही लगा कि वे अपनी राजनीतिक कमाई खोनेवाली हैं, उन्होंने दुरुस्त कदम उठाया। रायबरेली से सांसद तो वे दुबारा बन ही जाएँगी।

प्रश्न उठता है कि सोनिया गाँधी की उदारता और महानता हर इस्तीफे के समय ही क्यों दिखती है? संवाद के जरिये बिना त्यागपत्र दिए भी तो महान हुआ जा सकता है। इतना तो तय है कि इस पूरे प्रकरण ने सोनिया गाँधी की इस 'विराट' छवि को भी धूमिल कर दिया जो प्रधानमंत्री पद ठुकराकर उन्होंने हासिल की थी। लाभ के पद को लेकर जो भ्रम की स्थिति बनी हुई है उसमें लोकसभा के पूर्व महासचिव और संविधान विशेषज्ञ सुभाष कश्यप का मानना है कि लाभ के पद को लेकर राजनीतिक दलों ने अपने फायदे के लिए भ्रम की स्थिति बना दी है अन्यथा भारतीय संविधान में लाभ के पद को लेकर स्थिति स्पष्ट है। कौन-कौन से लाभ के पद नहीं हैं, इस बारे में संसद की संयुक्त समिति ने एक सूची बनाई है। श्री कश्यप का कहना है कि संविधान की मूल भावना के साथ सभी राजनीतिक दल खिलवाड़ कर रहे हैं। यह एक तरह से संवैधानिक बेईमानी है। उनका तो यहाँ तक मानना है कि लाभ के पद को निर्धारित करने के लिए कोई कानून बनाए जाने की जरूरत नहीं है।

खैर जो हो, सोनिया गाँधी के दोनों पदों से त्यागपत्र देने और रायबरेली से पुनः चुनाव लड़ने का एलान करने के बाद राष्ट्रीय राजनीति गरमा गई है। लाभ के पद को लेकर उठा विवाद दिन-ब-दिन सारे राष्ट्र को अपनी चपेट में लेता चला जा रहा है और चुनाव आयोग के पास लाभ के पद से संबंधित याचिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही है। यद्यपि लाभ के पद के मामले में तकरीबन सभी राजनीतिक पार्टियाँ एक ही नाव पर सवार हैं और वे एक-दूसरे को नैतिकता का पाठ पढ़ा रही हैं। इससे उनकी जगहँसाई ही हो रही है। उन्हें आरापों-प्रत्यारोपों का सिलसिला छोड़कर लाभ के पदों की नए सिरे से परिभाषित करने का प्रयास करना चाहिए। यदि केंद्र में संप्रग की सरकार जमीनी हकीकतों के मुताबिक आचरण नहीं करती है तो उसे सरकार से भी हाथ धोना पड़ सकता है, क्योंकि मौजूदा विवाद से तमाम समीकरणों के गणित गड़बड़ाने की आशंका है।

अशांत आधुनिकता

प्रो० प्रेम मोहन लखोटिया

पिता-माता और संतानों की चार पीढ़ियों के दृष्टांत मेरे सामने हैं - पिता पीढ़ी में दादाजी से लेकर पुत्र तक और संतान-पीढ़ी में पिता से लेकर पौत्र-दौहित्र संतति तक। साफ दिखाई देता है कि अहमन्यता और व्यक्तिवाद बढ़ा है; नन्हें बच्चे तक अपने हम और हैसियत के दावेदार हुए हैं। कम बच्चों के माता-पिता अपने से आगे की अधिक बच्चोंवाली माता-पिता पीढ़ी से ज्यादा मुश्किल हालात में हैं। अनुशासन की परंपरा का स्थान वैयक्तिक स्वतंत्रता ने लिया है। ऐसी अवस्था में अच्छे-बुरे का निर्णय अप्रासंगिक ही हो गया है।

स्थिति के औचित्य में मनोविज्ञान के सैद्धांतिक निष्पादन का तर्क आजकल खूब दिया जाता है। छोटे भी बड़ों के आगे वाचाल हैं। उनके मन में उम्र के साथ मिलनेवाले जीवनोपयोगी अनुभव और अपने बटोरे हुए सूचना और विश्लेषणात्मक ज्ञान की प्रतिद्वंद्विता है, बल्कि अनुभव के प्रति वैमनस्य है। मनोवैज्ञानिक तथ्य बहुधा जीवन विज्ञान के औचित्य नहीं होते! यह होने के लिए अनुशासन किंवा स्वनुशासन की प्रेरणा देनेवाली संवेदना की ऊर्जा देने का उपकरण होना चाहिए मनोविज्ञान।

अन्यथा ज्यादा पढ़ी-लिखी, बाहर से ज्यादा साधन-संपन्न और सभ्य दीखनेवाली पीढ़ी अंदर से ज्यादा खोखली, संस्कारहीन और अपसंस्कृतिवान ही रह जाएगी। यह सुनिश्चित दीखता है अशांत आधुनिकता की तरह।

आदिकाल से मनुष्य समय से आगे निकल जाने को ही अपनी सभ्यता और संस्कृति का अभ्युदय मानता आया है। अपने अदम्य प्रयास के कारण ऐसे लगता है कि वह समय पर जीतने लगा है, मगर समय कभी हारता नहीं और कुछ ऐसे परिणाम मनुष्य के पाले में डाल जाता है कि मनुष्य स्वयं ही संदिग्ध हो उठे कि उसकी उन्नति में काँटे कहाँ से आए। समय के द्वारा सौंपे गए परिणाम तो प्रयास के दृश्य या अदृश्य अभिप्रायों के अनुकूल ही होते हैं। यही कारण है कि हम जितने आधुनिक होते जा रहे हैं, उतने अशांत होते जा रहे हैं और सुविधाओं के कारण सरल हुई जिंदगी जीने में उतनी ही दुरूह होती जा रही है। हमें अब तय करना ही होगा कि क्या हम तथाकथित रूप से सभ्य बनने को ही अपनी इतिश्री मान लें या चैतन्य रूप से सुसंस्कृत भी हों। हमें यह भी बहुत स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेना होगा कि जीवन का विज्ञान भौतिक विज्ञान की समस्त धाराओं और मनोविज्ञान में ही सीमित और संचित नहीं हो सकता। विवेक का निर्णयात्मक आधार आध्यात्मिक चेतना ही हो सकती है।

आधुनिकता या भौतिक उपकरणों का वैभव या उपभोग की संस्कृति अपने आप सें कोई बुराई का स्रोत नहीं है। बहुत से भोज्य या पेय पदार्थ अपने आप में अत्यंत स्वास्थ्यवर्द्धक और गुणवान होते हैं परंतु उनका सम्मिश्रण अथवा अन्य किसी सम्पूरक तत्त्व के अभाव विपज्जनक बन जाता है। यही बात हमारी समय से होड़ लेकर उन्नति पर लागू होती है। सचमुच आज हमारा जीवन-प्रवाह बहुत सुगम और गतिवान हुआ है पर पग-पग पर ठोकर खाने की नियति भी हमारे साथ जुड़ गई है। हर पल की व्यग्रता और बेचैनी हमारी महत्त्वाकाँक्षा का लक्षण नहीं, अपितु व्याधि का प्रमाण लगती है। हममें से कुछ ऐसे खतरों से निर्लिप्त और निर्विकार भी हो गए हैं और कुछ इसे आधुनिकता की क्रय कीमत मान कर सहजता के साथ लेने लगे हैं, पर मन ही मन उनके भी द्वंद्व चलता है। जिस उन्नति की कीमत अंत:करण का नैसर्गिक आनंद खोना हो, जिस वैभव का सुख तुलनात्मक ऊँच-नीच में विलुप्त हो जाए, जिस प्रगति के पीछे आतंक की घुन लग जाए, वहाँ शांति कैसे टिक सकती है?

सच तो यही है कि समय इतना प्रबल और निर्विकार है कि उसे न तो किसी को जीतने की चाह है और न ही किसी को भी हराने की जरूरत। हम उससे हारते हैं आगे भागने का प्रयास करते हुए भी तो सिर्फ इसलिए कि हम स्वयं ही हारने का कारण होते हैं। हमने अभी यह अत्याज्य आदत डाली ही नहीं कि कुछ भी करने से पहले उसके दृश्य या अदृश्य अभिप्राय की आग्रहहीन मीमांसा कर लें। हम साध्य की तरफ भागते भागते साधनों की निर्मलता भूलने लगे हैं और हम ही हमारी शांति के दुश्मन हो गए हैं आधुनिकता से लैस होकर भी।

समाधान की बात गंभीर अंतप्रेक्षा का विषय है। समय के सामने लड़ाई हरदम अकेले ही लड़नी पड़ती है इसलिए समय को अपना समर के बाद बने साथी के रूप में पाने के लिए हर व्यक्ति को परम पुरुषार्थी और संघर्षवान होना आवश्यक है। उसको अपनी योजना और विचार के अवलंबन में और अपने कर्म के पूर्व उपरोक्त दृश्य या अदृश्य अभिप्रायों की समन्वित और एकाग्र मीमांसा करनी ही होगी। इस दिशा में यह गौण बात है कि वह किस धर्म, पंथ, दिग्दर्शन प्रणाली या व्यक्तित्व विकास के प्रसाध्य का सहारा ले। उसे अपने आप को उन्नत बनाना होगा तभी उसकी आधुनिकता सार्थक और शांतिप्रदायक होगी। आध्यात्मिक रूप से चैतन्य हुआ व्यक्ति ही स्पृहायोग्य विकास और कालाजीत उन्नति का लाभ हासिल कर सकता है।

संपर्क- विद्या विहार, ख-61-अ, भवानी नगर, सीकर रोड, जयपुर-302023
दूरभाष : 0141-2230955

●

बिहार का नव निर्माण और रेणु

प्रो॰ नवल किशोर प्रसाद श्रीवास्तव

बिहार के नव निर्माण में केवल राष्ट्रभक्त राजनीतिज्ञों, समाजसेवियों, वैज्ञानिकों, दार्शनिकों, उद्योगपतियों, शिक्षाशास्त्रियों या शिक्षकों का ही योगदान नहीं रहा है, अपितु साहित्यकारों की भी बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। राजा राधिकारमण प्रसाद, सिंह, आचार्य शिवपूजन सहाय, रामवृक्ष 'बेनीपुरी' जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' डॉ॰ रामधारी सिंह 'दिनकर' कलक्टर सिंह 'केसरी', आचार्य नलिन विलोचन शर्मा, केसरी कुमार, आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री, गोपाल सिंह 'नेपाली', नागार्जुन आदि की रचनाएँ इनके ज्वलंत प्रमाण हैं। इन साहित्यकारों ने सीधे या प्रकारांतर से बिहार के नव निर्माण की बात अपनी-अपनी तूलिका द्वारा अवश्य की है, किंतु महान साहित्यकार फणीश्वर नाथ 'रेणु' ने कलम और क्रांति दोनों ही द्वारा बिहार के नव निर्माण की बात कही है।

इसमें संदेह नहीं कि बिहार की स्थिति-गति, रूढ़िवादिता, अँधविश्वास, सांप्रदायिक भावना, जातिवाद, सामंती अत्याचार और अनाचार, गरीबी, भूख, अशिक्षा, राजनीतिक विडंबना, धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक, स्वार्थपरता, वैचारिक भिन्नता, विघटित होते हुए मानव मूल्य आदि से उत्पन्न स्थितियों और उनके दृष्परिणामों का चित्रण कर रेणु ने एक ऐसे नव निर्माण का स्पप्न देखा है जिससे जन-जन में पारस्परिक प्रेम, बन्धुत्व, सौहार्द्र और सद्‌भावना का संचार हो सके, राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक परिवेश सुधर सके जिससे बिहार के नव-निर्माण का मार्ग प्रशस्त हो सके।

रेणु ने अपने साहित्य के माध्यम से बिहार के नव निर्माण के लिए निम्नलिखित छ: बातों की ओर ध्यानाकर्षण किया है-

(क) ग्रामीण संस्कृति की रक्षा द्वारा नव निर्माण, ग्राम्य संस्कृति, लोक-कला, लोक गीत-संगीत, लोक-नृत्य, लोक भाषा, धार्मिक सांस्कृतिक लोक-परंपरा, रीति-रिवाज आदि बिहार की धरोहर हैं। मगर ये चीजें धीरे-धीरे बिहार से लुप्त होती जा रही हैं या विकृत होती जा रही हैं। इनमें बिहार के लोक-जीवनकी बड़ी ही मनोरम ओर स्वाभाविक झाँकी देखी जा सकती है। यह झाँकी केवल 'मैला आँचल' और परती: परिकथा के विशाल औपन्यासिक फलक पर ही नहीं, अपितु रेण की विभिन्न मर्मस्पर्शी कहानियों में भी देखी जा सकती है। रेणु को पूर्ण विश्वास था कि लोक-संस्कृति की रक्षा और लोक-चेतना के उन्नयन से ही नये बिहार का निर्माण संभव है।

(ख) जनता की सजगता और सचेष्टता द्वारा नव निर्माण:-अपने अधिकार और कर्त्तव्य के प्रति जब तक बिहार की जनता सजग और सचेष्ट नहीं होगी तब तक न तो उसका अपना कल्याण होगा और न उसके राज्य का ही। रेणु की उक्ति है- 'आंचलिक जीवन में उथल-पुथल प्रारंभ हो गयी है। इसलिए व्यक्ति और समाज को अपने अधिकार और कर्त्तव्य से परिचित होना ही होगा।'[1] इस उक्ति द्वारा रेणु ने जहाँ ग्रामाञ्वल के उत्कर्ष की बात कही है वहाँ व्याजोक्ति द्वारा बिहार के नव निर्माण का नुस्खा भी बताया है क्योंकि बिहार वस्तुत: गाँवों का प्रांत है।

(ग) राजनीतिक चेतना के जागरण द्वारा नव निर्माण:-स्वातंत्र्यपूर्व काल में बिहार के अतिरिक्त अन्य राज्यों के साहित्यकार भी रानजनीति से जुड़े रहे, मगर स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीति से कुछ ही साहित्यकार संबद्ध रहे जिनमें ऊँगली पर गिने-चुने जिन-जिन साहित्यकारों के नाम लिये जा सकते हैं उनमें रेणु भी एक सशक्त और गौरवपूर्ण नाम है, स्वातंत्र्योत्तर युग में बिहार की परिवर्तित होती हुई राजनीति से वे मन-ही-मन क्षुब्ध थे। सन् 1972 ई॰ के विधान सभा चुनाव में जब वे स्वतंत्र उम्मीदवार के रूप में पराजित हो गये तो उन्हें पता चल गया कि दलगत और जातिगत राजनीति विकास-पथ में बहुत बड़ी बाधा है। डॉ॰ बी. एन. हेगड़े के शब्दों में : ....सन् 1974 ई॰ में जयप्रकाश जी के नेतृत्व में बिहार में हुई संपूर्ण क्रांति का रेणु ने समर्थन किया। सरकारी भ्रष्टाचार और दमन तथा शोषण के विरुद्ध ग्रामीण जनता के साथ प्रदर्शन में भाग लेकर जेल गये।' बिहार के लेखकों, कवियों और कलाकारों को संगठित कर वे जन-जागरण करते रहे। सन् 1975 ई॰ में जब देश में आपात-स्थिति की घोषणा की गयी तो उन्होंने तानाशाही सत्ता का डटकर विरोध किया, नुक्कड़ सभाएँ की, कवि-गोष्ठियों का आयोजन किया, पर्चा लिखा। उन्होंने कहीं से भी अपने स्वार्थ के लिए राजनीति नहीं की, बल्कि उनका लक्ष्य था बिहार की जर्जर स्थिति को नष्ट कर एक नये बिहार का निर्माण।

(घ) साहित्य-साधना द्वारा नव निर्माण:-रेणु ने अपने साहित्य से बिहार के समाज और समुदाय को नयी दिशा प्रदान की है। उन्होंने जिस नये बिहार का स्वप्न देखा था, उसे साकार करने का भरसक प्रयास अपने साहित्य द्वारा किया। उनके साहित्य में इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि बिहार जब तक अँधविश्वास, सांप्रदायिकता, सामंती व्यवस्था, मठों के महन्तो की अनैतिकता तथा विभिन्न सरकारी विभागों में व्याप्त भ्रष्टाचार आदि से मुक्त न होगा और कृषि, शिक्षा, उद्योग-धंधा, कला,साहित्य आदि की उन्नति न होगी तब तक नये बिहार का निर्माण हो ही नहीं सकेगा। उनकी साहित्यिक रचनाओं के पात्र बावनदास, डॉ॰ प्रशान्त, कालीचरण, हीरामन आदि ऐसे पात्र हैं जिनके आदर्शों को अपनाकर ही बिहार एक नये साँचे में ढल सकता है। उनके विभिन्न उपन्यासों और कहानियों में जो सामाजिक और वैचारिक भावना निहित है वही बिहार को मानवतावादी

और प्रगतिशील बनाये रखने की दृष्टि से अहर्निश प्रेरणा का स्रोत बनी रहेगी।

(ड़) दलितों और शोषितों के उद्धार द्वारा नव निर्माण : -

गंभीरतापूर्वक विचार करने से विदित होता है कि जिस प्रकार उड़िया साहित्यकार महान्ती ने अपने लेखन का विषय आदिवासी, हरिजन, मजदूर, किसान तथा निम्न-मध्यम को बनाया, ठीक उसी तरह रेणु ने दलित और पीड़ित वर्ग की मसीहाई की है जिसके अनेक संकेत उनकी कृतियों में अनायास ही मिल जाते हैं।' 1 इन दलितों, पीड़ितों और उपेक्षितों के उद्धार बिना बिहार का नव निर्माण कदापि नहीं हो सकता।

(च) जनता, राजनेताओं एवं अधिकारियों के आदर्श चरित्र द्वारा नव निर्माण : -

रेणु का मानना है कि 'जब तक देश व्यापारी वर्ग कालाबाजारी और आवश्यकता से अधिक मुनाफाखोरी करता रहेगा तथा नकली और मिलावट की सामग्रियों का विक्रय करता रहेगा, आय-कर की चोरी करता रहेगा तथा नेताओं सहित विभिन्न सरकारी विभागों के पदाधिकारी लोग और कर्मचारी लोग अपने-अपने को भ्रष्टचार से मुक्त नहीं रक्खेंगे तब तक देश का और बिहार का न तो कल्याण ही संभव है और न इसका नव निर्माण ही।' इस बात का संकेत उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में किया है। डॉ॰ रामकृष्ण नेवटिया के शब्दों में, 'रेणु जी ने बिहार के नव निर्माण का जो नुस्खा दिया है उसे अपनाते ही इस प्रदेश की काया कंचन हो जायेगी।'

'मैला आँचल', परती: परिकथा', 'पल्टू बाबू रोड', 'कितने चौराहे', 'जुलूस' आदि उपन्यासों के अतिरिक्त 'ठुमरी', 'एक श्रावणी दोपहरी की धूप', 'मेरी प्रिय कहानियां', 'अच्छे आदमी', 'वनतुलसी की गन्धा', 'अगिनखोर', 'आदिम रात्रि की मँहक' आदि कई कहानी-संग्रह भी रेणु के प्रकाशित हो चुके हैं। इनके अतिरिक्त विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में भी उनकी अनेक कहानियाँ बिखरी पड़ी हैं जिन्हें खोज-खोजकर संग्रह का रूप दिये जाने का काम किया जा रहा है।

'ठुमरी' में 'तीर्थोदक', 'ठेस', 'नित्य लीला', 'पंचलाइट', 'भित्ति चित्र की मयूरी', 'जलवा' आदि नौ कहानियाँ हैं। 'मेरी प्रिय कहानियाँ, में भी 'तीसरी कसम', 'लाल पान की बेगम', 'रसप्रिया', 'रेखाएँ और वृन्त', 'ईश्वर रे मेरे बेचारे' आदि नौ कहानियाँ संग्रहीत हैं। इनमें से अधिकतर कहानियाँ ऐसी हैं जिनके माध्यक से लेखक ने विभिन्न सामाजिक कुरीतियों और बुराइयों का पर्दाफाश तो किया ही है, उन पर करारी चोट भी की है। उन्होंने बिहार के समाज में व्याप्त अँध विश्वास, सांप्रदायिकता, जातिवाद आदि पर जमकर प्रहार किया है। रेणु ने इन कहानियों में कहीं-कहीं तो प्रत्यक्ष रूप से और कहीं-कहीं तो प्रकारांतर से यह बताया गया है कि इन समस्त बुराइयों का अन्त करके ही नये ढंग नये बिहार का निर्माण किया जा सकता है।

'संवदिया', 'नैना जोगिन', 'मारे गये गुलफाम', 'आत्म-साक्षी' आदि कहानियों में भी रेणु ने किसी-न-किसी रूप में सुधार की बातें कहीं है।

'मैला आँचल' उपन्यास की कथावस्तु बिहार के पूर्णिया जिले के अंचल से संबद्ध है। मेरीगंज गाँव में राजपूत टोली, कायस्थ टोली, ब्राह्मण ओली, मालिक टोली ओर यादव टोली के लोग साथ-साथ अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इन सबके अपने-अपने नेता हैं। इस उपन्यास का डॉ॰ प्रशान्त देखता है कि यहाँ व्यक्ति टूट रहा है, प्रकाश के लिए छटपटा रहा है। यहाँ के लोग भूत-प्रेत, डायन-जोगिन, पीर-पैगत्बर, ओझा-गुणी आदि के अँधविश्वासों से ग्रस्त तो हैं ही, गरीबी से भी ग्रस्त हैं। जमीन्दारों के अत्याचार से पूरा-का-पूरा गाँव प्रभावित है। मठों में रामदास और लक्ष्मी कोठादिन जैसे भ्रष्टों और चरित्रहीनों का बोलबाला है इसी कारण यहाँ के लोगों का जीवन बड़ा ही कष्टमय है। रेणु ने इन सभी विसंगतियों के विरुद्ध इस उपन्यास में आवाज उठायी है। इन विसंगतियों को दूर करके ही नये बिहार का निर्माण किया जा सकता है।

'परती:परिकथा' उपन्यास भी बिहार राज्य के ही परानपुर गाँव से संबंधित है। यह गाँव 'स्वतंत्रता के पश्चात के संक्रमणकालीन गाँवों का प्रतिनिधित्व करता है। परानपुर गाँव के भीतर के जीवन को वाह्य परिस्थितियाँ संक्रमित कर रही हैं। इस उपन्यास के लुत्तो और गरूड़ध्वज जैसे कतिपय चरित्रों में नैतिकता है ही नहीं। अत: बिहार के नव-निर्माण के लिए यहाँ के लोगों में नैतिकता की भावना का विकास करना होगा।

आज बिहार के गाँवों में विभिन्न प्रकार की समस्याएँ हैं जिसके चलते गाँवों का परिवेश विद्रूप होता जा रहा है। इस बदलते परिवेश के दृश्य को रेणु जी ने बड़े कैन्वास पर अत्यंत ही स्वाभाविक रूप से चित्रित करने का प्रयास किया है।' [1] उन्होंने इस बात की ओर भी इंगित किया है कि ऐसी विषम परिस्थितियों का अंत कर ही नये समाज और नये बिहार का निर्माण किया जा सकता है।

'जुलुस' उपन्यास में भी बिहार के ही उस गोडियर गाँव की नवीनगर कॉलनी का चित्र उकेरा गया है। जहाँ के लोग विभिन्न कुरीतियों के शिकार हैं। उस गाँव में जादू-टोना, तंत्र-मंत्र आदि पर विश्वास करने वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक है। इस गाँव पर शहरी जीवन के कुत्सित वातावरण का प्रभाव भी दीखता है। इतना ही नहीं, यहाँ मानवीय मूल्यों का भी ह्रास हो गया है जिस कारण यहाँ के लोगों का जीवन नारकीय बन गया है। रेणु ने इस उपन्यास में इस रहस्य का उद्घाटन किया है कि जब तक बिहार के गाँवों से कुरीतियों और जर्जर परंपराओं का अंत न होगा तब तक नये बिहार का निर्माण भला कैसे हो सकेगा?

नये बिहार के निर्माण के लिए यह भी आवश्यक है कि पुरुषों की भाँति ही यहाँ की स्त्रियों को भी विकास करने का समान अधिकार और अवसर मिले। 'मैला आँचल' उपन्यास के रामजूदास की पत्नी तंत्रिमा टोली की सभी महिलाओं का नेतृत्व करती है। चरखा-सेंटर की मास्टररानी मंगला देवी भी नवीन चेतना की प्रतिमूर्ति है। जिसकी बड़े-बड़े लोगों तक पहुँच है।' [1] इसी प्रकार 'परती: परिकता' उपन्यास में सामवत्ती का चरित्र बड़ा ही क्रांतिकारी है जो जमींदार के विरुद्ध आवाज

उठाती है। इसी उपन्यास की मलारी तथा 'जुलुस' उपन्यास की सन्ध्या परंपरा और रूढ़ि से ऊपर उठकर अंतर्जातीय विवाह द्वारा गाँव में क्रांति मचां देने वाली इन्क्लाबी महिलाएँ हैं। यही बात दीपा की माँ के साथी है जो लीडरानी बनकर अन्य नारियों के बीच जागरण का पाञ्चजन्य-निनाद करती है। आज बिहार की ऐसी स्थिति है कि कुछ स्त्रियों को छोड़कर अन्य नारियाँ केवल गृहकार्य की सीमा में ही आवद्ध है। उसे बाहरी दुनियाँ की किसी भी हलचल का ज्ञान नहीं है। रेणु के विचारानुसार यदि इन नारियों को पुरुष के समान अधिकार मिल जाये और विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में उन्हें भाग लेने का अवसर मिले तो वे समाज और राज्य के लिये बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं और बिहार के नव निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती हैं।

रेणु-रचित 'मैला आँचल', 'परती:परिकथा' और 'जुलुस' उपन्यास में अनेक जातिगत गठबंधनों का विवरण है। 'मैला आँचल के मेरीगंज की गुटबंदियों का परिचय देते हुए उपन्यासकार कहता है- 'अब गाँव में तीन प्रमुख दल हैं- कायस्थ, राजपूत और यादव ब्राह्मण। लोग तृतीय शक्ति हैं। गाँव के अन्य जाति के लोग भी सुविधानुसार इन्हीं तीन दलों में बंटे हुए हैं। 'परती:परिकथा' उपन्यास में जातिमूलक गठबंधनों की चर्चा है। यहाँ जाति और पंचायत के झगड़े बराबर ही चलते रहते हैं। लुत्तो जमीन की अपेक्षा जाति को अधिक महत्त्व देता है। तभी तो वह कहता है- 'नहीं चाहिए लुत्तो को ऐसी जमीन जिससे जाति की इज्जत मिट्टी में मिल जाय।'

'जुलुस' उपन्यास में भी जातीयता की भावना शिखर पर दृष्टिगोचर होती है। निम्न स्तर के लोगों में भी जातीयता की यह भावना है जातीयता को लेकर बराबर किसी-न-किसी प्रकार के दंगे-फसाद होते ही रहते हैं। इससे समाज और राज्य में अशांति आ जाती है और प्रगति के मार्ग अवरूद्ध हो जाते हैं। रेणुजी के विचारानुसार 'जातीयता की इस भावना को समाप्त करके ही समाज और राज्य में सुख-शांति, सद्भावना, पारस्परिक सहयोग और बंधुत्व का भाव लाया जा सकता है जिससे नये बिहार का निर्माण हो सकेगा।

इस प्रकार बिहार के नव निर्माण में फणीश्वर-नाथ 'रेणु' और उनके साहित्य का बड़ा ही महत्त्व है, बड़ी ही अधिक उपादेयता है।

पूर्व अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर (वैशाली)

●

'राष्ट्रीय विचार मंच', दिल्ली की नवगठित कार्यकारिणी

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री यू० सी० अग्रवाल की अध्यक्षता में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी की कोर कमेटी की बैठक ने मंच की दिल्ली इकाई की कार्यकारिणी का गठन किया जिसके निम्नलिखित पदाधिकारी एवं सदस्य चुने गए-

अध्यक्ष-	श्री सोमदत्त शर्मा 'सोम'
उपाध्यक्ष-	सुश्री लक्ष्मी निषाद
	श्री मिथिलेश कुमार सिन्हा
महासचिव-	श्री उदय कुमार 'राज़'
संयुक्त सचिव-	एस० एम० अग्रवाल
संगठन सचिव-	श्री मुकेश बोथरा
प्रचार सचिव-	श्री मिथिलेश प्रसाद कश्यप
कार्यालय सचिव-	श्री प्रभात रंजन
कोषाध्यक्ष-	श्री धर्मपाल ठाकुर

कार्यकारिणी सदस्य

उमेश प्रसाद सिन्हा ● राजीव रंजन ● महेश पाण्डे ● डॉ० मेदिनी प्रसाद ● सीताराम सिंह ● लक्ष्मण सिंह

रचनाकारों से

(1) रचना भेजने के लिए कोई शर्त नहीं है, सभी रचनाकारों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। उदीयमान रचनाकारों को विशेष रूप से प्रोत्साहित किए जाने का प्रयास रहेगा।
(2) राष्ट्रीय भावनाओं पर आधारित तथा वैचारिक रचनाओं को प्राथमिकता दी जाएगी।
(3) रचना एक तरफ/कम्प्यूटर पर कम्पोज्ड अथवा सुवाच्य स्पष्ट लिखी होनी चाहिए अन्यथा उसे स्वीकृत करने में मुझे कठिनाई होगी।
(4) रचना के अंत में उसके मौलिक अप्रकाशित व अप्रसारित होने के प्रमाण पत्र के साथ रचनाकार का नाम व पूरा पता अवश्य लिखा होना चाहिए।
(5) रचना के साथ पासपोर्ट/स्टाम्प आकार की श्वेत एवं श्याम तस्वीर की दो प्रतियाँ अवश्य संलग्न करें।
(6) प्रकाशित रचनाएँ वापस नहीं की जातीं, कृपया उसकी प्रति अवश्य रख लें।
(7) प्रकाशित रचनाओं पर फिलहाल पारिश्रमिक देने की कोई व्यवस्था नहीं है, हाँ, रचना प्रकाशित होने पर अंक की प्रति अवश्य भेजी जाएगी।
(8) किसी भी विधा की गद्य रचनाएँ 1500 शब्दों अथवा दो पृष्ठों की मर्यादा में ही स्वीकार्य होंगी।
(9) समीक्षार्थ पुस्तक की दो प्रतियाँ भेजना आवश्यक है।

दृष्टि 6, विचार बिहार,
यू-207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92,
दूरभाष: (011) 22530652, 22059410

सिद्धेश्वर
संपादक, 'विचार दृष्टि'

साहित्यकार और प्रेम के विविध रूप

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

विश्व के प्रसिद्ध साहित्यकारों के जीवन में प्रेम का प्रभाव रहा है जिसके चलते उनका लेखन भी प्रभावित हुआ होगा। प्राय: साहित्यकार के जीवन की विषमताओं के लिए प्रेम भी कहीं न कहीं जिम्मेदार रहा है यह कहना तो कठिन है कि प्रेम के कारण साहित्यकार की रचनाओं को धार मिली है या परिस्थितियाँ यदि विपरीत न होतीं तो वे और अधिक समृद्ध साहित्य समाज को दे सकते थे। जो भी हो, कई साहित्यकार फंसे हैं जिनके प्रेम की परिभाषा और उसका प्रभाव अपनी-अपनी तरह से उनकी रचनाओं में झलकता रहा है।

अँग्रेजी साहित्य में पर्सी विशी शेली को 'कविता का राजकुमार' कहा जाता है। वह एक संपन्न बेरोनेट के घर में जन्मा परंतु एक नारी के प्रेम में उसे दर-दर भटकना पड़ा था। सौंदर्य की मूर्ति-हैरियट से शेली की पहली भेंट एक पार्क में हुई थी। दोनों का मेल हुआ और पहली नजर में पहला प्यार पनपा। शेली एक अमीर बाप की बेआ और हैरियट एक मामूली घरेलू लड़की-शेली के घरवालों को यह रिश्ता स्वीकार्य नहीं था। धन की दीवार को तोड़कर दोनों भाग निकले। समय बीतता गया। हैरिय़ट शेली के बेटी की माँ बनीं। पैसों की तंगी से शेली बेहाल था। ऐसे में हैरियट शेली के मित्र मेजर रायन के करीब आने लगी। बात फैल गई-मोहल्ले, गली और शेली तक। शेली हैरियट को खो चुका था। तब उसे प्रेम का सहारा मिला मेरी गोडविन की आगोश में।

मेरी गोडविन-शेली के मित्र और गुरु गोडविन की पुत्री जब गर्भवती हुई तो प्रेम का रिक्त स्थान भरने मेरी की सौतेली बहन जेन क्लेयरमांट आ गई। शेली को उस समय एक और आघात लगा जब उसके प्रिय मित्र लार्ड बायरन की दृष्टि जेन पर पड़ी। बायरन महिलाओं के लिए सदा ही आकर्षण का केंद्र रहा और अनगिनत महिलाएँ उसके जीवन में आईं और मैले कपड़ों की तरह फेंक दी गईं। जेन भी उन्हीं में से एक थी, परंतु शेली का जीवन तो फिर एक बार बिखर गया था। कंगाल शेली-एक बेरोनेट का बेटा, एक उपेक्षित कवि, निराश थका हारा पति-पुन: अपनी पत्नी मेरी को लेकर शहर-शहर भटकता रहा। वह लंदन छोड़कर इटली चला गया। वहाँ वह विलियम के स्नेह और सम्मान का पात्र रहा। यहीं से एक दिन जब वह किसी मित्र के बुलावे पर लेगहार्न गया और लौट रहा था तो नौका दुर्घटना में उसकी मृत्यु हो गई और इस प्रकार एक प्रसिद्ध कवि और उसका प्रेम नदी में डूब गये।

जर्मनी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार गेटे भी प्रेम के जाल से नहीं बच सके। उनके प्रसिद्ध उपन्यास 'वेर्टर की करुण कहानी' में उनकी आत्मकथा के अंश दिखाई देते हैं- भले ही यहाँ अपनी प्रेमिका और इसके पति का ईमानदार वर्णन नहीं मिलता। गेटे की प्रेम कहानी भी किसी फिल्मी कहानी से कम नहीं है।

एक बार किसी मित्र के पास उनकी भेंट चार्लोट नामक 16-17 वर्षीय लड़की से हुई। पहली नज़र में गेटे दिल दे बैठे परंतु यह इकतरफा प्रेम था, क्योंकि वह लड़की तो इस भेंट को भूल भी चुकी थी। चार्लोट एक साधारण घरेलू किस्म की सीधी-सादी कामकाजी लड़की थी। जिसपर बिन माँ के छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारी थी। कुछ अर्से बाद जब गेटे की भेंट पुन: एक नृत्य समारोह में हुई तो उसने नृत्य के लिए चार्लोट को आमंत्रित किया। संगीत की धुन पर हाथों में हाथ लिए दोनों थिरकने लगे। नृत्य समाप्त हुआ। दोनों बाहर निकले। गेटे ने चार्लोट से अकेले में बात करना चाहा। वे बाग के एक बेंच पर बैठ गये। गेटे ने अपने प्रेम का इज़हार किया परंतु चार्लोट ने नकार दिया। वह अपनी बात समझा पाती कि गेटे का मित्र केस्टनर आ धमका और कहने लगा- 'इसका मतलब है आप दोनों एक दूसरे से परिचित हैं। गेटे, यह तुम्हारी भावी भाभी है'। गेटे को लगा कि किसी ने उसके दिल पर नुकीला खंजर चला दिया है। चार्लोट ने केस्टनर से गेटे से हुई बात भी बता दी थी। केस्टनर खुले दिल का व्यक्ति था। वह गेटे के प्रति सहानुभूति भी रखता था।

चार्लोट और केस्टनर का ब्याह हो गया और गेटे का दिल टूट गया। गेटे साहित्य में डूब गया परंतु उसने अपनी आत्मकथा में प्रेमिका और उसके पति के प्रति ईमानदारी नहीं बरती। यदि प्रेम में सफलता मिलती तो संभवत: लेखन कुछ और तरह का होता!

कुछ लोगों के लिए प्रेम एक खिलवाड़ होता है। लार्ड बायरन भी उन्हीं व्यक्तियों में थे जो प्रेम को अपनी कामुकता बुझाने का दूसरा नाम समझते थे। बायरन-एक ज़बरदस्त आकर्षक, प्रभावशाली और लब्धप्रतिष्ठित नाम-जो एक रोमांटिक व्यक्तित्त्व का मालिक था। उसके लिए सेक्स भी भोजन की तरह ऐसी आम भूख थी जिसे किसी के साथ भी संपर्क साध कर मिटाया जा सकता था। लार्ड होने के नाते, खूबसूरत होने के नाते और प्रसिद्ध होने के नाते-औरतें भी उसकी आगोश में आने के लिए आतुर रहती थीं। बायरन भी महिलाओं की इस कमजोर मानसिकता का लाभ उठाता था। वह यह नहीं देखता था कि उसकी शारीरिक भूख मिटानेवाली औरत कौन है। वह औरत उसकी पत्नी अन्ना इसाबेला या प्रसिद्ध कवि विलियम लैंब की पत्नी लेडी कैरोलीन या मेरी चाचवर्थ, मागियाना सेगाती, मागोरिती कोन्या जैसी दर्जन, मछेरन आदि या फिर शेली जैसे मित्र की प्रेमिका जेन क्लेयरमाट-कोई भी हो सकती थी। उसके लिए औरत और बनियन में कोई अंतर नहीं था-उपयोग करो और फेंक दो।

बायरन की पत्नी को उस समय आघात लगा जब उसने बायरन को अपने ही घर में अपनी ही सौतेली बहन आगस्टा के साथ सोते हुए देख लिया। अन्ना को उससे घृणा हो गई कि जो व्यक्ति किसी भी औरत के साथ सो सकता है- अपनी बहन के साथ भी-वह सभ्य समाज का व्यक्ति नहीं बन सकता। भले ही बायरन अपनी इस कामुकता को प्रेम की संज्ञा देता रहा हो परंतु यदि वह प्रेम का सच्चा अर्थ जान पाता तो संभवत: वह और उत्कर्ष साहित्य विश्व को दे पाता।

प्रेम ने पुरुषों को ही नहीं महिलाओं की कलम को भी प्रभावित किया है। अँग्रेजी साहित्य में जार्ज ईलियट एक प्रसिद्ध नाम है। अठारहवीं शताब्दी में सनसनी फैलानेवाला उपन्यास था 'एकम बीड' जिसके रचनाकार हैं 'जार्ज ईलियट'। उपन्यास ने ख्याति पाई पर लेखक का पता नहीं था। कारण था छद्‌मनाम। एक अर्से बाद पता चला कि इस उपन्यास की रचनाकार हैं मेरी ईवान्स यानि श्रीमती जार्ज हेनरीलेकिस।

अठारहवीं शताब्दी विक्टोरियन युग कहलाता है जिसमें स्त्री की कीमत एक गुडिया से अधिक नहीं थी। उसका जिस्म, विचार, हृदय सभी पुरुष के गुलाम थे और उसे इसी पुरुष प्रधान समाज में जीना था। यदि कोई स्त्री इस समाज के रीति-रिवाज से भिन्न कुछ करती तो उसका बहिष्कार होता। मेरी के साथ भी यही हुआ क्योंकि उसने जार्ज के साथ प्रेम किया पर विवाह नहीं।

चालीस वर्षीय मेरी और पैंतालीस वर्षीय जार्ज एक दूसरे से प्रेम करते थे परंतु उस समय की झूठी परंपराओं, सामाजिक मान्यताओं का उल्लंघन करके दोनों ने साथ-साथ जीने का निश्चय किया था, बिना विवाह के। विवाह-विच्छेद के कड़े कानून के चलते जार्ज अपनी पूर्व पत्नी से विच्छेद नहीं कर पा रहा था, यद्यपि वह उसे छोड़कर चली गई थी। बिना तलाक लिए वह दूसरा विवाह नहीं कर सकता था। इसलिए मेरी और जार्ज बिना विवाह के ही साथ-साथ रहने लगे, पति-पत्नी की तरह।

जार्ज एक पत्रकार था और मेरी एक लेखिका; परंतु समाज में उनकी इतनी बदनामी हो चुकी थी कि वे जानते थे कि उनके नाम से निकलनेवाले उपन्यास को कोई नहीं पूछेगा। इसलिए मेरी ने छद्‌मनाम का सहारा लिया और एक सफल लेखिका बन गई। कदाचित नियति को मेरी की सफलता से ईर्ष्या हो रही थी। साठ वर्ष की आयु में उससे मृत्यु ने उसका प्रेमी छीन लिया। हर घने बादल के पीछे सूरज की किरण झलकती है। सूरज की किरण बनकर मेरी के जीवन में आनेवाला था चालीस वर्षीय प्रेमी जार्ने क्रॉस एक बार फिर समाज ने प्रेम पर कीचड़ उछला। ईलियट ने इन आलोचनाओं की परवाह नहीं की और अपने युवा प्रेमी के साथ विदेश भ्रमण को निकल पड़ी। 61 वें वर्ष में ईलियट का स्वास्थ बिगड़ने लगा और जार्ने फ्रॉस का प्रेम थी उसे मौत के मुँह से नहीं निकाल सका।

व्यक्ति के साथ प्रेम की भी परिभाषा बदलती रहती है। निष्काम प्रेम को निर्मल प्रेम माना जाता है। प्रेमी कामुकता के भूखे नही होते, बल्कि उनके प्रेम में निर्मलता एंव आत्मीयता झलकती है। इस निष्काम प्रेम का एक उदाहरण चेखव की जीवनी में मिलती है।

रूस के प्रसिद्ध लेखक चेखव एक प्रकाशक के घर में एक सुंदर महिला से मिले जिसका नाम था लीडिया एविलाव। दोनों की नजरें मिलीं और न चाहते हुए भी उनके हृदय में चाहत के फूल खिले। दोनों जानते थे कि वे एक दूसरे के नहीं हो सकते क्योंकि लीड़िया एक बच्चे की माँ थी और पति से उसे कोई शिकायत नहीं थी फिर भी, चेखव और लीड़िया एक-दूसरे के प्रति आकर्षित रहे। लीड़िया की लेखन शक्ति को देखते हुए चेखव ने उसे लेखन के लिए प्रेरित किया। यद्यपि उन दोनों के बीच परिवार और मीलों की दूरी ने मिलना लगभग असंभव बना दिया था पर आत्माओं का सामिप्य बना रहा। उनका प्रेम पवित्र था। चेखव चाहते थे कि लीड़िया का पारिवारिक दायित्व ऐसा नहीं होने देता था। से वंचित होना पड़ा और कदाचित यह दुख चेखव को अपने जीवन के अंत तक कुरेदता रहा। चेखेव ने लीड़िया को लिख अंतिम पत्र में लिखा था- ''सदाखुश रहो और जीवन को बहुत गंभीरता से न लो। शायद वह कहीं अधिक सहज है और फिर जिस जीवन से हम परिचित नहीं, क्या वह इस योग्य है कि उसके लिए इतनी मानसिक यंत्रणा भोगी जाए (मेरी जिंदगी में चेखव-लीड़िया एविलोव)

प्रेम एक ऐसी अवस्था है जिसे हर व्यक्ति ने अपनी-अपनी सोच के अनुसार ग्रहण किया, उसे झेला, भोगा और जिया। जो भी प्रेम में हुआ, उसकी प्रति-छवि यदा कदा साहित्यकार की कलम से छलकी-तभी तो प्रेम के भोगी के साहित्य में दर्द, हर्ष और शृंगार-सभी झलकता है।

संपर्क: 1-8-28, यशंवत भवन
अलवाल, सिकंदराबाद
500010 (आंध्र प्रदेश)

कैबिनट मंत्री का दर्जा के साथ नीरज उ.प्र. भाषा आयोग के अध्यक्ष

उत्तर प्रदेश सरकार ने प्रख्यात गीतकार गोपाल दास नीरज को भाषा आयोग के अध्यक्ष पद पर नियुक्त करते हुए उन्हें कैबिनेट मंत्री का दर्जा प्रदान किया है। नीरज इसे सिर्फ हिंदी साहित्य नहीं, बल्कि संपूर्ण साहित्य और साहित्य सेवियों का सम्मान मानते हैं। अब उन्हें मंगलायतन विश्वविद्यालय का चांसलर भी बना दिया गया है। अपनी उम्र के 82वें पायदान पर सवार नीरज जी अब भी एक युवा की तरह आशावादी और सकारात्मक सोच वाले गीतकार हैं। गरीब साहित्यकारों के हालात बेहतर बनाने की दिशा के तहत उनके काव्य-संग्रह को छपवाने का वे प्रयास करेंगे। अपनी कविता के माध्यम से ये कहते हैं कि इनकी वाणी तो प्रेम की भाषा है। 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से नीरज जी को हार्दिक बधाई। - उपसंपादक

बिल्ली

डॉ० अनुपमा

उस दिन बैंक जाना था इसलिए रेश्मा ने जल्दी ही सारे काम निबटा दिए थे। केवल कुकर चढ़ाना था। वह काम तो आने के बाद भी किया जा सकता था। कैसे भी खाने की जल्दी किसी को नहीं रहती। अभिषेक पेटभर नास्ता कर बाहर जाता है खाने के लिए देर से ही घर पहुँचता है और बाबा साहेब तो हमेशा ही खाना देर से ही खाते हैं। तब घर आकर ही चावल चढ़ा दूँगी ऐसा सोचते हुए रेश्मा ने साड़ी बदली।

बाहर आकर हमेशा की तरह आदत के अनुसार उसने लेटर बॉक्स डाक देखने के लिए खोला। एक ही पत्र वहाँ से कोई उसे उठा ले इस इंतजार में पड़ा था। उसने पत्र उठा लिया। उसी का नाम लिखा था। सौ. रेशमा ईमानदार और पता भी ठीक लिखा था। 'विसावा' गुलमोहर कॉलोनी, पायरू हॉल के पीछे।

पत्र को पल्टाकर उसने भेजनेवाले का नाम पढ़ा, वहाँ केवल एक लकीर खींचीं हुई थी। नाम नहीं पर यह पत्र किसका है। रेश्मा ने मन में सोचा पर पत्र क्यों लिखा है देवेन्द्र ने? घर छोड़कर उसे दस-बारह साल हो गए हैं और आज अचानक उसे मेरी याद कैसे आयी? रेश्मा कुछ देर वही सोचती हुई खड़ी हो गयी। उसे लगा घर में जाकर पत्र पढ़ लेना चाहिए।

तभी बाबा साहेब बालकनी में आकर बोले 'तुम अभी यहीं हो? जल्दी जाओ। वे बहुत जरूरी चेक्स है जो आज ही भरने चाहिए। उनकी आवाज में गुस्सा भरा हुआ था। रेश्मा ने जल्दी से पत्र बैग में डाला और तेज कदमों से चलती हुई बैंक पहुँची। रास्ते में चलते हुए उसके मन में पत्र के ही विचार थे। एक बार उसे लगा पत्र बैंक में बैठकर पढ़ना चाहिए। पर उसने उस विचार को झटक दिया। दस-बारह सालों के बाद देवेन्द्र से भेंट हो रही है पत्र के माध्यम से ही सही भेंट तो हो रही है उसे सार्वजनिक जगह होना ठीक नहीं है उसके मन में यह विचार आया और वह रेश्मा गयी जैसे नई नवेली दुल्हन हो।

बैंक से लौटकर आयी तो बाबा साहेब ने खाने की इच्छा प्रकट की इसलिए पत्र पर्स में ही पड़ा रहा। खाते समय बाबा साहेब व्यवसाय संबंधी मील का बढ़ता हुआ काम पर बोल रहे थे अभिषेक को व्यवसाय में ध्यान देना चाहिए। क्यों वह नौकरी के लिए इंटरव्यू देने जाता रहता है? मैं तो अब थक चुका हूँ और कमलाकर भी पहले जैसा काम नहीं कर पा रहा है। बाबा साहेब हमेशा इसी बात पर चर्चा करते रहते थे।

मैं कहता हूँ कि क्यों तुम अभिषेक से बात नहीं करती ? बाबा साहेब ने रेश्मा से पूछा, पर इस पर वह कुछ नहीं बोली।

अभिषेक कहता है कि मुझे दादा और चाचा के काम में बिलकुल रुचि नहीं है। उन्होंने मेरे पापा पर हेर फेर करने को झूठा आरोप लगाया था। इसलिए पापा घर छोड़कर चले गए। उस व्यवसाय में मैं जरा भी ध्यान नहीं लगाऊँगा।

अभिषेक के ये विचार बाबा साहेब को कैसे सुनाऊँ। वे क्या कहेंगे? उन्हें गुस्सा आयेगा। हो सकता ये सुनकर मुझे और अभिषेक को घर के बाहर निकाल दें फिर हम कहाँ जायेंगे?

ये विचार मन में आते ही रेश्मा ने पूरे घर पर एक नजर डाली। दो मंजिला घर पत्थर से बना हुआ था। नाम भी बड़ा सुदंर है 'विसावा' सभी सुख सुविधाएँ इस घर में उपलब्ध हैं। घर से जो ऊब मिलती है वह पहले भी मिलती थी और आज भी मिलती हैं।

रेश्मा ध्यान कहाँ है तुम्हारा ? चावल पर दही चाहिए, तीन बार कह चुका हूँ ये कहते समय बाबा साहेब की आँखों में अपराध की भावना की छाया दिखाई दी हमेशा की तरह। देवेन्द्र के मामले में मैंने जल्दबाजी की उस पर अन्याय किया आगे पूरी रामायण घटित हुई। मेरे बेटे को मैं खुद पहचान नहीं पाया ऐसे भाव उनकी आँखों मे दिखाई देते थे। अब भी उनकी नजर नीचे झुकी हुई थी उस अपराध के लिए जो उन्होंने अनजाने में किया था।

हाथ धोकर सुपारी खाते खाते वे बाहर निकले। फिर रेश्मा ने अपने कमरे आकर दरवाजा बंद किया और पर्स में से पत्र निकाला। पत्र खोलते समय उसके हाथ कुछ क्षणभर के लिए कांप गये और हृदय में धड़कन तेज हो गई। देवेन्द्र ने लिखा था-

प्रिय रेश्मा,

मुझे घर छोड़े बारह साल हो गए हैं। मैं कहाँ कहाँ भटका, कहाँ रहा और क्या क्या किया यह सब मैं ही जानता हूँ। जाने-पहचाने रास्तों पर अनजानों की तरह भटकता रहा। कोई काम देगा इसलिए भटकता रहा है। पेट कि भूख से आग से बेहाल रहा मैं बेहाल सोया। बहुत कष्ट उठाये, बहुत कुछ सहा पर फिर भी लौटकर घर आऊँ ऐसा कभी नहीं लगा।

उन दिनों ने मुझे बहुत कुछ सिखाया। इंसानों को मन पढ़ना सीख गया। स्वभाव पहचानना सीख गया। पर सभी दिन एक जैसे थोड़े ही होते हैं ? कुछ दिनों बाद मेरे जीवन को एक नयी दिशा मिल गई। अचानक एक दिन मुझे मनोज शर्मा मिला। मनोज मेरा काफी पुराना दोस्त है। मेरी अवस्था देखकर वह बहुत रोया। मुझे अपने घर ले गया पेटभर खाना खिलाया। उसने कहा, तुम्हारी काविलियत पर मुझे पूरा भरोसा है मेरा छोटा -सा कारखाना है वहाँ स्पेयर पार्टस बनते हैं मुझे एक विश्वासपात्र आदमी की जरूरत है आज से तुम मेरे असिस्टंट। देखो अगर ठीक लगे तो। मैंने पूरी ईमानदारी के साथ वहाँ नौकरी की। कारखाना बहुत चल निकला। वहाँ बड़े-बड़े

लोगों से मिलना-जुलना होता था। एक बड़े उद्योगपति शहा ने मुझे ऑफर दी। मनोज ने कहा तुम अवश्य जाओ, उसी में तुम्हारा फायदा है।

शहा के साथ मुझे बहुत कुछ नया सीखनो का मौका मिला। एक दो बार व्यापार के काम से जर्मनी जाने का अवसर मिला। अब मेरे पास काफी पैसा जमा हो गया है। पुना में फैक्टरी शुरू करने का मेरा विचार है। सच तो ये है कि वैसे कहीं भी काम शुरू किया जा सकता है पर जिन लोगों ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया उन्हीं को दिखाने के लिए मैं पूना में व्यवसाय शुरू करूँगा। बिलकुल आमने सामने।

पिछले बारह सालों मे यह सब घटित हुआ। पर मैं तो केवल अपने बारे में बता रहा हूँ।

तुम कैसी हो ? वैसे तुम्हारा सब कुछ ठीक-ठाक ही होगा। घर की छाव तुम्हें मिलती रही होगी। चार दीवारी की सुरक्षा में रही हो। पहले जैसे ही सुंदर होगी तुम।

अभिषेक भी बड़ा हो गया होगा। मैं तो उसे पहचान नहीं पाऊँगा। अब तुम लोगों से मिलने की बेचैनी हो रही है मैं जल्दी ही आऊँगा। पुना में रहने का प्रश्न है मैं सोच रहा हूँ कि फ्लॅट में रहना ठीक होगा।

और काफी सारी बातें हैं, बहुत कुछ बताना बाकी है। आने पर सारी बातें स्पष्ट करूँगा।

तुम्हारा देवेन्द्र

पत्र पढ़कर रेशमा की आँखों में आँसू आये उसने आँचल से धीरे से पोंछ दिया। तुम्हारा सब ठीक होगा। तुम चार दीवारी में सुरक्षित थीं देवेन्द्र की लिखी पंक्तियाँ उसे चुभने लगी। देवेन्द्र ने मेरा अपहास किया है फिर उसे लगा क्यों नहीं वह ऐसा कर सकता। उसकी क्या गलती है?

उसे वह प्रसंग याद आया जब बाबा साहेब और कमलाकर दोनों ने देवेन्द्र को दोषी ठहराया था। एक लाख रुपयों की हेरा-फेरी करने का आरोप लगाया था। वे दोनों ही उस पर आग बरसा रहे थे।

मैं ऐसा कर सकता हूँ ये कैसे मान लिया आप लोगों ने? मैं इस हद तक गिर सकता हूँ? कैसे समझा आपने? देवेन्द्र की आँखों से आँसू बहने लगे थे।

उस पर कमलाकर ने कहा 'ऐसा तुम करोगे कभी हमने भी नहीं सोचा पर तुमने ऐसा किया ही है। कारखाने में क्या क्या किया सब जानते हैं हम। अचानक कई पार्टस वहाँ से गायब हो गये।

पर उसके लिए आप मुझे क्यों जिम्मेदार मान रहे हैं।

कारण यह है कि कारखाने की चावियाँ हम तीनों के पास ही रहती है और लगातार चार पाँच दिन से तुम रोज रात को बाहर जा रहे थे। इसमें न माननेवाली बात ही नहीं है।

कमलाकर की बात सुनकर रेशमा के सारे .... खड़े हो गये। देवेन्द्र अपने दोस्त के यहाँ जा रहा था या कारखाने में? सच क्या है? यह बड़ा प्रश्न चिह्न उसके सामने खड़ा हो गया।

इतने में देवेन्द्र ने कहा इस आरोप को मैं सहन नहीं कर पा रहा हूँ इसलिए मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ। इतना कहकर जरूरी चीजें उसने बैग में भर ली। रेशमा उसे समझाने के लिए कमरे में गयी, पर वह कुछ भी सुनने के लिए तैयार नहीं था। उसकी मन:स्थिति ठीक नहीं थी।

तुम क्या करोगी? उसने उसे पूछा। पर रेशमा चुप खड़ी रही। पास खड़े अभिषेक पर उसकी नजर गयी। मैं अगर घर छोड़कर चली गई तो इसका बुरा हाल हो जाएगा। पता नहीं क्या-क्या सहन पड़ेगा। इसके अलावा मुझे भी कष्ट उठाने पड़ेगे। कहीं भी रहना पड़ेगा जो मिला उसी से संतोष करना यह सब का मुझसे हो सकेगा?

क्या सोच रही हूँ तुम मेरे साथ चलोगी या नहीं ? देवेन्द्र ने फिर से पूछा और रेशमा ने जल्दी से कहा तुम कहीं नौकरी ढूँढ़ लो। थोड़ा अपना ठिकाना ठीक बना लो तब।

उसकी बात पूरी सुने बिना वह घर के बारह निकल गया।

बाबा साहेब और कमलाकर दोनों उसे गैर कि नजर से देखते रहे। पर किसी ने उसे रोकने का प्रयास नहीं किया। अभिषेक ने जोर से चिल्लाकर उसे जाने से रोकना चाहा, 'पापा' मत जाइए।

अर्थात उसकी आवाज देवेन्द्र तक नहीं पहुँच पायी। आज भाँजी होनी चाहिए थी रेशमा और देवेन्द्र के मन में यह बात आयी। वे होती तो देवेन्द्र को रोक सकती थी।

देवेन्द्र के जाने के बाद बाबा साहेब ने कहा जाएगा कहाँ? एक दो महीने में यहाँ वहाँ धक्के खाकर यहीं लौट आयेगा।

पर देवेन्द्र नहीं आया। न ही उसका पत्र आया न उसने कभी फोन ही किया।

उसके जाने के बाद कभी भी घर में उसकी याद तक नहीं निकाली गयी। रेशमा हमेशा उसके बारे में सोचती रहती थी। क्या करता होगा?

उसे लगता था निश्चित ही उसकी हालत ठीक नहीं है। ऐसे विचार मन में आते ही रेशमा को अपनी चचेरी बहन वंदना की याद आ जाती। उसके साथ भी ऐसा ही हुआ था। घर चांदी के बर्तन चोरी करने के इल्जाम में वंदना के पति पर लाँछना लगाया उसने भी घर छोड़कर जाने का निर्णय लिया तो उसके साथ वंदना भी घर के बाहर निकली। पर आगे चलकर उन दोनों को काफी कष्ट उठान पड़े साथ में बेटे का भी बुरा हाल हुआ। उन्हें जीवन में बहुत उतार-चढ़ाव देखने पड़े तब जाकर वे ढंग का जीवन जीने लगे। वंदन को सोचना चाहिए था जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए थी। घरवालों ने तो हाथ पकड़ कर तो नहीं निकाला था, ऐसा सभी रिश्तेदार कहा करते थे।

घर में रहते हुए रेशमा को वंदना कि याद आती थी। और उसे याद करते हुए यह तसल्ली होती थी कि उसने घर छोड़ने की गलती नहीं की।

दिन बीतते जा रहे थे, उसका कोई अलग रंगरूप नहीं था। एक दिन ऐसा आया जब देवेन्द्र की सच्चाई को लेकर सबकी आँखें खोल दी। देवेन्द्र को न्याय मिल गया। उस पर जो आरोप लगा था वह बेबुनियाद

सिद्ध हुआ।

कारखाने में ही एक विश्वसनीय नौकर ने ही बेईमानी की थी। उसने अलग चबियाँ बनवा ली थी और उसी से वह रोज रात में पार्टस चोरी करता था। देवेन्द्र के जाने के बाद भी यह सिलसिला जारी था। एक दिन वह पकड़ा गया और उसने अपना गुनाह कबूल किया।

उस दिन रेश्मा बहुत रोई। बाबा साहेब पर कहाँ आँसू आये। मैं देवेन्द्र से क्षमा मागूँगा, पर वह कहाँ होगा किसे पता? यह सुनकर रेशमा को बाबा साहेब बहुत दुःखी लगे। और इतनी सब रामायण हो जाने के बाद आज देवेन्द्र का पत्र आया है। पत्र पढ़कर कई भावनाएँ उसके मन में एकत्र हुई। देवेन्द्र निर्दोष है यह उसके मन में तब भी नहीं माना था। उसे लगा वह देवेन्द्र की अपराधी है। पर यह सच कभी देवेन्द्र को पता न चले, जैसे और कई बातें उससे छिपी रहेगी, उसका भी वह जिक्र नहीं करेगी यह उसने ठान लिया। और वह भोजन करने बैठी।

भोजन करते समय वह फिर उससे एक बार पत्र डाला। तुम पहले जैसे सुंदर दिखती होगी। चार दीवारी में सुरक्षित थी उसने पत्र में लिखा था।

हाथ धोते समय रेशमा में मन में विचार आया क्या में सुंदर दिखती हूँ, पहले जैसी। पर मेरा सौंदर्य चार दीवारी में सुरक्षित कहाँ थी? और उसे 'वह' प्रसंग याद आया। कमलाकर की भूखी नज़र से वह बच नहीं सकी थी वह।

दोपहर का समय था। जेठानी किसी काम से बाहर गई थी। बाबा साहेब भी घर में नहीं थे। कमलाकर ने मौके का फायदा उठाते हुए सीधे उसका हाथ पकड़ा और खींचते हुए उसे बेडरूम में ले गये।

'जेठजी छोड़िए मुझे' उसने अपने आप को छुड़ाने का प्रयास करते हुए कहा था। पर उसने नहीं छोड़ा। उसने अपने करीब खींचते हुए कहा मैं जानता हूँ तुम्हारे शब्द खोखले हैं, कई दिनों से तुम भी भूखी हो।

उसके बाद फिर दो तीन बार उन्होंने जबरदस्ती की। मन धिक्कारता रहा पर शरीर पर तो गुलाब जल के छींटे की शुशबु .... महसूस हुआ। और तभी से अनजाने में ही कमलाकर कि पसंद, नापसंद का ख्याल आदत में शुमार हो गया। एक मन उस पर क्रोधित होता पर दूसरा मन उसका इंतजार करता।

'रेश्मा, कितनी दूर से बैठी हुई हो? क्या बात है? क्या सोच रही हो? बाबा साहेब ने रसोई में आकर पूछा तब वह वर्तमान में लौट आयी। काम निबटाकर हाथ धोकर वह बेडरूम में जाकर लेट गई। बाबा साहेब और अभिषेक को देवेन्द्र के पत्र कैसे बताऊँ बताना तो पड़ेगा ही, पर कब बताऊँ? वह सोचती रही।

जब अभिषेक घर आया तब उसने पत्र के संबंध में बताया। दोनों के चेहरे पर भाव देखते हुए उसने सारी बातें स्पष्ट की। यह बात सुनकर अभिषेक में उत्साहित हो उठा। उसने कहा 'अब मैं इंटरव्यू देने नहीं जाऊँगा, मैं और पापा मिलकर व्यवसाय करेंगे।

बाबा साहेब ने कहा तुम्हें जो करना है करो, पर मैं तो देवेन्द्र को यहाँ जाने नहीं दूँगा। रेशमा ने कहा।

पर देवेन्द्र ज्यादा इंतजार नहीं करवाया। दो तीन दिन बाद ही वह लौट आया। सबेरे का समय था। बाबा साहेब दूसरी बार चाय पी रहे और बेल बजी। बेल जिस अधीशता से बजायी गयी उससे रेश्मा को अंदाजा हो गया कि देवेन्द्र आया है। काम छोड़कर उसने दरबाजा खोला तो सामने देवेन्द्र खड़ा था।

जाते समय केवल एक बैग लेकर घर से निकला था पर अब लौटते समय उसके पास बहुत ज्यादा सामान था।

'अरे देवेन्द्र' ऐसा कहते हुए बाबा साहेब आगे आये पर देवेन्द्र ने उससे बात नहीं की। उसने रेश्मा से कहा 'तुम्हारा सामान बाँधा लो। फलैट पर जाना है। मुझे यहाँ रहने की तनिक भी इच्छा नहीं है।'

उसकी बातें सुनकर, बाबा साहेब रोने लगे, कहने लगे .... बेटा, बुढ़ापे में मुझे ऐसा दुःख मत दो। तुम पर लगाये गये सारे इलजम झूठे साबित हुए। तुम से माँफी माँगना चाहता पर तुम्हारा कहीं पता ठिकाना नहीं मिला। कमलाकर भी अपनी गलती की माफी चाहता है।

बाबा साहेब को रोते हुए देवेन्द्र नहीं देख सका। उसे लगा एक बड़ा वृक्ष ही जमीन से उखड़ने लगा है। रेश्मा ने कहा 'अब घर छोड़कर कहीं भी नहीं जाना है। बीते बारह सालों को अपने जीवन से निकाल देंगे और एक नये जीवन का प्रारंभ करेंगे।

देवेन्द्र ने सारा सामान अंदर जाकर रखा। रेश्मा ने उसकी पसंद की चाय बनायी और नाश्ते में इड्ली और चटनी। उसके सामने इड्ली प्लेट रखते हुए तिरछी नजर से उसे देखते हुए रेश्मा ने कहा 'तुम्हारी पसंद कि इड्ली मैंने आज जान बूझकर बनायी है। सबेरे सपने में तुम आज ही आयेंगे ऐसा देख था इसीलिए मैं यह नाश्ता बनाया।

उसकी तरफ देखते देवेन्द्र ने सोचा इसने इन बारह सालों में क्या किया होगा? मेरा इंतजार किया या किसी अन्य पुरुष से संबंध बनाये? वह कर भी क्या सकती थी। शरीर की भूख ही जबरदस्त होती है।

सोचते हुए उसने इड्ली चटनी खायी और स्वाद लेकर चाय की चुस्कियाँ ली। तभी उसे रेश्मा के कहे हुए वाक्य याद आये "बीते हुए बारह सालों को भूलकर नया जीवन प्रारंभ करेंगे। और वह उत्साह से भर उठा। उसने तय किया कि पिछले बारह सालों में क्या हुआ इसके बारे में ना सोचकर आगे बढ़ेगा। पहले जैसे ही गाना गुनगुनाते हुए वह रसोईये गया और रेश्मा को आगोश में भर लिया और कहा 'इड्ली चटनी मेरे पसंद कि बनाई उसी तरह रात को भी मेरी पसंद का बना दो।"

'रात' शब्द पर जोर उसे देखते हुए कहा 'सुहागरात के समय जैसाश्रृंगार था वैसा ही आप भी करना। मोरसंरकी साड़ी और स्वीव्हलेस ब्लाऊज और तुम्हारे लंबे बालों को खुला दोड़ दो। उन घने बालों में मैं अपने आप को भूल जाऊँगा। मैं मोगरे के गुजरे अभी आता हूँ।

देवेन्द्र बाहर चला गया और रेशमा आइने

शेष पृष्ठ 17 पर

पहचान

कमला प्रसाद 'बेखबर'

प्रकृति के विराट रूप में तादात्म्य स्थापित करने में कवियों और दार्शनिकों को सफलता मिलती है। किंतु उनमें मेघ का ऐसा व्यक्तित्व है, जिससे हर व्यक्ति प्रभावित हो जाता है। कृषक तो मेघ से लाभजन्य एकात्मभाव रखने के लिए अनादि काल से विख्यात रहे हैं। महाकवि कालिदास ने इस भावत्मक संबंध को अत्यंत सजीव रूप में देखा था 'हे मेघ, कृषि का जीवनदाता, तुझे आया देखकर कृषक प्रसन्न होंगे और कृषक बधुएँ तृप्त नयनों से तेरे सौंदर्य का पान करेंगी।'

कृषक और मेघ में जिस आत्मीयता का दर्शन महाकवि ने किया था, उसे आज खेत की मेड़ पर खड़ी पचपन वर्षीया वीणा देवी देख रही हैं, अनुभव कर रही हैं, और आत्मा में बसा रही हैं। पानी तीन दिनों से मूसलाधार बरसा है। खेती में पानी चाँदी जैसे चमक रहा है। हल्का रिमझिम अभी भी चालू है। किसान हल बैल लेकर खेतों में मतवालों की तरह पिल पड़े हैं। घुटनाभर कीचड़ को उमंग से उखाड़ने हुए बैल और हलवाहे बढ़ रहे हैं। धान का बिचड़ा उखाड़कर औरतें रोपनी में संलग्न हो गई हैं। पैरों के नीचे कीचड़ की गुदगुदी और ऊपर से बरसती हल्की फुहारें मन में कर्ममय संगीत को कुरेद रही हैं। मेघ से आत्मीयता स्थापित करते हुए उनका कंठ स्वर फूट पड़ा है। हाथ बिचड़े की रोपनी कर हा है, और मन गा रहा है। पूरे वातावरण में उनका कंठ स्वर गूँज उठा है। रोपनी करती औरतों के दल में सरोसतिया, सूखनी और शिवरानी को आवाज सबसे तेज है-बिल्कुल पहचान में आनेवाली-

'मचिया बैठलि रानी कोसिल्ला से,
मेघा से अरज करै रे।
मेघवा रे, जनि बरसे तूहि ओहि बन में-
कि राम जी भीजैत हइते रे।'

मचिया पर बैठी माता कौशल्या मेघ से बिनती करती हैं कि वह उस वन में नहीं बरसें, जहाँ रामजी भींग रहे होंगे। माता के हृदय की यह ममता मेघ के माध्यम से जो किसी अनजान लोककवि ने कभी बरसायी होगी, उस गीत से मेड़ पर खड़ी खेत की मालकिन वीणा देवी बिल्कुल भींग उठती है-सराबोर आँसुओं से। रोपनी करनेवाली औरतें रोपनी कर रही हैं-गा रही हैं। पूरा वातावरण कर्ममय संगीत से मुखरित हो उठा है। मगर वीणा देवी का मन एक कड़ी पर अटक गया है-'राम जी भीजैत हठतै रे। राम जी वन में भींग रहे होंगे।

उनकी स्मृति तीस वर्ष पीछे चली जाती है। उस समय मुन्ना तीन साल का था। धनबाद में अभी कार्यरत इंजीनियर मानवेन्द्र सिंह उस समय मुन्ना ही था-बिल्कुल माँ पर आश्रित , कौआ, मैना की जानकारी के लिए भी-खाने-पीने के लिए भी, और नहाने, शौचादि के लिए भी। छोटा भोला, तोतली बोलने वाला प्यारा मुन्ना-कुल का दीपक माँ की आशा, पिता के भविष्य का सहारा-मुन्ना बीमार हो गया था। तेज बुखार, रात के लगभग एक बजे वह चौंकने लगा था। पिता घर में नहीं थे। माँ का हृदय व्याकुल हो उठा था। वीणा देवी को याद है-यही सावन का महीना था। काली अंधेरी और बरसती हुई रात थी, बहुत भयावनी। किंतु उससे भी अधिक भयानक था मुन्ना को तेज बुखार में चौंकना और...और एक भयानक सी कल्पना। हर बड़ा भय, छोटे भय को निगल जाता है। वीणा देवी उस समय लगभग 19-20 की रही होगी। घर से बाहर पाँव नहीं रखती थी। बाहर की दुनियाँ, अंधकार में भूत-प्रेत, चोर-डकैत, साँप-गीदड़ के भय से भरी जान पड़ती थी। किंतु उस रात माता की ममता की आँधी में सारे भय वह गये थे। गाँव में कोई डाक्टर वैद नहीं था। बगल का कस्बा गाँव से दो कोस दूर था। इस अंधोरी रात में किससे गाड़ी माँगने जायेगी और कौन घर से बाहर निकलेगा उसके लिए। अपने नौकर हरिया को साथ लेकर मुन्ना को कँधों से लगाये वह दौड़ पड़ी थी कस्बे की ओर। हाँ, वह लगभग दौड़ रही थी। पैर के नीचे कहीं कीचड़ कहीं पानी पड़ता था। कहीं फच्च से कीचड़वाला पानी उड़कर पूरा कपड़ा को गंदा कर देता था। हल्की फुहारें थीं-बीच-बीच में बिजली राह दिख जाती थी।

मुन्ना को कपड़ा से लपेट कर कँधों से लगाये, एक हाथ में छाता थामे वह आगे बढ़ रही थी। उसकी साड़ी का निचला हिस्सा पानी कीचड़ से सना चल रहा था। उसे उस समय न यह भय था कि पैर किसी साँप पर पड़ सकता है, कोई चोर डाकू रास्ते में घेर सकता है, आगे जामुन के पेड़ से कोई प्रेत मिट्टी रबसा सकता है और न अपनी साड़ी के कीचड़ से सनने या खुद को भींगने की कोई चिंता थी। भय, चिंता, आशा, दुराशा सब मुन्ना के बुखार के इर्द-गिर्द सिमट कर आ गयी थी। अर्जुन अपने लक्ष्यबेधा में जैसे मछली की आँख को छोड़कर अन्यत्र नहीं देखता था-वैसा ही।

उसे स्मरण आ रहा है। हवा के कारण छाता सँभाल में नहीं आ रहा था। उसने पीछे-पीछे आता हुआ तंद्रिल हरिया को छाता थमा दिया था और अपने आँचल ओढ़ाकर मुन्ना को ठीक अपनी छाती के नीचे ममता की आड़ दिये, बरसात की फुहारों को अपनी पीठ पर लेती, वह लगभग दौड़ती हुई जा रही थी। हाँफ जाने पर चाल कुछ मघ्यम जरूर हो जाती थी, मगर मन तो जैसे उड़ कर डॉक्टर के पास पहुँच जाना चाहता था। कीचड़ में कहीं सीसा का एक टुकड़ा उसके पैर में गड़ गया था। खून भी बहा था। मगर अपने पैर और सासा और खून का पता उसे तब चला था, जब मुन्ना होश में आ गया था-सुबह में। वह जब डॉक्टर के यहाँ पहुँची थी तो हनुमान मिल में तीन का घंटा बजा

था।

बाइबिल की नीति के मुताबिक खुदा और वेद का द्वार सबके लिए हमेशा खुला रहना चाहिए के समर्थक डा० गोरखनाथ का द्वार सदैव के लिए खुला रहता था। आवाज देने पर वे फौरन उठकर बाहर आये थे, और दवा सूई देकर बच्चे को होश में लाया था। उस समय पूरब में लाली छा रही थी और मुर्गा बांग दे रहा था और वीणा देवी के मन में घिरी भय-रात्रि समाप्त हो रही थी। मुन्ना ने दुध माँगा था और वीणा देवी के मन में दुराशा के बादल छँट गए थे। आसमान साफ हो गया था।

वीणा देवी स्मरण करती है, कि उसका मध्यवर्गीय किसान परिवार, हमेशा तंगी में रहता आया है। किंतु उसी में अपना पेट काट कर, कर्ज काढ़ कर मुन्ना को पढ़ाया है। बेशक वह पढ़ने में तेज था। अपनी योग्यता के बल पर प्रतियोगिता परीक्षा पास कर उसने इंजीनियरिंग कॉलेज में नाम लिखाया था। उसे पढ़ाने में कुछ कसर नहीं रखा गया था। वीणा देवी सिर्फ दो गाढ़े की साड़ी से साल खेप लेती थी। उनके पति की भी यही हालत थी। बैल की तरह कमाना, खटना और अपनी बीमारी और दवा की चिंता को भी पीछे छोड़ कर मुन्ना को पैसे भेजने की चिंता करते रहना।

इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में मुन्ना का एक पत्र आया था कि 'अब उसे पैसे नहीं भेजें। माँ-बाप पर वह अधिक भार डालना नहीं चाहता है। उसने खर्च का जुगाड़ बैठा लिया है।' सुनकर वीणा देवी को अपने पुत्र पर गौरव हुआ था। उन्हें क्या पता कि तपस्या के इस अंतिम क्षण में कोई विक्रम बाबू ठेकेदार ने मुन्ना का खर्च उठा लिया था। ऊँची पैरवी और पैसों के बल पर पास करते ही उसे नौकरी भी लगवा दी थी, और माँ-बाप की इच्छा की परवाह न करते हुइ मुन्ना विक्रम बाबू का दामाद भी बन गया था। खैर यह सब पुरानी बातें हैं। मगर उन घटनाओं ने इस परिवास पर जो प्रभाव छोड़ा था, वह भुलाये नहीं भूलता है।

विवाह के ठीक आठ दिन पूर्व एक चमचमाती कार पर विक्रम बाबू के साथ मुन्ना पर आया था, और नौकरी पाने की शुभ सूचना के साथ विवाह का छपा कार्ड भी साथ लाया था, जिसमें पिता की जगह 'इन्ही' का नाम लिखा था। विक्रम बाबू ने मुन्ना के सुखमय भविष्य और बड़ी तरक्की और आर्थिक प्रभाव, नाम, यश आदि पर लंबा भाषण दिया था। मुन्ना ने संकोचवश अपनी उन्नति में विक्रम बाबू के योगदान की चर्चा कर हम लोगों को भी धनवाद चलकर रहने का आग्रह किया था। वीणा देवी को स्मरण है कि उनके पति ने मुन्ना से कहा था-'बेटा मुन्ना हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है, तू आज इंजीनियर मानवेन्द्र सिंह है। विक्रम बाबू जैसे बड़े लोग तुम्हारे ससुर हो रहे हैं। बस हमें सुख है, कि हमारी तपस्या सफल हुई। मगर बेटे आजतक किसी भी बेटा का कंधा इतना मजबूत नहीं देखा गया कि वह माँ-बाप का भार उठा सके। माँ-बाप के कंधे में ममता का बल होता है, इसलिए वह उठा सकता है, उठा लेता है। बेटा के कंधे पर कमजोर कर्त्तव्य भावना की कोमल चमड़ी होती है। वह भार उठा तो लेता है, मगर कँधे पर तुरंत फफीले उग आते हैं और वह बोझ को नीचे पटक देता है। हम सब यहीं ठीक हैं। अपना मूल से उखड़कर नया पौधा तो दूसरी मिट्टी में जड़ जमा सकता हैं। किंतु पुराना पेड़ को अपनी मिट्टी से उखाड़ना, उसे सुखाकर मारने जैसा है। तुम खुश रहो, हमारा रोआँ सदैव तुम्हें आशीष देता रहेगा।

इनकी बातों को सुनकर विक्रम बाबू प्रसन्न हुए थे और सिर्फ विवाह में आने का जोरदार अनुरोध करने लगे थे। बारात की व्यवस्था धनबाद में ही हो गई थी, सिर्फ समधी समधिन को आना था।

वीणा देवी की सारी बातें बिल्कुल याद है- विवाह में मुन्ना के पिता नहीं गए थे। तन बीमार और मन आहत था। मगर वीणा देवी के मोह में धनबाद गई थी। किंतु इतने बड़े लोगों, इतनी कारों, जीपों और इतनी सजी सजाई स्थितियों के बीच वीणा देवी अपने को ठीक उसी स्थिति में पायी थी, जैसे बाजार में पड़ी हुई रसदार मीठा सुकुल आम की खाली टोकरी हो। आम तो हाथोहाथ बिक रहा था, खाली टोकरी पड़ी थी। आढ़तवाले सिर्फ इतना भर कह रहे थे कि 'यह सुकुल आमवाली टोकरी है। ठीक से बगल में रख दो।'

सारे काम, विधि व्यवहार विक्रम बाबू की पत्नी और अन्य महिलायें कर रही थीं। ठेकेदारों, इंजीनियरों, अफसरों और नेताओं की पत्नियों एवं बहू-बेटियों के बीच वीणा देवी अपने को वैसा ही समझ रही थीं, जैसे सोने के मटरमाला के बीच में टोटका के लिए एक रूद्राक्ष पिरो दिया गया हो-'दूल्हे राजा की माँ है-बेचारी गाँव से आई है....।' इसे 'बेचारी' और 'गाँव से' दो शब्दों के भीतर अपार व्यंजना और ध्वनि और वर्ग रह छिपे होते थे। जैसे गाँव से आई बेचारी गरीब, अपढ़, जाहिल, असभ्य, साधनहीन है। हमारे समाज के लिए अनफिट और दया का पात्र है। उसके पास इस इंजीनियर बेटा की माँ कहलाने के अलावे और कोई गुण या योग्यता या औकाद नहीं है। वीणा देवी देहात की थी जरूर, मगर इस सारे ध्वन्यात्मक अर्थो को समझती थी। उसे अपने पर ग्लानि और पछतावा हो रहा था-कि वह यहाँ क्यों आई। अपने घर में हमेशा दा चार नौकर मजदूरों के द्वारा मालकिन पुकारा जाती थी। गाँव में उनकी प्रतिष्ठा थी। किन्हीं से घर शादी, उपनयन, मुंडन हो, वीणा देवी को जरूर बुलाया जाता था और उनकी सलाह मानी जाती थी। और यहाँ वह इस वैवाहिक कार्यक्रम रूपी गाड़ी का एक फालतु पुर्जा थी। जिसके बिना भी गाड़ी बाकायदा चल सकती थी। शादी के दूसरे ही दिन पति की तबीयत खराब होने की बात कहकर वह गाँव आ गई थी। गाड़ी में चढ़ते समय मन में पीड़ा जरूर थी। मगर गाँव पहुँचने पर उसे लगा था जैसे अपने बेटा-बहू से अलग होकर, यहाँ वह 'अपनों' के बीच आ गई थी। पतिदेव ने वीणा देवी को एक नजर देखा था और बिना कुछ कहे सारी स्थिति को समझ गए थे।

वीणा देवी स्मरण करती है कि विवाह के चार वर्षों के बाद एक बार मुन्ना गाँव आया था, पिता की सख्त बीमारी की चिट्ठी पाकर। मगर उसके आने में कोई ललक या आत्मीय उद्वेग जैसी बात नहीं थी, ठंडा कर्त्तव्य का भाव था। आते ही उसने जमीन जायदाद खेत अपने मूल से नहीं हट सकते हैं–उसने हमें गाँव छोड़कर धनबाद चलने का आग्रह किया था। आग्रह से अधिक उसमें कोफ्त भरी झल्लाहट थी–'क्या मिलता है, आप लोगों को इस खेती में ? न भरपेट खाना, न ढंग से रहने की सुविधा। इलाज तक के पैसे नहीं बच पाते होंगे। फिर आप लोग क्यों गाँव से चिपके पड़े हैं ? मेरे साथ रहिये। किस चीज की कमी है वहाँ ?'

वीणा देवी को बिल्कुल स्मरण है कि उसका तनबदन बिल्कुल जल उठा था। एक ठकुराइन का आत्म सम्मान सुलग उठा था–

'तू पूछता है कि हमें खेती से , गाँव से क्या मिलता है ? बहुत कुछ मिला है, और मिलता है। मेहनत मुशक्कत की रोटी खाने की आदत मिली है। कम में संतोष करने की प्रकृति मिली है। संघर्षों से जूझने की शक्ति मिली है, जिससे फूट कर तेरे जैसा लाल निकला है। यह क्या कम बड़ी देन है ? और तू पूछता है कि वहाँ रहने से हमें किस चीज की कमी होगी ? तो सुन–वहाँ मेरा 'मैं' खो जायगा हम तुम्हारे बगीचे का एक पौधा बनकर रह जाएँगे। यहाँ हम स्वयं एक संपूर्ण बगीचा। हैं। यहाँ हमारा सम्मान है, हमारी पहचान है, हमारे कुल वंश की विरासत है। अपनी छोटी सी खेती और छोटे से घर के हम मालिक हैं। यहाँ तू भी हमारी मिलकियत में से एक है। लोग कहेंगे–'तू हमारा बेटा है। मगर वहाँ के लोग हमारे खानदान को और हमें नहीं पहचानेंगे। वहाँ हम इंजीनियर साहब के बूढ़े माँ-बाप बनकर रह जायेंगे। दया के पात्र, पहचान-हीन।'

और मुन्ना झल्ला उठा था–ठीक है, मरिये इसी तरह। मुन्ना नाराज होकर चला गया था। और, तभी से वीणा देवी मर्द की तरह कमर कसकर अपना खेत-खलियान देखती है। रोपनी, कटनी, दबनी सब कराती है। पति की सेवा के साथ-साथ अपनी मिट्टी से जुड़ी हुई वह भूल ही गई है कि उसका कोई बेटा भी है। गाँव के पड़ोसी, नौकर, मजदूर ये बेटे हैं, परिजन हैं, अपने हैं। फिर भी जाने क्यों सावन के महीने में इस गीत की कड़ी को सुनकर मन क्यों उड़ने लगता है, बहुत पीछे, तीस साल पीछे–सावन की अँध ेरी रात में कलेजे से लगा बीमार मुन्ना को भींगने से वह बचाने लगती है। अपनी पीठ पर सब बौछारें झेल लेना चाहती है–'रे मेघ उस बन में मत बरसना–राम जी भिजैत हइतै रे।

– संपादक शैली / कामायनी
प्रोफेसर कॉलोनी / फॉरबिसगंज (बिहार)

पृष्ठ 14 का शेष

के सामने बैठकर देवेन्द्र की पसंद का मेकअप करने लगी।

रात में देवेन्द्र शरीर पर हाथ, फेरते हुए कहेगा तुम तो पहले जैसे ही सुंदर हो। तुम्हारे बाल भी वैसे ही सुंदर और हैं।

इसके आलिंगन में मैं सब कुछ भूल जाऊँगी, उसके स्पर्श से सारा शरीर खिल उठेगा। यह सब सोचते-सोचते रेश्मा का मन कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध हो गया। उसे एकदम से कमलाकर की याद आयी। दो तीन बार उसे जबरदस्ती की थी पर उसे वह जबरदस्ती आ गयी थी। उसका स्पर्श उसे अच्छा लगा था इसी कमरे इसी बिस्तर पर।

और आज मैं देवेन्द्र से मिलने के लिए उत्सुक हूँ। मैं हूँ, कैसे हूँ मैं? रेश्मा ने अपने मन से प्रश्न किया और ठीक उसी समय उसे अपने घर में पली बिल्ली की याद आयी।

रेश्मा जब छोटी थी तब उनके यहाँ एक बिल्ली थी शुभ्र धवल रंग की। बहुत सुंदर थी वह। रेश्मा के मम्मी पापा उसे दूध दिया करते थे। कभी कभी रेश्मा भी उसे दूध दिया करती थी। दूध पीकर वह लाड से उनके पैर चाटती थी। कुछ दिनों बाद उसके पापा का तबादला पूना से नागपुर हुआ।

''पापा! हम अपने साथ बिल्ली को भी नागपुर ले जाएँगे उसे दूध कौन देगा? रोते रोते रेश्मा ने नागपुर जाते हुए कहा। उसने पापा ने हँसते हुए कहा था'' अरे बेटा तुम उसकी चिंता मत करो। इस घर में तेरा दोस्त ही रहने आ रहा है। उसका परिवार भी है वे लोग बिल्ली को दूध देंगे ही। पर पापा म्वनी उनसे दूध पियेगी क्या? बेशक पियेगी! बिल्ली की जात ही ऐसा होती है। बिल्ली कुत्ते जैसे नहीं है। कुत्ता अपने मालिक से प्यार से प्यार करता है और बिल्ली वास्तु से प्यार करती है।

मालिक पर कोई संकट आया और वह घर छोड़कर जा रहा है तो कुत्ता भी उसके साथ जाएगा। उसके साथ दुनिया भर भटकता है पर बिल्ली ऐसा नहीं करती।

नागपुर जाते समय पापा ने जो कहा था वह बिल्कुल सही और सच था। पापा के दोस्त का पत्र आया था उसमें उन्होंने बिल्ली का जिक्र किया था और लिखा था वह बड़े मजे में है और पहले से ज्यादा मोटी हो गयी है। बहुत पहले घर चुका यह प्रसंग रेशमा को याद आया गया और उसने लगने लगा कि वह भी बिलकुल बिल्ली जैसे हो गयी है। मेरी जगह दूसरी कोई होती तो वह अपने पति के साथ घर छोड़कर चली गई होती। वंदना का ही उदाहरण ले सकते हैं। पर मैंने तो ऐसा नहीं किया इसी घर मैं, इसी वास्तु में रह गयी। जिसने भी मुझे सुख दिया उसी के पैर चाटते हुए नहीं। मैं भी बिल्ली हूँ।

इन विचारों से रेश्मा विचलित हुई। उसे आईने में देखते डर लगने लगा। उसे लगा। उसे लगा आईने में उसका प्रतिबिंग नहीं वरना मोटी सी सुंदर बिल्ली ही दिखाई देगी। यह मन में आते ही वह बैचेन होने लगी। उसके हाथ में गोगरे के गजरे थे। उसमें से एक रेश्मा के नाक के सामने कर उसने कहा इस सुगंध के जैसे ही रात भी सुगंधित होनी चाहिए। कम आन इस सुख के लिए में भी बहुत अधीर हो रही हूँ। रेश्मा ने उसके कंधा पर सिर रखते हुए कहा। पर बाद में उसे लगा कि मैंने कुछ नहीं कहा केवल म्वाव म्याव किया।

संपर्क : विवेक वर्धिनी महाविद्यालय,
जामबाग-39, हैदराबाद, आँ॰प्र॰

●

खुदा के बंदे, सावधान!

○ युगल किशोर प्रसाद

बंदे! पैर खींचनेवालों से सावधान
लोग अवश्य डालेंगे तेरे मग में व्यवधान।
जग की यही उल्टी रीति है प्यारे बंदे
तनिक सोचो, निकल आएगा समाधान।
तुम खुद बहुत कुछ करने में समर्थ हो
रहे सदा तुम्हारा अपने लक्ष्य पर ध्यान।
अंतर्मन सच्चा गुरु है तेरा बंदे
अंतस् में झाँको मिलेगा सही ज्ञान।
सदा हिम्मत से काम तो बंदे
छँट जाएँगे मग के सारे व्यवधान।
तुममें अपार शक्ति भरी है बंदे
खुद करो बंदे अपना भाग्य-निर्माण।
यह उपदेश नहीं है मेरे साथी
करा रहा हूँ मैं छिपी शक्ति का ज्ञान।
तुम कर्त्तव्य-पथ पर सदा चले तो
बढ़ जाएगी बंदे तुम्हारी शान।
अर्ज है मेरी, हर बंदा रहे सावधान
घर न करे कभी मन में अभिमान।
आलस्य से सदा बचो प्यारे बंदे
जारी रहे तुम्हारा विजय अभियान।
हैवानियत से मुँह मोड़ो प्यारे बंदे
प्रयत्न पूर्वक बनो बंदे नेक इंसान।
तुम्हारा कद बौना, कोई बात नहीं
अपने कर्त्तव्य-पालन से बनोगे महान।
ढाल बन जाओ हर अबल के लिए
खतरे में है उन बेचारों की जान।
देश पर अगर बर्बर आक्रमण हो
सुरक्षा में बंदे हो जाओ कुर्बान।

संपर्क:
न्यू बिग्रहपुर, बिहारी पथ, पटना-1

●

सौहार्द मिसाइल

○ राम गोपाल 'राही'

मानवता की रक्षक है यह
ना प्राणों की भक्षक।
सौहार्द की श्रेष्ठ मिसाइल
संजीवन संरक्षक!
यह वो मिसाइल इसका सबसे,
भला-प्यार का नाता।
मानवता की थाती-समझो,
नर श्रेष्ठ अपनाता।।
सौहार्द की भाव-मिसाइल,
सेवा भाव जगाती।
सर्व हितैषी स्नेह की दाता
यह दुर्भाव घटाती।।
सदा लोक कल्याण करे यह
हर्षित प्राण करे।
यह मारक नर-उद्धारक है,
मानव त्राण करे।।
प्रतिकार को नष्ट करे
सौहार्द-नीर गंगा का।
कलुषित भाव रहे ना जिससे,
तट-तीर गंगा का।।
दूर सभी के दोष करे यह,
कर देती निर्दोष।
क्रोध भुला दें, अह्म मिटा दे
हर लेती आक्रोश।।
यह कोई हथियार नहीं है
ना कोई व्यापार।
स्नेह की दाता भाग्य विधाता
सुखद प्राण इकरार।।
सृष्टि रूप संवरनेवाली,
उत्पीड़न को हरती।
मानव मन की पूँजी अपनी
खर्चे कभी न घटती।।
सौहार्द पंचामृत शिव का,
सबका भाग्य जगाता।
करुणा, प्रेम, सहानुभूति
शांति, धैर्य का दाता।।
सौहार्द की हृदय मिसाइल
दिल से जो अपनाते।
क्रोध, घृणा व द्वेष शत्रु, दंभ
पाँच दोष घट जाते।।
सन्मार्ग जीवन का रस्ता
सत्य, अहिंसा दाता।
विश्वासों की धनी धरोहर
सौहार्द बन जाता।।
कर्त्तव्य दर्शानेवाली,
है सौहार्द मिसाइल।
दुविधा दर्द मिटानेवाली,
है सौहार्द मिसाइल।।
राम-कृष्ण आदर्श इसी में
भला बुद्ध उत्कर्ष
गुरूनानक, ईशा, पैगम्बर,
सबका यह निष्कर्ष।।
इसे बनानेवाला ईश्वर,
स्वयं विधाता समझो।
सच्चा मानव-जिसका इससे,
होता-नाता-समझो।।

संपर्क :-
गणेशपुरा-लाखेरी 323615
जि॰ बूँदी (राज॰)

●

वर्षा मंगल

○ नलिनी कांत

घन से सजा
गगन, भू का लौटा
नव यौवन।

श्री सुषमा से
अंकित सावन का
पर्वत वन।

बसुमती का
लगता कण कण
हो वृन्दावन।

बदल रहा
मेघों का क्षण क्षण
सजल मन।

कौंधती जब
बिजली करा देती
प्रभु स्मरण।

वज्रनाद के
अट्टहास से होता
पाप क्षरण।

झरता सौ सौ
झरना बरसता
मोती कंचन।

संपर्क : अंडाल, पं॰ बंगाल-713321

विडम्बना

○ वीणा जैन

बड़ी मुश्किल से, गुलामी को
सात समंदर पार भगाया
बड़े-बड़े बलिदानों की कीमत पर आजादी
को पाया
मेरे देश में यूँ, महान लोकतंत्र आया।

मगर, यह कैसी विडंबना है
कि, उसे लोकतंत्र को लानेवाले
कथित लोकनेता, स्वार्थ के वशीभूत हो
कर रहे कलंकित, बलिदानियों को।

सत्यानाश हो रहा है
देश का
और लोक, किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो देख रहे
किस तरह दबाई जाती है आवाजें,
ढाये जाते हैं कहर
छोटी-सी चिंगारी में भड़कती है,
अगर कहे
क्रांति की तो गोलियों से
भून दिये जाते हैं शहर।

क्यों जी रहे हैं विडंबनाओं में
क्यों खोज रहे हैं, आजाद हवा को
गुलामी की परिभाषाओं में
क्या हो गया है, हमें
कि, अजादी की आभा को
बरकरार रखने का
न जोश है, न होश है।

संपर्क : बैंगलूर

दूरदर्शन

○ चित्तरंजन भारती

॥ एक ॥

वह जो कोने में सजा है
'ईडियट बॉक्स'
दुनिया जहान की खबरें
परोस रहा है।
मगर नहीं बता पा रहा है
पड़ोस की बातें।

॥ दो ॥

घर में घुसा हुआ
'बुद्धू बक्सा'
उतना बूद्धू नहीं है,
जितना हम आप समझ रहे हैं।
वह हमें सिर्फ उपभोक्ता भर समझ रहा है।
और हमें अपने अभावों के बीच
और हीन बना रहा है

॥ तीन ॥

सब कुछ दिखा रहा है
वह सपनीला बक्सा
और मार रहा है
हमारी संवेदनाओं को
जिसे हमने अपने पुर्वजों द्वारा
विरासत में पाया है

॥ चार ॥

हम खुश थे
अपने अभावों के बीच
आज वह बता रहा है
कि हम कितने गरीब हैं

संपर्क : 246, एच.पी.सी. न्यू टाउनशिप
पो॰ पंचग्राम, असम-788802

मैं हारा नहीं हूँ

○ मधुर शास्त्री

मानता मैं जीत के सुख से
अपरिचित
चल रहा है युद्ध,
मैं हारा नहीं हूँ।

कौन कहता है निराशा प्रवगुणी है
एक शारा की किरण सत बुनी है,
लक्ष्य शारा से उसी तप लिया है,
राह जिसने भी निराशा की चुनी है,

सूर्य बन पाया नहीं दलगत व्योम में,
हारता है क्रांति,
मैं तारा नहीं हूँ।

यह प्रकृति है इस तरह जाती न हिंसा,
इन घरों में व्याघ्र शिशु को पालने से,
एक पाती ही बुझा सकता जिसे,
कब बुझी है प्राण में घी डालने से,

सिंधु बन पाया नहीं उथली धरा पर,
पा रहा तूफान
मैं धारा नहीं हूँ।

जो सरल सुविधा जुटा कर हँस रहे, वे
न जाने इतिहास का करवट बदलना,
जो बिना प्रतिभा यशस्वी बन रहे हैं,
जान जायेगी सदी यह छद्म छलना,

युक्त हो पाया नहीं हूँ बंधनों से,
पा रही है मुक्ति
मैं कारा नहीं है।

संपर्क: आर-152,
न्यू राजेन्द्र नगर,
नई दिल्ली

हार्दिक श्रद्धांजलि

'विचार दृष्टि' की शुभेच्छु और सुप्रसिद्ध गीतकार कविवर मधुर शास्त्री की धर्म पत्नी श्रीमती कृष्ण कांता का पिछले 28 दिसंबर 2005 को हृदय गति रुक जाने के कारण निधन हो गया। त्यालपुर, पंजाब के अरोड़ा परिवार में 1 अप्रैल 1937 को जन्मीं कृष्ण कांता एक सौम्य, विदूषी, ईमानदार,

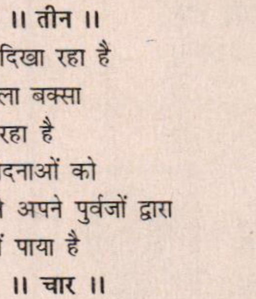

सच्ची-सुच्ची और निश्छल चेतना की एक 'संपूर्ण महिला' थी। श्रद्धेय शास्त्री जी से उनके निधन का दु:खद समाचार सुनकर 'विचार दृष्टि' परिवार के सदस्यों के दिमाग के तार झनझना गए। उनकी स्मृति को प्रणाम और 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से स्व॰ कृष्णकान्ता को श्रद्धासुमन अर्पित।

इतिहास में नया

दयानंद सिंह

नक्षत्र लो उदित हुआ आकाश में नया।
इक पृष्ठ और जुड़ गया इतिहास में नया।।

हिंसा के बंड़र ने बुझाया चिराग तो
हमने दिया जला दिया आवास में नया।।

जिसको दिलाया दुध, उसी नाग ने डसा।
बिषदंष दे गया कोई विश्वास में नया।।

बारूद से जली है एकता अखंडता।
आंतक और बढ़ गया संडास में नया।।

अब डगमगायेगी नहीं ये नाव ज्वार में।
सौभाग्य से केषट खड़ा है पास में नया।।

संपर्क: डी॰एन॰ सिंह लेन,
मीठापुर बी, एरिया, पटना-1

ग़ज़ल

'नाशाद' औरंगाबादी

मुझ पर असर सलाम का कुछ भी हुआ न था
जब तक कि मैंने आप का चिहरा पढ़ा न था।

नमनाक उनकी हो गई आँखें न जाने क्यों
मैंने तो उनसे अपना फसाना कहा न था।

खुशबू कहाँ से आ गई मेरे लिबास में
उसके बदन ने मेरे बदन को छुआ न था।

वो शख्श अपने कमरे में सोता था चैन से
जब तक कि सामने का दुरीचा खुला न था।।

'नाशाद' जिसने आग लगाई मकान में
हमसाया ही था अपना कोई दूसरा न था।

संपर्क: 296 बी, रोड नं 16,
रेलवे कॉलोनी, समस्तीपुर-848101

भजन

रघुवंश प्रसाद वर्मा

माता अंबे तू मुझ पर कृपा जो करो
मेरी नइया किनारे पर लग जाएगी
तेरी नज़रे एनायत जो मिलती रही
बिगड़ी किस्मत मेरी भी संवर जाएगी

यों तो लाखों पुत्र हैं तुम्हारा मइया
ऐ नादान मैं भी तुम्हारा मइया
चंद लब्ज़ जो दुआ की मुझे मिल गई
नश्वर जग से मुझे मुक्ति मिल जाएगी

भौतिक युग में मेरा मन अब लगता नहीं
तेरे चरणों पै मइया मेरा ध्यान है
तेरे खाते कदम मइया मिलता रहा
तेरे चरणों में मइया मेरा ध्यान है
तेरे खाते कदम मइया मिलता रहा
तेरे चरणों मे जिंदगी गुजर जाएगी

तेरे चरणों में नित्य सर झुकाता मइया
मस्त हो के शरण में भी गाता मइया
मेरे भजनों को गर मइया स्वीकारो तुम
मेरी किस्मत बुलंदी पर चढ़ जाएगी

संपर्क: 'शैल रघुवंश कुटीर' सारिस्ताबाद रोड,
शांति पथ, पटना-2

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKERBAGH, PATNA-800020

LIGHTS:

1. For members of lower & middle income group of people this society is said to be one of the largest co-operative house construction societies in Asia.
2. In the first phase 131.12 acres of land acquired by Government of Bihar were handed over to this society.
3. The society has got an opportunity to attract 1730 members from lower income group of people.
4. In all 1600 plots were bifurcated in planning out of which 10 plots were reserved for community hall, office building, godown and four-storied building for common utilities.
5. 1400 houses have so far been constructed by the members.
6. 500 members have been given housing loan through this society.
7. Boundary walls in 15 parks have already been constructed by the society.
8. In most of the sectors metalled & cemented roads have also been construcred.
9. Efforts are being made to improve the drainage system, to have plantation and lighting facilities.
10. In the second phase 7 acres of land have been purchased at Jaganpura village in which six houses have been constructed so far.
11. Out of 96 plots 95 plots have already been allotted to the members and one plot has been reserved for common utilities.
12. The society makes available its community hall to the members on priority basis for the marriage ceremony of their sons & daughters at half of the preseribed charges.
13. As far as possible the society tries to provide street light, maintain roads, clean manholes, construct park and other development activities.
14. All those members who have not filled up their nominee forms as yet are requested to deposit the forms duly filled in after getting the forms from the office of the society.

With regards to the members.

L.P.K. Rajgrihar	**Sidheshwar Prasad**	**Prof. M.P. Sinha**
Chairman	Vice Chairman	Secrectary

गीत उत्तरार्द्ध : उत्कट जिजीविषा के विमोहक गीत

विनय कुमार चौधरी

अपराजय रचनात्मक ऊर्जा सम्पन्न साहित्यकार श्याम सुंदर घोष ने पाँच दशकों की अपनी रचना यात्रा में तीन दर्जन से भी अधिक ग्रंथों की रचना की है। दैहिक रूग्नता के बावजूद वे आज भी रचनारत हैं, फलतः रचना-संग्रहों का प्रकाशन अद्यतन जारी है। उनकी रचना श्रृंखला की नवीनतम कड़ी है 'गीत उत्तरार्द्ध'।

श्याम सुंदर घोष की प्रतिमा बहुमुखी है, फलत: उनका संसार भी विविध आयामी है। इस रचना संसार में आलोचना है, उपन्यास है, कहानी है, बाल साहित्य है, संस्मरण है, संपादन है हास्य-व्यंग्य है, समाज विज्ञान है और सर्वोपरि गीत व कविता है। श्री घोष के विभिन्न साहित्यिक व्यक्तित्वों में मूलत: वे कवि हैं और गीतकार या नवगीतकार के रूप में ही उन्हें सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त है।

दर्जनाधिक काव्य-कृतियों के उपरांत सद्य: प्रकाशित 'गीत उत्तरार्द्ध की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि विगत शती के लिए एवं कवि जीवन के उत्तरार्द्ध की रचनाओं को इसमें संकलित किया गया है। अपनी उम्र के सत्तर वर्ष पार कर चुके कवि घोष दशकाधिक वर्षो से रुग्न काय हैं। 'आखिर एक अकेलापन ही' की परिस्थिति से घिरा हुआ अहसास-

'गूँगे हो जाते हैं सपने, लंगड़ी हो जाती इच्छाएँ,

क्रूर यंत्रनाएँ रहती हैं, आगे-पीछे, दाँएँ-बाँएँ।'

बावजूद-इसके, कवि अपने समय और समाज से-या कहा जाय तो जीवन से लिपट-लिपट कर पूरी आस्था के साथ जी रहा है। अपने वैयक्तिक पीड़ा को दरकिनार करके कवि अपने आत्मा के दलित द्राक्षा की तरह निचोड़कर उसे ममता का जीवन प्रदायी आँचल बना डालना चाहता है-'' घायल शिशुओं के तन ढापूँ बन ममता का आँचल में''।

एक कवि ने लिखा है-

''जीवन और जवानी वह है लहरों के प्रतिकूल चले जो

मैं तो दीपक उसे कहूँगा हवाओं के बीच जले जो।''

घोष द्वारा रचित 'गीत उत्तरार्द्ध' इन पंक्तियों को अक्षरश: प्रमाणित करता है। इस संग्रह में न तो विगत शती के उत्तरार्द्ध की त्रासद परिस्थितियों की छाया है और न ही गत जीवन के उत्तरार्द्ध की स्वाभाविक आर्त्त पुकार की ध्वनि। यह संग्रह नई शती की देहली पर आशापूर्ण संघर्ष की अकंप दीप शिखा है। प्रतिकूल परिस्थितियों की झंझाओं के बीच निर्मम जलते दीपक की तरह अपने पाठकों को यह जिजीविषा की रोशनी देता है। वर्तमान साहित्यिक परिवेश में जब कि काव्य में भी यथार्थगत कुत्सा परोसने की प्रवृत्ति काफी बढ़ गई है, कवि एक निष्ठ साधक की तरह अपने साहित्यिक उद्देश्य के प्रति सजग है। अपने प्रथम ही गीत 'गीतों में सब कुछ संभव है' में कवि कहता है-

''ये हैं भावों के चित्रकूट, ये निष्ठा के कावा काशी,

ये अपनी शिल्प-साधना से देते हैं जीवन में उठान।''

साहित्य को समाज का दर्पण भर मानना कवि का उद्देश्य नहीं है तभी तो गीत उत्तरार्द्ध' में मानव जीवन को प्रेरणा, संदेश और जीवन दृष्टि प्रदान करनेवाली अनगिन काव्य पंक्तियाँ मोती के मनके की तरह यथास्थान जड़े हुए दृष्टिगोचर होते हैं। ये पंक्तियाँ वैचारिक एवं व्यावहारिक धरातल पर उठान भरने में सक्षम हैं। इस संग्रह में निराशा और अवसाद' के संदर्भ कम हैं, 'आशा और उत्साह' के प्रसंग अधिक। उत्कृष्ट जिजीविषा और संघर्ष भावना से लवरेज यह काव्य नई शती के टूटते-छीजते जीवन के लिए उत्साह की शक्ति और प्रेरणा का प्रदान करेगा। अत: वर्तमान समय में ऐसे संग्रह का प्रकाशन प्रारंभिक ही नहीं, महत्वपूर्ण भी है।

'गीत उत्तरार्द्ध' की रचनाएँ विलक्षण व्यंजकता से पूरित हैं। गीतों की सामान्य प्रकृति है कि वह संक्षित भाव लहरियों को ही अभिव्यक्त करता है, लेकिन गीतकार घोष की गीत रचना अनेक भावानुभूतियों का सुखद संयोग है। एकार्थता के बदले अनेकार्थता उसकी विशेषता है। कवि का ''मै' शीर्षक गीत की पंक्तियाँ देखे-

''मार-काट के, दाव-पेंच के, कितने ही ओछे आयोजन

शोषण के वर्चस्व स्वार्थ के, कितने खुले खेल, गति गोपन

बड़े-बड़े सिद्धांत, तर्क संवाद, पैतरे, शब्दजाल, छल

सभ्य-सुसंस्कृत कितने लगते, कितने मोहक, कितने निर्मल

सब के अपने हथकंडे हैं, सबकी अपनी साधन-प्रविधि

इन पंक्तियों में सामाजिक संदर्भ में उच्चवर्ग और विश्व के परिप्रेक्ष्य में विकसित राष्ट्र के चरित्र का दोहरा अर्थ उद्घाटित होता है। इराक युद्ध तक को इसमें समेट कर देखा जा सकता है। ऐसे अर्थवान गीत से कवि के उन्नत वैचारिक धरातल का भी प्रमाण मिलता है। गीतों द्वारा तो आत्मानुभूति की अभिव्यंजना होती है लेकिन कवि घोष के दृष्टि-फलक की व्यापकता ही उनसे ऐसे गीतों की रचना करा लेती है। ऐसे उदाहरण से यह भी सिद्ध हो जाता है कि कवि द्वारा अपने गीतों को 'भावों का चित्रकूट' और 'कावा-काशी' कहना दर्पोक्ति नहीं स्वभावोक्ति है। तुलसी दास ने अपने जीवन के अनुभव गरल को चित्रकूट में विसर्जित करके मानस अमृत की अभिव्यक्ति की थी और कावा काशी कहकर कबीर ने भी हिन्दू मुस्लिम एक्य का विधायक होना प्रमाणित

किया था। कवि घोष के भी गीतों में वैयक्तिक पीड़ा का लेश न होकर विश्वमंगल की चिंता घनीभूत है, सांप्रदायिक सद्भाव की कामना उदग्र है।

कवि घोष के गीतों में न तो जीवन से पलायन का संकेत है और न ही कल्पना की अतिरंजना से पूरित शब्दाडंबरपूर्ण आकाश उनकी हर उड़ान में यथार्थ की धरती है। अपने लघु अस्तित्व के धूलि-कण को ही उड़ा कर कवि आकाश का जलदायी बादल बना देना चाहता है। कवि यथार्थ जीवन के अनुभव सत्य को भुल नहीं जाता, तभी तो उनका निष्कारण ही जैसे बोल उठता है –'समय हुआ है इतना मिष्ठुर, नहीं किसी का दुख बाँटे।'

जागतिक पीड़ा एंव समय के संघात ने कवि के हृदय नवनीत को इतना कठोर बना दिया है कि वह आम आदमी की तरह रोने के बजाय 'जल तरंग सा' बजकर दूसरों के दुख पर चंदन-लेप बन जाता है –मैं कभी नहीं रोऊँ-झींकू मैं जल तरंग सा बजूँ सदा''

समाज सागर के उगले हुए विष को पान करके कवि नीलकंठ ही नहीं बनना चाहता अमरता का अमृत बाटँनेवाला औघढ़ दानी बन जाना चाहता है–

''मुझको कुछ ऐसा लगे कि मैं हूँ औघड़दानी नीलकंठ''

कवि के हृदय में नीलकंठ होने का अहसास किसी कल्पना के आकाश से नहीं उतरता, यह तो विशुद्ध जमीनी परिवेश की उपज है। उनकी भावनाओं के तुर्कमान पर अवसरवादी समाज ने ही बुलडोजर लाया है, यहाँ तक कि अपनों ने भी अपेक्षा के प्रतिकूल आचरण करके 'शठ-शूल' चुभाने का ही काम किया–''जहाँ आस की पंखुड़िया की मिले मुझे शठ-शूल नुकीले।''

स्वजनों तक ने भावनाओं का मर्दन और आर्थिक शोषण किया है अत: कवि का जीवनानुभव गीत रचना में भी चीत्कार उठा है–''नहीं सत्वकीचिंता की कुछ फिर भी सब ने जमकर नोचा'' शब्द साधक अपने दैनन्दिन के जीवन में सामान्यत: व्यवहार कुशल नहीं होता भावलोक में जीनेवाला प्राणी व्यवहार लोक के छल छद्म को क्या जाने । समाज और स्वजन उसके ज़ीवन रस को नीबू की तरह निचोड़ लेना चाहता है। सच्चा कवि लेनदेन का हिसाबी नहीं हो सकता। उसकी इस सरलता का दुरुपोग अपने हित में सकपयोग यह समाज के हित कर लेना चाहता है। उसके अस्तित्त्व को संपूर्णत: निचोड़ लेना चाहता है, कवि घोष की गीत रचना हूँ नही हिसाबी' में वैयक्तिक सादगी और अघोषित सामाजिक संर्घष की आत्मपीड़ा को व्यंजना मिली है। सहयोग के विपरीत विरोध का मुकाबला करते हुए ही उनका अस्तित्त्व खड़ा हुआ है, टिका हुआ है–''जो जिंदा हूँ मैं थोड़ा भी तो बस अपने बल पर ही हूँ।

अपने अस्तित्त्व के प्रति आत्मविश्वास का ऐसा अक्खड़ अन्यत्र दुर्लभ है। यौवन तो जीवन का स्वर्णिम काल माना जाता है। बुढ़ापे के बिस्तर पर पड़कर जाग उसी की याद ऊष्मा से ताजगी ग्रहण करते हैं । फिर अधूरे अरमानों की कसक में डूबते-उतराते रहते हैं। कोई विरला ही होगा जो बेमतलब जैसी चीज समझते हों। घोष जैसा अपवाद कवि भला हुआ जो' गीत में कहता है–''अहंकार का गढ़ था यौवन, भला हुआ जो बीत गया।

धारा के विपरीत चलनेवाली कवि प्रकृति का यह एक सुंदर उदाहरण है। अब मन नहीं होता' होता गीत में भी वैसी ही प्रकृति की झांकी मिलती है। जहाँ आदमी पैदा लेता, पलता बढ़ता है, वह गाँव सबको ही प्यारा होता है–स्वर्गादपि गरी सी। एक शायर ने तो यहाँ तक कहा कि–

''करेंगे हम तो अपने गाँव में ही खुदकसी प्यारे,

तुम्हारे शहर में तो बहुत ही मंहगा कफन होगा।''

लेकिन कवि घोष कहते हैं–''लौटकर फिर गाँव जाने का कभी अब मन नहीं होता''

कवि का यह निष्कर्ष अकारण नहीं ठोस तिक्त अनुभव पर आधारित है। बार-बार अपना प्यारा गाँव जाकर कवि ने देख लिया है कि-''तंगदिल और संगदिल अब हो गये सब लोग'' पहले वाला गाँव अब वास्तव में कितना बदल गया है? विरूप हो गया है :-

दग्ध है विष से भरा आकाश निशिदिन
जिंदगी अब दर्द की घड़ियाँ रही गिन
हर तरफ हैं सर्प, विष के कनक घट हैं
देखता यह आ रहा हूँ आदमी अब
सुख प्रदायक चंद्रमा चंदन नहीं होता।''

कवि अपने परिवेशगत अंधेरे को चुपचाप सहते रहना नहीं चाहता। एक प्रतिनिधि सामाजिक इकाई होने को नाते वह उसका निवारण करना चाहता है, अँधियारे में जुगनु' बनकर ही सही वह अपने दायित्व के प्रति सजग सचेतर है। कवि शिवमंगल सिंह सुमन ने कहा है-''रात काली इसलिये, दिन में गुराई है।'' कवि की काली करतूतों ने सब कुछ काला कर डाला है

मूठों के सिर पर पगड़ी है, वह ओढ़े हुए दुशाला है।''

ऊपर की दूसरी पंक्ति में कवि ने, शीर्ष कारण के रूप में समाज के रहनुमाओं उन नेताओं को चिन्हित किया है, जिसको प्रति चकाचक बनारसी कहते हैं-''मेरा चौथा नालायक बेटा-देश का कर्णधार को रहा है।''

घोष की गीत रचना स्वान्त: सुखाय' के विपरीत विचार संप्रेषण और सामाजिक परिवर्त्तन का हथियार है। भारतीय लोकतंत्र में वर्गविषमता एंव अवसर की असमानता का बढ़ता अर्न्तविरोध कवि के लिए अनलरवा नहीं हैं। उन्हें साफ-साफ दिख रहा है कि-

इंसानियत की खाल पर चिपके हुए कुछ जोंक हैं

कुछ की मिली है छूट खासी और कुछ पर रोक है।

शोषक और शोषित को कवि ने यहाँ जोंक और जानवर के रूप में देखा है। निराला के' तोड़ती पत्थर' की मजदूरनी, जो मार खा रोई नहीं' से भिन्न कवि घोष सर्वे द्वारा को मिलकर बारूद बनने और प्रतिनिधि कवि को प्रहारक शब्द लिखने का दायित्व कराते हैं-

''ऐसे लिखो सब शब्द मिलकर एक मुष्टिप्रहार हो

सबमें छिपी बारूद को जोड़े हुए एकतार हो''

कवि घोष की यह विध्वंसक प्रवृत्ति रचनात्मक सोच से प्रेरित है। 'गीत प्रश्न' में कवि ने बेहतर समाज का चित्र इन शब्दों में खींचा है-

''हमने चाहा था यह दुनिया कुछ और भली हो भोली हो, अल्पना सभी आँगन में हो, दरवाजे सजी रंगोली हो''

कवि कर्म के प्रति निरत घोष की भावना रचनात्मक और सकारात्मक-स्थायीभाव की तरह। तभी तो - 'जो पंथ दिखाते हैं सपने वे दूर दूर तक जाते हैं।

कवि अपने जीवन को कर्म प्रधान मानता है और जानता है कि काल की कठोर ठोकर से सब कुछ 'नष्ट हो जायेगा। 'लापता का पता' अगर कुछ शेष बचेगा तो उसका सुकर्म ही, कवि के पैने शब्द, सुनहरे अक्षर' ही समय-रेत पर अक्षर रहेंगे। इसीलिए तो वे किसी कोइ लिया' कीतरह परिवेश दंश से अप्रभावित-'बोले मिसरी बोल कोइलिया' सा लोकप्रिय प्रयासों में रत रहना चाहते हैं, सोन की तरह कुछ-कुछ' गाते रहने में अपनी सार्थकता देखते हैं।

कवि हृदय की सहज सात्विक वृत्ति अनेक बार कबीर-मुद्रा धारण कर लेती है। तब भौतिक आकर्षण बंधन को छिन्न-भिन्न करने के लिए आत्मा मुखर हो उठती है-

''अपनी ही लुकाठ से अपने हाथों अपना घर जारूँगा''

और 'मन-मानस' इस मृण्मय शरीर को 'मिट्टी की ढेरी समझने लगता है-

'तन का क्या करना है प्यारे/तन तो बस मिट्टी की ढेरी'

बोध के इस धरातल पर 'सच और झूठ' का पार्थक्य रेखांकित होने लगता है। कवि को यह भी पता है कि चोर लगा गठरी के पीछे, जिसके कारण जीवनान्त सुनिश्चित है। समय बनाम शव में तो कवि अपनी ही मृत्यु का तटस्थ साक्षात्कारं करता है- 'मेरी लाश पड़ी चौराहे पर कोई भी ध्यान न देता।' और अतीत को भी पारदर्शी शीशे की तरह साफ-साफ देखता और 'संकल्प-गीत' में व्यक्त करता है- 'बहुत गलतियाँ की हैं मैंने, होता अब कितना पछतावा' आत्म मंथन से उपजा पश्चाताप ही कवित को लोक कल्याण की ओर प्रेरित कर रहा है-

'रोशनी-दीपक बनूँ रौशन डगर जल-जल करूँ'

उद्धात्त भावों का यह ज्ञान प्रकाश कवि में इसी कारण से उत्पन्न होता है कि जनक के विदेह-भाव की भूमि पर जीना सीख गया है। जहाँ-काल हथौड़ा लेकर अता सब कुछ चूर-चूर करता है।

और वह जानता है कि- 'चिता पर साथ देती है/नहीं धन-धाम की लकड़ी।'

कवि कबीर का 'रहना नहीं देस विराना है' जीवन-दर्शन की परंपरा में खड़ा है। तभी तो उसका अनुभव निष्कर्ष बोलता है-

'इस जिंदगी में कौन किसके साथ है, कोई नहीं।'

और महान संतों-भक्तों की परम्परा में होने के आत्मगौरव के कारण ही उसकी वाणी में कबीर जैसी ठसक है-

'मेरा क्या बिगाड़ लोगे तुम मुझमें है रैदास कबीरा'

कवि को समझौता परस्त होना कतई मंजूर नहीं है। वह अपने आदर्शों और जीवन मूल्यों को किसी भी सूरत में छोड़ने को तैयार नहीं, चाहे यह बेईमान जमाना उसकी जो दुर्गत करे। और बेईमान जमाने को संबोधित करते हुए कवि कहता है-

'तड़प-तड़प कर मर मिट जाना, मुरझाना मंजूर मुझे है

पर न झुकूँगा तेरे आगे ओ बेईमान जमाने।'

सिद्धांतवादी संतों की तरह ही कवि 'टूट जाना पसंद करेगा पर झुकना नहीं। वह अपने जीवन और आत्मा को जागतिक कल्पना से सर्वथा मुक्त रखना चाहता है। इस पापाचारी धूर्त जमाने से उसे इतनी नफरत है कि 'खबरदार' गीत में दो टूक कहता है-

'खबरदार मेरे शव को कंधा देने की बात न सोचे'

जागतिक अनुभव की कटुता से कवि इतना दग्ध हुआ है कि समकालीन आतंकवादी-कारनामों से डरते आम आदमी की तरह एक अतिरिक्त चौकसी है उसमें जैसे दूध से जला मट्ठा फूँक-फूँक कर पीता है उसी तरह दूसरों के साथ घटित हादसों की खबर ने कवि की चेतना को संशयग्रस्त कर दिया है। एक शेर में वे लिखते हैं-

'हँसते हुए वे पेश जो करते हैं डालियाँ

क्या क्या छुपा सौगात में धड़का करे है दिल'

'गीत उत्तरार्द्ध' के गीत मानव-मूल्यों के प्रतिष्ठापक एवं संघर्ष की संजीवनी-शक्ति प्रदाता हैं। जीवन में इच्छा-शक्ति को सर्वोपरि मानते हुए कवि कहते हैं-

'आदमी अगर बेलौस अगर हो तो कुछ भी कर सकता है।'

दुःख-कातर मनुष्य को दिलासा देते हुए कवि धैर्य को मूलमंत्र बताते हैं-

'थोड़ा-सा भी धीरज हो तो दुःख छूमंतर हो जायेगा'

जीवन एक संघर्ष है और यह संघर्ष क्षमता आमजनों में अधिक होती है। आमजन जीवट का संघर्षशील होता है, यहाँ तक कि सुख की शीतल छाया भी उसे भरमा नहीं पाती

एक गीत की पंक्तियाँ हैं-

'कड़ी धूप में चलनेवाले राहत नहीं छाँव में पाते

वह संघर्षों का नगमा ही याद करे जीते-सुस्ताते।'

जीवन फूलों की शैय्या नहीं है। प्रकारांतर से कहें तो जलने-झुलसने के लिए पैदा हुए हैं लोग इस स्वाभाविक सत्य को भी एक गज़ल के शेर के साँचे में ढाला है कवि ने-

'जलने के लिए ही यहाँ पैदा हुए हैं लोग,

जलने से बचा फिर कोई क्यों दिल जल रहे।'

कविता अहम का विसर्जन भी है आत्मदान की आकुलता का परिणाम भी। कवि घोष ने इसे इन शब्दों में स्वीकार किया है-

'मेरे 'मैं' ने मेरी रचनाओं में विविध रूप हैं धरे,

मुझको पढ़नेवाला मेरे पीछे यह दिलथाम कहेगा।'

इन पंक्तियों में इस सत्य का भी सहज उद्घाटन न हो गया है कि कवि-जीवन का

रूपांतरण है कविता, जो स्मृति शेष के रूप में बच जाती है। साथ ही इसमें अपनी गीत-कविता के स्थायित्व एवं महत्व का कवि-विश्वास भी झांकता है। मानव-कर्म की तरह-कवि कर्म भी सुविचारित होने पर, कभी व्यर्थ नहीं होता-

'जो कुछ भी हम करते-धरते कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता

भावी-पीढ़ी का ही सबसे जुड़ जाता है रिश्ता-नाता'

सचमुच गीत और कविता भावी पीढ़ी के लिए 'दीपशिखा' के रूप में होते हैं, अगर वह अनर्थक शब्द जाल न हो। इसीलिए तो अज्ञेय कहते हैं - अर्थ दो/ अर्थ दो/मत शब्द रूपाकार इतने व्यर्थ दो। प्रगतिशील चेतना के कवियों द्वारा 'छंद के बंध' तोड़ने की जो पहलकदमी हुई और जिस ऐतिहासिक विकास 'गद्य गीत' आदि रूपों में हुआ, कवि घोष उस विकास-धारा के भी प्रतिकूल अपनी प्रवृत्ति रखते हैं। छंदमयता और गेयता की पक्षधरता में उनके ठोस तर्क भी हैं- 'गद्य नहीं गाया जाता है, इसीलिए कुछ गीत लिखे हैं।

गद्य किताबों में रहता है, उसे बहुत कम पढ़नेवाले,

इसके विपरीत है गीतिकाव्य, क्योंकि- 'गीत कंठ में बस जाता है।'

'गीत उत्तरार्द्ध' कवि घोष के जीवन के कट-मधु अनुभवों और वैविध्यपूर्ण अनुभूति चित्रों का मनोरम अलबम है। इस अलबम में प्राकृतिक सुरम्य चित्रों की विस्मय विमोहक झांकियाँ भी हैं। प्रकृति-चित्रण के दसाधिक रूपों में उद्दीपन, मानवीकरण, परमतत्त्व आदि प्रमुख हैं। कवि घोष के गीतों में चित्रित प्रकृति परंपरा से कुछ हटकर उत्प्रेरण रूप में उपस्थित है। यथा समुद्र को संबोधित एक गीत की पंक्ति- 'ओ समुद्र ओ पर्वत निर्भर मुझको अपना बल वैभव दे।'

ऐसे अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। शहरी सभ्यता का अभ्यस्त मानव प्रकृति अनुराग से अब भी पूर्णत: विमुख नहीं हुआ है। उसके यांत्रिक हृदय में प्रकृति प्रेम अब भी जिंदा है। कवि घोष के शब्दों में- 'जहाँ जहाँ निर्झर पहाड़ वन वहाँ वहाँ मेरा मन रमात।'

व्यस्तता-संकुल जीवन में अब भी प्रकृति किसी न किसी रूप में झांक जाती है-

'हो एकांत शांत विस्तृत तर फैला बुनता हो सन्नाटा,

हवा हथौड़े मार रही हो खारापन ज्यों चुभता कांटा।'

कवि के आत्म का सर्वात्म विलयन को रेखांकित करती पंक्ति-

'मैं सबमें फैला बिखरा हूँ सब हैं मुझमें निहित समाहित'

कवि की दर्जनाधिक कविताएँ रहस्यवादी तेवर की है जिनमें 'ओ जीवन धन ओ निर्मोही', 'ओ गरबोले, 'अंतीन्द्रीय सुख' आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

'गीत उत्तरार्द्ध' में कमजोर घोषित करने योग्य गीतों की संख्या तलाशना टेढ़ी खीर है। श्रेष्ठ भावों को श्रेष्ठतम शब्दों में प्रस्तुति का ही दूसरा नाम है गीत उत्तरार्द्ध। इसमें व्यक्त मुहावरों का भी भावोत्कर्षपूर्ण प्रयोग हुआ है। दो-एक उदाहरण-

'भला करेगा राम तुम्हारा चढ़ जाओ शूली पर बेटे' या

'मैं अपने ढंग का बैगन था मेरा अपना ही डगरा था'

ढेर सारे आँचलिक एवं अप्रयुक्त शब्दों को काव्य जगत में सराहनीय स्थान प्रदान किया गया है।

अवस्था के जिस मोड़ पर ओजस्वी कवि महाप्राण निराला ने 'देखता हूँ आ रही मेरे क्षितिज की सांध्य बेला' का दैन्य भाव प्रकट किया, युगधर्म का हुँकार' भरनेवाले राष्ट्र कवि दिनकर ने 'हारे को हरिनाम' का माला जाप किया, उम्र के उसी मोड़ पर उनसे बहुत प्रतिकूल अवस्था एवं रूग्न-दशा में कवि घोष, जिस उत्कट जिजीविषा और आशापूर्ण संघर्ष का जयगान कर रहे हैं, वह विस्मयजनक ही नहीं, हिंदी साहित्य और विश्व साहित्य में भी अन्यत्र दुर्लभ है। सराहनीय यह भी है कि कवि की रचना-यात्रा आदिराम है। मैं श्रद्धानत हूँ और यशस्वी होने की कामना करता हूँ।

संपर्क: हिंदी विभाग,
पार्वती साइंस कॉलेज मधेपुरा, बिहार

कविता और दर्शन में सूफी परंपरा पर अंतरराष्ट्रीय सेमिनार

विचार कार्यालय, दिल्ली। 'कविता और दर्शन में सूफी परंपरा पर 'अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स एंड लिटरेचर' की ओर से 18 से 20 मार्च तक नई दिल्ली के इंडिया इंटरनेशनल सेंटर सभागार में आयोजित अंतरराष्ट्रीय सेमिनार का शुभारंभ करते हुए पूर्व प्रधान मंत्री वी०पी० सिंह ने कहा कि

सूफी मानवता का गीत है और यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए है।

इस अवसर पर 15 सार्क देशों से आए लगभग 70 लेखकों, शोधार्थियों और बुद्धिजीवियों सहित अजीत कौर, आबिद हुसैन, ख्वाजा हसन सानी निजामी, डॉ० मीनाक्षी खन्ना, डॉ० सैय्यदा हमीद, ललितमान सिंह तथा प्रो० अख्तरूल वासे ने अपने विचार व्यक्त करते हुए प्राय: सभी ने कहा कि सूफी परंपरा को बढ़ानेवाले हर धर्म में रहे हैं और रहेंगे। सूफी परंपरा का कोई मजहब नहीं है और इस परंपरा के दार्शनिक बोध से हर धर्म के लोग प्रभावित होते हैं।

कार्यक्रम में भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के पूर्व अध्यक्ष डॉ० कर्ण सिंह ने सूफी परंपरा को हर धर्म के लिए उपयोगी बताया।

– दीपक कुमार, दिल्ली से

प्रोफेसर किंकर्तव्यविमूढ़

राधाकान्त भारती

जिस प्रकार स्कूल को हेडमास्टर, पत्रकार को संपादक, कांस्टेबुल को कोतवाल, जज को जस्टिस, पंच को सरपंच तथा एम.पी. को मिनिस्टर बनने की तमन्ना रहती है, उसी प्रकार कहने को प्रोफेसर पर काम की लेक्चरर हुए पंडित अर्जुन चौबे की अपने कस्बे के डिग्री कालेज में प्रिंसिपल बनने की लालसा सदैव मन को कचौटनी रहती थी। चौबे जी पटना विश्वविद्यालय से प्रथम श्री की स्नातकोत्तर उपाधि लेकर वहीं अध्यापन कार्य में लगे थे। कॉलेज में पदोन्नति लिए और फिर प्रिंसिपल बनने वास्ते अनुभव तथा डक्टरेट की जरुरत होती है। अतएव वहीं अपने वरिष्ट प्रोफेसर की सहायता से वे 'साहित्य में आदर्शवाद' पर शोध कार्य भी करते जा रहे थे।

संस्कृत पंडित के परिवार में पले चौबे जी अपने माता पिता के एक मात्र थे। उनकी पांच बहनों की शादी ही थी और घर में अब वृद्ध माता पिता के सात वे चालीस चालीस की उम्र पर पहुँच करके भी बाल ब्रह्मचारी बने हुए थी। कई लोगों द्वारा अनेक बार समझाये जाने पर भी विवाह की बात को टाल जाते और कहते कि अब पी.एच.डी. होने के बाद ही इस पर गौर करूंगा। उनका यह मनोवैज्ञानिक सिद्धांत या कि अनुसंधान कार्य तथा पत्नी–भक्ति दोनों कार्य एक साथ इस जगत में संभव नहीं है। वृद्ध माता–पिता भी अपने कमाउ पूत की इस जिद्द से परेशान थे, पर किसी प्रकार का दबाव डालने में अपने को असमर्थ पाते और यह सोच कर संतोष कर लेते कि उनका आचार्य पुत्र जल्द ही प्राचार्य बन कर परिवार का नाम रोशन करेगा। गंगा किनारे बसा यह पटना आदिकाल से ही महापुरुषों का नगर रहा है, अब भी राजधानी नगर के रुप में इसने अपनी परंपरा को बरकरार रखा है। जहाँ नरपुंगव के रुप में अनेक कलाकार, पत्रकार, साहित्यकार और अदाकार पैदा होते रहते हैं। ऐसे साहित्यकारों की मंडली में सदैव और सर्वत्र अध्यापकगण बहुमत की भूमिका का निर्वाह कर गौरवांवित होते हैं। इस शहर की साहित्यक वातावरण की स्थति भी इसी प्रकार की रहती आयी है, साथ ही लोगों में यह सोच भी मजबूत बनी है कि भाषा और साहित्य पढ़ाने वाला तो लेखक और कवि अवश्य होगा। यह शस्वत

अर्जुन चौबे पर भी लागू होता था। जहाँ भी साहित्य सम्मेलन हो या गोष्टी बुलायी जाये, इनकी उपस्थिति को लोग आवश्यक मानते थे और यदि संयोगवश खाने–पीने की व्यवस्था होती इनकी उपस्थति आवश्यक नहीं बल्कि अनिवार्य मान ली जाजी थी। लेकिन गोष्ठयों के लिए अमंत्रित करने में जी अपवाद बने रहते थे। सम्मेलन भवन या रेडियो स्टेशन के आलवा लेखक और पत्रकार अपने निवास पर भी बैटक बुला कर स्नेह–भाव से जलपान आदि का प्रबंध किया करते थे। ऐसी गोष्ठियों में शमिल होकर चौबे जी सस्वर कविता पाठ करने के बाद प्रीति भोज में मिष्टानों से भरपूर प्रीति का परिचय देते थे। लेकिन मौका होने पर भी अपने निवास पर बैठक आयोजित करने से कतराया करते थे। जहाँ तक इनके निवास स्थान की बात है, महेन्द्रू महल्ला में गंगा किनारे मंदिर के साथ वाले आम के बगीचे में इनका दोमंजिला मकान बहुत उत्तम स्थान समझा जाता था।

साहित्यकारों के समुदाय में थी कुछ असाहित्यकार रहते हैं, जो साहित्यकार नहीं होकर अपने को साहित्यकार रहते हैं, जो साहित्यकार नहीं होकर अपने को साहित्यानुराशी मानते हैं। पटना के साहित्यिक समुदाय में ऐसे साहित्यिक सभासदों की कमी नही है। ऐसे व्यक्ति सदैव संपन्न तथा विनोदप्रिय हुआ करते हैं। कतिपय साहित्यसेवियों से चौबे जी की चालबाजी परजीवी प्रवृत्ति छिपी नही रही। तभी शंकर दयाल सिंह, सुरेन्द्र उपाघ्याय तथा योगेश जी ने एक व्यूह रचना डाली।

जून का महीना, कालेजों में गर्मा की छुट्टी थी, पर परीक्षाओं के चलते रहने से कई प्राघ्यापक शहर में मौजूद थे। चौबे जी ने पटना में रहकर कापियाँ जांचने तथा अपने पीएच.डी. शोध कार्य पूरा करने का प्रोग्राम बना रखा था। बहुत समय से टलते आ रहे, तीर्थाटन की बात को भी महत्व देकर उन्होंने अपने माता–पिता को बदरीनाथ धाम की यात्रा पर भेज दिया और घर पर भोजन आदि का प्रबंध करने के लिए गाँव के एक लड़के छोटन को ठहरा रखा था।

यह स्थिति तत्कालीन साहित्यिक साहित्यिक समूह को चल गई तो भाई लोगों ने एकमत से एकतरफा फैसला कर लिया कि इस बार की बैठक चौबे जी के निवास पर आयोजित होगी। लोकिन इस अप्रत्याशित सूचना को पाते ही चैबे जी बिदक गए और एक पर एक अनेक बहानेबाजी प्रस्तुत करते रहे। उधर लोग उनकी कोई भी बान सुनने को तैयार नही थे। अंततोगत्वा चौबे जी ने ब्रहमास्त्र छोड़ा और कहा कि अगले रविवार को उन्हें खेतीबारी के प्रबंध वास्ते चार–पांच दिनों

लिए गाँव जाना है। साहित्यिक मंडली उनकी इस बान को सुन चुप हो गई और चौबे जी ने समझा कि उनकी बान बन गई।

एक सप्ताह से अधिक समय बीत गया। चौबे गाँव से वपस लैट चुके थे। उनका दैनिक कार्यक्रम बदस्तूर चालू था, पुजा–पाठ के बाद भोजन फिस परीक्षा की कापियों को जांचना और शाम को गंगा स्नान के बाद भांग या टंडई पीना। रविवार दिन या, शाम को वे गंगा–स्नान कर लैटे थे कि अचानक उन्हें फाटक के पास शहनाई बजने की आवाज सुनाई पड़ि। थोड़ी देर के बाद शहनाई के साथ डुगडुगी भी बजने लगी। पहले उन्होंनें अपने सेवक छोटन को पुकारा, पर उस सूर्य वहाँ कही गायब हो चुका था। उधर शहनाई की अवाज आवाज डुगडुगी के साथ मिलकर और तेज होने लगी थी। आखिरकार धोती–कुर्ता पहन कर स्वयं चौबे जी फाटक पर पहुँच गए तो देखा कि एक बुजुर्ग शहनाई वाला अपने साथ डुगडुगी बजानेवाले शागिर्दो के साथ बैठा मस्त होकर बैजू बाबरा के गाने की धुन निकाले जा रहा है, 'जू गंगा की मौज मैं धारा......।'' चौबे जी को सामने देखकर शहनाई बजानेवाले मियाँ जुम्मन ने बड़े अदब सलाम ठोका और बोला मुबारक हो सरकार, आपके यहाँ शहर बनारस से तिलक देने वाले तशरीफ ला रहे हैं.......'' मियां जी, क्या बकते हो ? तुम्हे यह किसने कहा?'' बड़े ही शांत स्वर में उत्तर मिला–काहे को खफा होते हैं,वे आल इंडिया (रेडियो नहि बोलसका) में ऊँचे ओहदे पर हैं, तीन घंटे वास्ते सौ रुपया तय हुआ और पच्चीस एडवांस दे गए हैं, हम ऐसे थोड़े ही यहाँ आ गये हैं ? यह कह कर मियाँ जी फिर शहनाई बजाने लगे। उनके शागिर्द उसी ताल सें हुगहुग पीटते हुए आपस में इशारा करके हँसते रहे। देखकर चौबे जी कुपित हो गये। तब तक आस–पास के कुछ लोग भी जिज्ञासावश वहाँ आ खड़े हुए थे। मामला गर्म होता देखकर पड़ोस के मास्टर साहब ने हुग्गी बजाने वाले लड़के से पूछा कि ''जनाब, वे रडियो वाले साहब आये थे, शादी वास्ते यहां पर तिलक आने वाला है। बयाना की रकम देने हुए वे ही बोले थे कि इस बंगला में सनकी टाइप का एक खपतुलहवास आदमी है, कुर्ता धोती पहनता है, वह बाजा बजाने को मना करेगा, पर तुम मानना नही, तुम्हारी पूरी फीस रात को दे दी जायेगी। सो यही वो आदमी है ''

इतनी बात सुन कर हुग्गीवाला पूरे जोर शोर से हुग्गी बजने लगा। अपने फाटक पर अनायास ऐसा तमाशा देखकर चौबे जी लाल–पीले हो रहे थे। किंतु उनकी परवाह किये बिना हुग्गी के साथ शहनाई पूरी लय के साथ बजायी जा रही थी। चौबे जी तैश में आकर चिल्लाने लगे और इधर शहनाई अपने दुत लय में गुँज रही थी। तभी फाटक पर कई मित्रों के साथ प्रो॰ शिवनंदन प्रसाद आ गये और एक रंगीन लिफाफा हाथ में लिए हुए चौबे जी को बधाई देने लगे कि अस्वीकार विवाह की तैयारी हो ही गई। उन्हें देखकर चौबे जी किंकर्त्तव्यविमुढ़ ही गए क्योंकि प्रो॰ प्रसाद ही उनके पी.एच.डी. के लिए गइड थे। उन्हें बड़े आदर के साथ चौबे जी अपने बंगले गरामदे तक पहुँच कर वापस लौटे। शहनाई का स्वर पूर्ववत तेजी से गूँज रहा था। चौबे जी आपे से बाहर हो, ऐसे शब्दों का उच्चारण करने लगे जो यहाँ उल्लेखनीय नहीं है। ऐसे में तमाशबीनों की कमी नही होती है, मुहल्ले के कई लोग जिसमें चौबे जी के कुछ प्रिय छात्र भी थे, वहाँ पहुँच कर बिना टिकट 'मैटिनी शो' का मजा लेने लगे। दूसरी ओर से मित्र मंडली के कई सदस्य छपे हुए निमंत्रण-पत्र तथा भेंट का सामान लेकर 'बधाई हो-बधाई हो' का सस्वर मंत्रोच्चर करते करते हुए पहुँच रहे थे। मित्रों द्वारा बधाई का उद्घोष चौबे जी का दिल को तेज बाण की तरह बींघ रहा था। पहुँचने वालों में दिलफेक किस्म के कई दोस्त थे जो अपनी दरियादिली दिखा रहे थे और इधर चौबे जी का दिल बैठा जा रहा था। मौके पर पहुँच रहे स्वनामधन्य, साहित्यकारों में केसरी के साथ बसंतकुमार, सदय जी और निर्दय, समदर्शी के बाजू में प्रियदर्शी, हरिमोहन झा के साथ ओझा, मुक्त और विमुक्त, आर्या और आर्याणी, पंडित तिवारी और तर्वे, शैलेन्द्र, अमरनाथ और अमर कुमार जैसे भांति-भांति के लाग आम के बाग से होकर बंगले तक पहुँच रहे थे। राय साहब भी आये, सहाय और सिन्हा को लेकर। इसी बीच अपनी पुरानी मोटर विलोचन शर्मा और छविनाथ पांडेय, कवि नागार्जुन के साथ बिना रोक टोक के बंगले के मुख्य द्वार तक पहुँच गए। उन्हें गाडी से उतरता देख कर फाटक पर चल रहे वाक-युद्ध को अधूरा छोड़ चौबे जी आगंतकों की ओर लपके और आचार्य नलिन जी ने स्नेहपूर्वक चौबे जी के कंधों पर हाथ राखकर बधाई देने की कोशिश की तो ''गुरुवर'' कहकर बड़े रूआसे स्वर में चौबे जी बोले - यह सब इन पाखंडियों का कारनामा है। मैं क्या कहूँ ? मै किंकर्त्तव्यविमुढ़ हो गया हूँ .... बिल्कुल किंकर्त्तव्यविमूढ़ !''

इधर यह दृश्य चल ही रहा था कि एक शानदार मोटरकार में सवार राज्य में मंत्री रहे योगेश जी पहुँच गए, उनके साथ रेडियो स्टेशन के सुरेन्द्र उपाध्याय तथा निदेशक भगवती मिश्र भी थे। पहले तो उन्होनें आचार्य नलिन जी को प्रणाम किया। फिर बड़े तपाक से स्तंभित खड़े चौबे जी को योगेश जी ने गले लगाते हुए कहा - ''अरे भाई, चौबे जी! बड़े छुपेरूस्तम निकले, अब बनारस से गाड़ी आनेवाली है, तिलक देने वाले पधारेंगे - मेरा अभिनंदन स्वीकार करो महाराज!''

विवशता की ऐसी स्थिति में चौबे जी का चेहरा देखने लायक, था, लगा कि अब वे रो पड़ेंगे। तभी आगे बढ़कर सुरेन्द्र उपाध्याय ने फूलों की लंबी माला चौबे जी के गले में डाल दी और दोनों हाथ ऊपर उठाकर नारा लगाया ''बोलो प्रोफेसर किंकर्त्तव्यविमूढ़ की जय।'', जयकार के साथ ही पूरा माहौल ठहाकों से गूँज उठा था।

संपर्क: नगिन लेक अपार्टमेंट, पीरागढ़ी, नई दिल्ली-110087

●

क्यों मनाते हैं पहली अप्रैल को मूर्ख दिवस?

डॉ० हरिकृष्ण प्रसाद गुप्त 'अग्रहरि'

'पहली अप्रैल' हर्षोल्लास के साथ पूरे विश्व में मनाया जाता है जिसे 'मूर्ख दिवस' अथवा 'अप्रैल-फूल है' भी कहा जाता है। वस्तुत: मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहते हुए वह अपने तनावों और व्यस्तताओं के बीच क्षणभर के लिए मुक्त हास्य व मनोरंजन के लिए समय निकालना चाहता है। 'मुर्ख-दिवस' के आयोजन की पृष्ठभूमि में मानव-मन की सही-सही प्रवृत्ति दिखायी पड़ती है।

उद्गम स्थल: फ्रांस

पहली अप्रैल को मूर्ख दिवस के रूप में मनाये जाने की परंपरा की शुरुआत कब और कैसे हुई इस संबंध में अलग-अलग मान्यताएँ प्रचलित हैं। अधिकांश लोग अप्रैल फूल के उद्गमस्थल के रूप में फ्रांस का नाम लेते हैं। वे एक प्राचीन धार्मिक कथा का हवाला देते हैं जिसके अनुसार पुराने युग में फ्रांस में हर वर्ष पहली अप्रैल को यहाँ के शासक द्वारा नागरिकों और पादरियों की एक विशाल सभा का आयोजन किया जाता था, जिसमें राजदरबार के नुमाईंदे भी शरीक होते थे। इस सभा में भाग लेनेवाले व्यक्ति अपनी विचित्र हरकतों व कार्यो से लोगों का मन बहलाते थे। विचित्र किस्म की वेशाभूषाएँ धारण कर जनता का मनोरंजन किया जाता था। इस समारोह में सर्वाधिक यह मूर्खतापूर्ण हरकत करनेवाले व्यक्ति को अध्यक्ष चुना जाता था और उसे 'मास्टर नॉव फूल' की उपाधि से विभूषित किया जाता था। अन्य व्यक्ति हँसी-मजाक के गीत गाते हुए लतीफे सुनाते। इस सभा की समाप्ति एक 'गधा-सम्मेलन' के रूप मे होती थी। जिसमें उपस्थित व्यक्ति गधे की मुखोटे पहनकर ढेचूँ-ढेचूँ का राग अलापते थे।

एक अन्य धारणा के अनुसार 'मुर्ख दिवस' की शुरुआत इटली में हुई। वहाँ अप्रैल की कार्निवल में आदमी और औरतें खूब शराब पीते हैं और नाचते गाते हुए ऊधम मचाते हैं। इस दिन रात में दावतों का आयोजन किया जाता है ।

यूनानी सभ्यता की देन

कुछ लोगो की मान्यताएँ हैं कि

'मूर्ख-दिवस' यूनानी सभ्यता की देन है। इस संबंध में एक लोक-कथा प्रचलित है। यूनान में एक व्यक्ति अपने आप को बड़ा तीस्मारखाँ समझता था। उसे गर्व था कि पूरे संसार में उससे अधिक बुद्धिमान और चतुर कोई नहीं है। उसके घमण्ड दूर करने और उसे नसीहत देने के लिए उसके कुछ दोस्तों मे उससे कहा कि आज मध्य रात्रि को पहाड़ की चोटी पर देवता अवतरित होंगे और उपस्थित लोगों को मनचाहा वरदान देंगे।

उस व्यक्ति ने दोस्तों की बातों पर भरोसा कर लिया और सुबह तक पहाड़ की चोटी पर देवता की प्रतीक्षा करता रहा। जब वह निराश होकर लौटा तो दोस्तों नें उसका खूब मजाक उड़ाया, तभी से यूनान में पहली अप्रैल में 'मूर्ख दिवस' के रूप में मनाने की परंपरा चल निकली, क्योंकि उस दिन अप्रैल की पहली तारीख थी।

पुराने समय में यूरोपीय देशों में पहली अप्रैल के दिन हर मालिक नौकर की भूमिका अदा करता और नौकर मालिक बनकर हुकुम चलाता। नौकर बने मालिक को उसका हर आदेश मानना पड़ता था।

सफेद गधों का स्नान

इतिहास में सन् 1860 की पहली अप्रैल बेहद मशहूर रही है। इस दिन लंदन में रहनेवाले हजारों लोगों के एक साथ डाक द्वारा एक से एक बड़ा सा लिफाफा पहुँचा और लिफाफे के अंदर सुंदर कागज पर टाइप किया हुआ संदेश निकला- ''मान्यवर'', आज शाम 'लंदन टावर' पर सफेद गधों के स्नान का कार्यक्रम देखने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं। कृपया यह कार्ड साथ लाएँ।

उस समय 'लंदन टावर' में आम जनता का प्रवेश वर्जित था। शाम होते-होते हजारों लोगों की भीड़ 'लंदन टावर' के आसपास जमा होने लगी और अंदर प्रवेश के लिए धक्का-मुक्की होने लगी। वहाँ के अध्यापक बौखला उठे। वे समझ नहीं पा रहे थे की आखिर माजरा क्या है। जैसे ही स्थिति स्पष्ट हुई कि आज पहली अप्रैल है तो सभी अप्रैल फूल के शिकार लोग सिर धुनते हुए घरों को लौट पड़े।

संपर्क: 'अग्रहरि भवन',
पोस्ट-भेलाही, पूर्व चंपारण

तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति

उदय कुमार 'राज'

इस देश में वंचित लोगों का अथवा अल्प संख्यकों का हित करने के नाम पर जो कुछ हो रहा है वही तुष्टिकरण है जिसका केंद्र बिंदु केवल मुसलमान हैं, जबकि हमारे ख्याल से तुष्टिकरण का अर्थ संप्रदाय विशेष को दी जानेवाली सुविधाओं के रूप में ही है। किंतु संविधान में जितने लोगों को अल्पसंख्यक चिन्हित किया गया है, उनमें से शायद ही किसी को अल्पसंख्यक योजनाओं का लाभ मिलता हो। आज की भारतीय राजनीति में तुष्टिकरण केवल मुसलमानों तक ही सीमित है।

इस प्रकार आज इसी तुष्टिकरण के तहत कोई राजनीतिक दल ब्राह्मणों को रिझाने के लिए रैली करता है तो कोई अनुसूचित जाति का तो कोई सवर्णों को आरक्षण देने की बात करता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि तुष्टिकरण की महामारी के प्रकोप से बचने के उपाय करने की बजाय उसका निरंतर विस्तार किया जा रहा है। जबकि यह सच है कि तुष्टिकरण से सभी को तुष्ट नहीं किया जा सकता, लेकिन सभी को न्याय देकर उन्हें संतुष्ट किया जा सकता है। हमारे राजनेता सत्ता संभालते समय सभी के साथ न्यायपूर्वक आचरण की शपथ लेते हैं। हर दल का चुनाव जीतने की प्राथमिकता एकमात्र लक्ष्य हो जाने की वजह से शुचिता का भारतीय दृष्टिकोण पूरी तरह से लिखित होता है। वैश्वीकरण के प्रभाव से भौतिक भूख की तीव्रता ने इस विडंबना को और भी व्यापक बनाने का कार्य किया है। इसलिए येन केन प्रकारेण सफलता पाने के प्रयासों ने हमारी नींव को खोखला कर दिया है। ऊपर से सामान्य दिखाई पड़नेवाली व्यवस्था का स्वरूप कब जर्जर इमारतों के समान धराशायी हो जाए अनुमान लगाना मुश्किल है। भारतीय राजनीति ने तुष्टिकरण को छल-कपट के लिए कचरे के रूप में अपना लिया है। तुष्टिकरण की इस वैशाखी को पकड़ने के लिए आतुर राजनीतिक पार्टियों के सबसे बड़ा अन्याय युवा पीढ़ी के साथ किया है।

राजनीति ने योग्यता का मापदंड सर्वथा अव्यवहारिक बना दिया है। शिक्षण संस्थाएँ भविष्य के नागरिक बनाने के स्थान या माफिया की नर्सरी बनकर रह गई है। इस माफिया को खत्म करने के लिए युवा पीढ़ी को ही आगे आना होगा, क्योंकि उसी का भविष्य दांव पर लगा है।

तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति का इधर एक और उदाहरण पिछले दिनों तब पेश हुआ जब उत्तर प्रदेश सुन्नी वक्फ बोर्ड ने विश्व धरोहर ताजमहल को अपनी संपत्ति करार दिया। ताजमहल पर सुन्नी वक्फ बोर्ड के रवैया दयनीय ही अधिक रहा। जहाँ तक कांग्रेस और समाजवादी पार्टी की प्रतिक्रियाओं का प्रश्न है उन्हें ताजमहल की सुरक्षा, संस्था और प्रतिष्ठा से कहीं अधिक परवाह अल्पसंख्यकों के वोट बैंक हैं। बजाय इसके कि सुन्नी वक्फ बोर्ड के बेढव फैसले के लिए उसे फटकार लगाई जाती अनेक दल उनके पक्ष में खड़े नजर आए। राजनीतिक दलों का यह रवैया न केवल निराश करनेवाला रहा, बल्कि इसे तुष्टिकरण की क्षुद्र राजनीति का एक ज्वलंत उदाहरण माना जाएगा। जब अंतरराष्ट्रीय ख्याति की राष्ट्रीय संपदा ताजमहल सरीखी इमारत राजनीतिक दलों का यह रवैया रहा तो फिर देश की अन्य महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक महत्त्व की इमारतों को वे कैसे बचा पाने में समर्थ होंगे। यह तो शुद्ध रूप से संकीर्ण राजनीतिक सोच का परिणाम है या फिर तुष्टिकरण की शुद्ध राजनीति। वर्तमान भारतीय राजनीति के राजनीतिक दलों में दुर्भाग्य से विवेकहीन विचारशीलता आज पूरी दबंगई के साथ मौजूद है। ये राजनीतिक दल परस्पर अपने सत्ता-स्वार्थों के लिए जो विचार प्रकट करते रहते हैं, उनसे समाज व देश में विद्वेष, वैमनस्य की खाई बढ़ती जा रही है। सत्ता-लोभ में अँधे तुच्छ मानसिकता के ऐसे राजनीतिबाज जाति, मजहब, अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक इत्यादि के आधार पर ऐसी बयानबाजी करते हैं, जिससे समाज में परस्पर विषाक्त एवं विषादजनक विवादों की बाढ़ आती जा रही है। मात्र मनाधिक्य और तज्जन्य सत्तालाभ के लिए किए जाने वाले ऐसे बयान-व्याख्यान भारत राष्ट्र की अस्मिता और मानवता के मर्म पर आघात पहुँचानेवाले होते हैं। विवेकपूर्ण विचार एवं तदनुसार व्यवहार के द्वारा ही समग्र समाज एवं देश का सच्चा उपकार किया जा सकता है। जिस देश व समाज के नेतृत्व में समग्रता का महाभाव नहीं होता, उस समाज, देश व तंत्र की शिराओं में विष-संचार होने लगता है जो समाज व देश की एकता, अखंडता, समरसता एवं प्राणशक्ति को समाप्त कर देता है। गोस्वामी तुलसीदास ने विवेक के इसी पुण्य पुरम को प्रमाणित करते हुए कहा था-

'मुखिया मुख-सौं चाहिए, खान-पान में एक,
पालै-पोसैं सकल अँग तुलसी सहित विवेक।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भारत कभी अपनी सामाजिक समरसता और पारिवारिक सदभावना के लिए सारी दुनिया में परिचित था, किंतु राजनीतिज्ञों ने जाति, धर्म और मजहब के नाम पर जहर घोलकर सामाजिक समरसता भंग कर दी। वैसे तो पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति ने हमारी पारिवारिक सदभावना पर आघात की है तथापि जो बचा भी है राजनीतिक तहस-नहस करने पर आमादा हैं। दरअसल जिस प्रकार पुरानी पीढ़ी के नेता अपने मूल्यों और आदर्शों के प्रति समर्पित थे, कर्त्तव्य एवं कर्मनिष्ठ होते थे उनका आज सर्वथा अभाव दिखता है, क्योंकि आज के नेताओं में समाज-सेवा का भाव न होकर अधिकाधिक धन कमाना ही उनके जीवन का उद्देश्य हो गया है, निश्चित रूप से यह चिंता का विषय है। इस पर गंभीरता से विचार किए जाने की जरूरत है।

संपर्क: एस-107, स्कूल ब्लॉक
शकरपुर, दिल्ली-110092
मो. : 9868105864

वर्तमान परिवेश में गृहिणी के समक्ष नई चुनौतियाँ

अंजलि

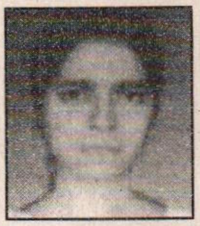

अग्नि के चारों ओर लिए गए सात फेरों से शुरू होती है गृहिणी की कहानी और यह कायम रहती है अंतिम सांस तक। इस पूरी अवधि में गृहिणियों के समक्ष अनेकों चुनौतियाँ आती हैं जिसका सामना उन्हें करना पड़ता है। इन चुनौतियों का सामना करने में वे बड़ी समझदारी से काम लेती हैं। सर्वप्रथम गृहिणी के समक्ष चुनौतियाँ आती हैं शादी के तुरंत बाद, क्योंकि एकाएक उन्हें अपने माता-पिता , भाई-बहन, दादा-दादी से अलग होने के बाद अपने ससुराल के परिवार में आकर अपने पति, सास-ससूर तथा, देवर-ननद से नए रिश्ते की नींव को मजबूत करना होता है। उसे हर परिवेश को समझते हुए उनके साथ तालमेल बिठाना पड़ता है और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ निभाने का दायित्व समझना पड़ता है। इस अवधि में गृहिणी समझ से काम लेते हुए अपनी दृढ़ता एवं हिम्मत के साथ विपरित परिस्थितियों का सामना करती हैं।

आज का युग बड़ी तेजी से बदलता जा रहा है और इस तेजी से बदलते परिवेश और समाज में गृहिणियों को शिक्षित और आत्मविश्वासी होना भी जरूरी है। एक शिक्षित और आत्मविश्वासी महिला ही घर का प्रबंध कुशलता से कर सकती है। इसके लिए उसे घर और बाहर दोनों दुनिया को समझना जरूरी है। घर के बजट को देखते हुए खर्च और बचत का संतुलन करना, घर-गृहस्थी को ऐसे संभालना कि उनका भरपूर उपयोग करना, सबकी सेहत और शिक्षा का ध्यान रखना और पारिवारिक वातावरण को खुशगवार बनाना जरूरी हो जाता है। यह बात ठीक है कि गृहिणियाँ बाहर जाकर कमाती नहीं हैं मगर घर में जो भी काम करके वो पैसा बचाती हैं वह एक तरह से घर की आय में जुड़ता है। इस दृष्टि से घर में जो भी आमदनी होती है उसमें से बचत की राशि अलग रखकर ही बजट बनाने की प्रक्रिया अच्छी होती है।

बच्चों को तरह-तरह का खाना बनाकर खिलाना या मँहगे कैमरे, खिलौना लाकर देना, खुब लाड़ पयार करना ही गृहिणी की जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि उनके समक्ष यह भी चुनौती है कि शिक्षा के जरिए कैसे बच्चे अच्छे और समझदार नागरिक बन सकें। इसके लिए उन्हें भरपूर समय देना होगा। स्कूली पढ़ाई के अतिरिक्त बच्चों में अच्छी पुस्तकें पढ़ने की आदत भी डालनी होगी।

गृहिणियाँ घर में किफायत से भी काम करती हैं उससे सिर्फ परिवार को ही लाभ नहीं मिलता, बल्कि बाहर की दुनिया में भी उसकी भागीदारी बढ़ती है। बिजली जरूरत भर जलाना, पानी बरबाद न करना, पुराने कपड़ों से कुछ नया बनाना जैसे तमाम काम जो उनके बजट को तो नियंत्रण में रखते ही हैं, पर्यावरण की सुरक्षा में भी मदद करते हैं। अगर समय है तो घर बैठे ही ट्यूशन या स्वास्थ्य संबंधी कोई काम सभी गृहिणी कर सकती है। इससे जानकारी भी बढ़ेगी और परिवार की सेहत बेहतर रखने में उनको मदद भी मिलेगी। बच्चों की देखभाल पढ़ाई, कपडे., घर की सफाई, सजावट, मेहमानबाजी, सामाजिक जिम्मेदारियाँ आदि घर के कामों की सूची का कोई अंत नहीं होता। गृहिणियाँ क्षमता भर इन तमाम कार्यों के दायित्व का निर्वहन करती हैं। लेकिन अच्छा प्रबंधन की जानकारी रखनेवाली गृहिणी को पता होता है कि हर काम कैसे व्यवस्थित ढंग से करना है, किस काम को कितनी प्राथमिकता देनी है और समय का प्रबंधन कैसे करना है। इसमें अगर थोड़ी भी लापरवाही हो, तो स्थिति हाथ से निकल जाती है।

हर समाज में स्त्री को शक्ति का प्रतीक माना गया है। पुरानी सभ्यताओं में मातृशक्ति की पूजा और दोस्त के अलावा उसकी आइडियल और प्रेरणा भी है। इसीलिए तो कहा गया है हर सफल पुरुष के पीछे एक स्त्री पूरे परिवार का केंद्र है। उसका व्यवहार, उसकी कार्य-कुशलता उसका सहयोग ही पूरे परिवार की सुख-शांति को बनाए रखने का महत्वपूर्ण कारक होता है। माना जाता है कि किसी परिवार को बनाने या बिगाड़ने में स्त्री की भूमिका महत्वपूर्ण होती है और गृहिणी अपने प्यार और विश्वास से परिवार को जोड़े रख सकती है।

परिवारिक रिश्तों की गरमाहट और ताजगी को बनाए रखने के लिए यह भी जरूरी होता है कि आप उसकी अहमियत को समझें। किसी भी संबंध को सहजतापूर्वक चलाने के लिए जरूरी है दोनों पक्षों के बीच समझदारी और समपर्ण की । रिश्तों की डोर बहुत नाजुक होती है। जरा-सी असावधानी से प्रेम-पूर्वक संबंधों को दरकते देर नहीं लगती। रिश्तों में कभी गांठ न पड़े गृहिणी को सदैव यह याद रखना होता है। हर नए युग में नयी पीढ़ी अपने अतीत से इतनी दूरी बनाए रहती है कि उसका तालमेल वर्तमान में नहीं हो पाता। हर गृहिणी को अपने अंदाज से पुरानी पीढ़ी के साथ अपनी गति और बहाव को ख्याल रखना पड़ता है। उसे समय की बदलती रफतार से तालमेल बिठाना पड़ता है।

गृहिणियों के समक्ष आज जो सबसे बड़ी चुनौती खड़ी है वह है अपनी भारतीय संस्कृति एवं संस्कार को बनाए रखने का, जो प्राय: लुप्त होती जा रही है। फिर इसकी रक्षा करना उसका दायित्व हो जाता है। यह बात ठीक है कि औरतों खासकर गृहिणियों पर दमन की कोशिशें जारी हैं, औरत अपनी

उत्कृष्ट जिजीविषा के दम पर बार बार खुद को पुरुषों से बेहतर साबित करती रही हैं। आपने देखा नहीं अभी अभी गृहिणी जब वायु सेना का विमान उड़ाने के सपने को सच कर दिखा सकती है तो वह अपने समक्ष खड़ी किसी भी चुनौती का सामना कर सकती है। वायुसेना में शामिल न होकर या कामर्सियल पायलट का लाइसेंस लिए बिना क्या महिलाओं के लिए विमान उड़ाना संभव है? इस प्रश्न का उत्तर एक छात्रा अनुराधा और गृहिणी गुरलीन ने हाल ही में विमान उड़ाकर दे दिया है। इनदोनों के समक्ष यह चुनौती थी और सपना भी जो सच हो गया।

हुआ यूँ कि भारतीय वायु सेना के एक ए/एन/32 विमान के पायलट की सीट पर बैठकर रियलिटी टेलीवीजन के इस दौर में अनुराधा राणा गृहिणी गुरलीन कौर ने विमान को बादलों के ऊपर उड़ाने के रोमांच का आनंद लिया। ये दोनों नेशनल लियो ग्राफिक्स की मिशन उड़ान के लिए चुने गए अंतिम पाँच प्रतिभागियों में शामिल हैं। अनुराधा बताती है कि आम नागरिकों के तौर पर हम सिर्फ अपने और परिवार के बारे में ही सोंचते हैं। जो हमारे लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं। उनका ध्यान नहीं रहता है। वह पुनः कहती है कि वायुसेना के अनुभवों और आत्म विश्वास ने उन्हें देशभक्त बना दिया है। आत्मविश्वास और अनुभवों के बदौलत वस्तुतः बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। यह आत्मविश्वास औरतों में आता है आत्म रक्षा के गुर सीखने से। यही आत्मविश्वास जरूरत पड़ने पर असामाजिक तत्वों को भी औरतें सीख दे सकती हैं।

मौजूदा दौर में जहाँ आर्थिक तनावों से उत्पन्न मजबूरी है वहीं दूसरी ओर भोग विलास का दौड़ भी। आधुनिक डिजिट्ल युग की चकाचौंध में निश्चित तौर पर गृहिणियों के समक्ष चुनौतियाँ उत्पन्न हो गई हैं कि वे अपने आदर्शों की सोच को भोगवाद की ओर ढकेला है। इस चुनौती को स्वीकार करते हुए गृहिणियों को प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद आदर्श जीवन की सोच को जीवित रखते हुए उसे आगे बढ़ाना होगा। आधुनिक जीवन की तमाम चमक-दमक के बीच परिवार से लेकर समाज व राष्ट्र की समस्याएँ निरंतर बढ़ रही हैं। सौंदर्य के प्रति स्त्रियों व पुरुषों के बढ़ते आकर्षण से भी गृहिणियों के समक्ष चुनौती उत्पन्न आ खड़ी है।

दरअसल निर्णय, स्नेह, प्यार, आकांक्षा और आजादी से स्त्री को वंचित कर पुरुष स्त्री की हर तरह की भूख को तृप्त करने का सदी के शुरू से ही स्वाद और वस्तु मान लिया गया। एक गृहिणी अथवा किसी भी स्त्री की जिंदगी का निर्णायक उसका पति हो जाता है। स्त्री को विवाह रचनात्मक रहने नहीं देता। सदियों से आधी दुनिया की आजादी, समानता और गरिमा की लड़ाई जारी है, मीरा बाई से लेकर तसलीमा नसरीन तक इस लड़ाई के नेतृत्व में शामिल हैं ताकि पुरुष के समानांतर स्त्री के अस्तित्व को समान स्वीकृति मिल सके । स्त्री सशक्तीकरण की मशाल उसके हाथ में है, शिक्षा का धन उसके पास है। सिर्फ खा-पहनकर सुखी हो जाए, ऐसा उसकी चेतना गवारा नहीं करेगी। आज नहीं तो कल उम्र और वक्त के साथ उसकी समझ में यह आ जायेगा कि उसका दायित्व और धर्म क्या है। दूसरी बात है कि पुरुषों में जो स्त्री तत्व छुपा हुआ है, वह अब बाहर निकलकर हमारे सामने आने लगा है, क्योंकि आग और पानी तो सब में रहता है। गृहिणी में तो धारण करने की क्षमता भी सबसे अधिक होती है। पहले गृहिणी केवल बर्तन मांजती थी। अब तो वह पुरुषों का मन भी माजने लगी हैं इसलिए पूर्वाग्रह भी धीरे-धीरे छंटने लगे हैं और पुरुषों में दोस्ती के जो तत्व पहले से मौजूद हैं उनको उभारने के प्रयास हो रहे हैं। गृहिणी भी समस्या को एक नए दृष्टिकोण से देखना शुरू कर दी है। इसलिए वह सिर्फ अपने बारे में नहीं सोंच कर सबके बारे में सोंच रही है।

संपर्क : ए/153, गली नं॰ 6,
जनकपुरी, साहिबाबाद,
ग़ाज़ियाबाद, उ.प्र.

●

हिंदी को अपनाना अमेरिका की मजबूरी

पिछले दिनों अमेरिकी सरकार ने हिंदी पढ़ने, बोलने और इसे जानने के लिए बकायदा करोड़ों डॉलर की राशि मुहैया कराने की घोषणा की है। खबर के अनुसार अंकल सैम 11.4 करोड़ डॉलर की राशि से अमेरिका में हिंदी फारसी, चीनी और अरबी पढ़ायी जाएगी। इससे हिंदी के हिस्से लगभग 3 करोड़ डॉलर की रकम आएगी। पिछले दो दशकों में अँग्रेजी के जरिए अमेरिका ने भारत की सरजमीं पर अपना दबदबा कर अमेरिकी कॉरपोरेट घराने और आम जीवन शैली में कम-से-कम यहाँ के शहरी लोगों को अपने घेरे में ले लिया है। कहना नहीं होगा कि आज भारतीय महानगरों में समृद्धि के जो दर्शन हो रहे हैं उसके पीछे उदारीकरण का ही हाथ है।

दरअसल भारत में अमेरिकी कॉरपोरेट ने शहरी क्षेत्रों के बाजार को तो जीत लिया लेकिन इस देश के करीब 61 प्रतिशत ग्रामीण इलाकों में अमेरिकी बाजार की पहुँच नहीं हो पाई है। जाहिर है भारत के इन 61 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में बसे करीब 60 करोड़ मध्य वर्गीय लोगों को जीतने के लिए हिंदी का ही सहारा लेना होगा, क्योंकि इस भरे-पूरे बाजार को समझने और लोकतांत्रिक मूल्य-मर्यादाओं के तहत इस पर कब्जा करने में हिंदी आसान मददगार हो सकती है। लिहाजा हिंदी को अपनाना अब अमेरिका की मजबूरी हो गई है। खैर जो हो, भले ही व्यावसायिक दृष्टिकोण से अमेरिकी प्रशासन ने यह कदम उठाया हो पर हिंदी इससे अवश्य फलेगी-फूलेगी और अमेरिका तथा ब्रिटेन में बसे भारत के प्रभुवर्ग हिंदी की प्रगति में ही अपना विकास ढूँढ़ना प्रारंभ करेंगे। इस ख्याल से अमेरिकी सरकार द्वारा अपने व्यावसायिक हित-साधन की गरज से हिंदी को बढ़ावा दिये जाने के फरमान का स्वागत किया जाना चाहिए।

●

भारतीय समाजः समस्या एवं समाधान

डॉ॰ महेशचन्द्र शर्मा

आज के आपाधापी, भागदौड़, स्वार्थपरता, वैचारिक संकुचितता-संकीर्णता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के ह्रास के युग में व्यक्ति संवदेना-शून्य हो गया है। जो व्यक्ति (चाहे वे किसी भी वर्ण में जन्में हों) प्रगतिशील पुरुषों एवं नारियों के प्रति अपने मनोजगत् में ईर्ष्या-द्वेष, छल तथा कपट् रखते हैं, वे संस्कारवान नहीं कहे जाते।

यदि हम ध्यानपूर्वक सोचें-समझें तो हमें यह बात कहने में कोई आपत्ति नहीं होती कि आज भारतवर्ष में 'बहुलाँश' ऐसे व्यक्तियों का है जो प्रगतिशील पुरुषों-नारियों को सहन नहीं करता। दूसरों की कमियाँ निकालना बहुत सरल कार्य है किंतु दूसरों की प्रगति की सराहना करने के लिए 'सहनशीलता' की आवश्कता होती है। सहनशीलता भारतीय संस्कृति की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है। आवश्यकता इस बात की है कि आज यह समाज प्रगतिशील पुरुषों एवं नारियों (राष्ट्रवादियों) को सहन करे।

यशस्वी विचारक, शिक्षाविद् तथा भारतवर्ष के पूर्व महामहिम राष्ट्रपति डॉ॰ शंकरदयाल शर्मा साहब ('मंजूषा' पृष्ठ 86) की मान्यता है कि- ''नारी-शिक्षा को केवल एक ही कीमत पर अस्वीकार किया जा सकता है। वह यह कि यदि हम चाहें कि हमारे समाज रूपी शरीर का आधा अंग पक्षाघात से पीड़ित रहे।'' अपने इस मत के आधार पर पूर्व महामहिम राष्ट्रपति ने 'नारी-शिक्षा' की जबरदस्त वकालत की है। ध्यातव्य बात तो यह है कि आज भारत में स्थान-स्थान पर शिक्षा-संस्थाएँ चल रही हैं। तो भी अधिकाँश भारतवासी (पुरुष एंव नारियाँ) शैक्षिक दृष्टि से पक्षाघात से पीड़ित हैं। यह अत्यन्त सामयिक एवं ज्वलन्त प्रश्न है जिसे आज विचार-विमर्श का विषय बनाया ही जाना चाहिए। जो व्यक्ति शैक्षिक दृष्टि से पक्षाघात से पीड़ित नहीं भी है, वे भारतीय नवजागरण के संदेश को अपने दैनिक जीवन में आचरण का विषय क्यों नहीं बनाते? हम यह बात भली-भाँति जानते-समझते हैं कि हमारे देश में 'नवजागरण' आधुनिक काल में आया जिसने नारियों को सामन्तशाली शिकंजे से बाहर निकालकर उन्मुक्त वातावरण में साँस लेने के योग्य बनाया। नव जारगण वस्तुतः यह सिखाता है कि आज भारतीय नारियाँ अपने पुरुषों के साथ जीवन-क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलें-नारियाँ भी स्वावलम्बी बन जाएँ।

हिंदी की लब्धप्रतिष्ठ सात्यिकार श्रद्धेया महादेवी वर्मा ने भारतीय समाज के अधःपतन का मूल कारण 'अशिक्षा' को माना है। मेरी यह निश्चित धारणा है कि 'भोगवाद' पश्चिमी देशों की देन है जिसे बढ़ावा भारतवर्ष में मिल रहा है। भोगवाद ही वस्तुतः भारतीय समाज के अधःपतन का मूल कारण है। हमारी विदुषी लेखिका महादेवी वर्मा ने ('अतीत के चलचित्र' पृष्ठ 95) लिखा है कि- ''नारी समाज के लिए भोग का साधन नहीं, वह समाज की शक्ति है।'' आज समाज में देखने-सुनने को मिल रहा है कि अधिकाँश व्यक्तियों ने अपनी नारियों को 'भोग-विलास का उपकरण' समझ रखा है। उन्हें 'बच्चे पैदा करने की मशीनें' बना रखा है। मध्य प्रदेश की पख्यात कवयित्री डॉ॰ दुर्गा केंगरानी ने अपनी 'औरत' नाम्नी कविता में लिखा है कि-

'बहुत हुआ
अब मैं नहीं सजूँगी
क्या औरत केवल सजने के लिए होती है?'

हमारे यशस्वी कवि डॉ॰ हरीश शर्मा की निमस्थ काव्यात्मक वाणी है जिसे देशवासियों को सदैव याद रखना चाहिए-

'नारी-गौरव के लिए, था भारत का नाम।
नारी-शोषण के लिए, अब भारत बदनाम।।

कौशल्या, सीता, सावित्री, विद्योत्तमा एवं रत्नावली आदि भारतीय नारियों ने अपने आदर्श भरित कार्यकलापों के आधार पर भारत को गौरवान्वित किया है। आज नारियाँ अपने पुरुषों के द्वारा अपना शारीरिक शोषण क्यों करा रही हैं? यह नारिंं के लिए 'आत्मनिरीक्षण' का विषय बनना चाहिए। इस बात को लेकर पुरुषों को भी 'आत्मनिरीक्षण' कर लेना चाहिए।

आज भारतीय समाज समस्या-प्रधान बन गया है। भारतीय समाज में अनेक कुरीतियाँ फैली हुई हैं। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं॰ जवाहरलाल नेहरू ने 'आत्मकथा' में लिखा है कि-

'These social customs will carrry India towards poverty.'

ये भारतीय सामाजिक कुरीतियाँ (रीति-रिवाज-समस्याएँ) हैं-

(1) जातिवाद, (2) नारी-शोषण (भोगवाद), (3) पुत्र की अभिलाषा (अँध विश्वास), (4) मद्यपान (5) दहेज-प्रथा (सभ्य मानव के माथे पर लगा एक काला धब्बा), (6) भ्रष्टाचार तथा (7) भक्ति सम्बंधी अँधविश्वास आदि।

आज भारतीवासी सु-संस्कारों से युक्त शिक्षा की महिमा को समझें तथा भारतीय नवजागरण के संदेश को अपने दैनिक जीवन में व्यावहारिक रूप दें तो निश्चय ही समाज में क्रांति पैदा की जा सकती है-पथभ्रष्ट समाज को सही मार्ग पर लाया जा सकता है।

इस संदर्भ में हमें भारत के वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति डॉ॰ ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहब के मतों को ध्यान में खकर चलना चाहिए। महामहिम राष्ट्रपति डॉ॰ कलाम साहब का मत है कि-

'जीवन में सही दिशा समृद्धि और सफलता दिलाती है।' उन्होंने छोटा लक्ष्य लेकर चलना 'अपराध' मना है। आज यदि देशवासी महामहिम साहब के इन मतों के आलोक में चलेंगेतो समाज निश्चय ही आगे बढ़ेगा- वह पतन के गर्त से बाहर निकल जाएगा।

भारतवर्ष के तत्कालीन प्रधानमंत्री माननीय श्री अटल बिहारी वाजपेयी साहब की मान्यता है कि- 'किसी भी राष्ट्र की संस्कृति और अस्मिता की पहचान उसकी अपनी भाषा होती है। विश्व में वही राष्ट्र प्रतिष्ठित और सम्मान का पात्र होता है जिसे अपनी भाषा, संस्कृति और संस्कारों पर गर्व होता है।, 'आज के दिशाहीन देशवासियों को चाहिए कि वे माननीय श्री वाजपेयी साहब की उक्त मान्यता को अपने दैनिक जीवन में व्यावहारिक रूप दें जिससे वे भारत के योग्य एवं सफल नागरिक बन सकें।

दांपत्य जीवन को कैसे सफल एवं सुखदायक बनाया जा सकता है? इस संदर्भ में मेरी निम्नस्थ दो मान्यताएँ हैं-

(1) दाम्पत्य जीवन की सफलता इस बात में अन्तनिर्हित है कि पति-पत्नी-दोनों एक-दूसरे के विश्वासपात्र बनें तथा दोनों प्रगतिशील बनें।

(2) दाम्पत्य जीवन की सफलता का मूलयाँकन उपलब्धियों के आधार पर होना चाहिए- मानसिक स्तर, आर्थिक स्तर तथा जीवन-स्तर। जीवन की इन्हीं में 'सार्थकता' है।

मेरी यह निश्चित धारणा है कि ये दोनों मान्यताएँ भारतीय सामाजिक जीवन को विकास-मार्ग पर अग्रसर करने की दृष्टि से उपयोगी रहेंगी।

जो व्यक्ति अपने परिवारों में जनसंख्या बढ़ाते हैं, भारत के सामने समस्याएँ खड़ी करते हैं- वे शैक्षिक दृष्टि से आगे क्यों नहीं बढ़ जाते?

माँ-बाप अपनी सन्तानों को खूब धनराशि दें या न दें। इन बातों का कोई महत्त्व नहीं है। वे लोग अपनी संतानों को अच्छी शिक्षा-दीक्षा की दौलत दें, तथा अच्छे-अच्छे संसकारों की दौलत दें। यह काम वे तभी संभव कर पाएँगे जब वे विचारपरक होंगे। इस सन्दर्भ में मैं अपना व्यक्तिगत उदाहरण देना चाहूँगा। मेरे माँ-बाप ने मेरे बचपन में ही मेरे अंदर प्रचण्ड परिश्रम, ईमानदारी, अनुशासन एवं सदाचार के संस्कार डाल दिए थे। ये ही संस्कार आज भी मेरी रग-रग में समाए हुए हैं। ये ही संस्कार मेरी सफलता के आज भी आधार बने हुए हैं।

किसी भी व्यक्ति को चाहिए कि वह दूसरों को अपनी शारीकि सुन्दरता के आधार पर नहीं, बल्कि अपने गुणों (विशेषताओं) के बल पर प्रभावित करने का प्रयास करे। भारतीय मरीसी आचार्य चाणक्य की मान्यता है कि- 'गुणो भूषयते रूपम।'

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की भी मान्यता रही है कि- 'अपनी छाप गुणवान के रूप में डालनी चाहिए, रूपवान के रूप में नहीं।

आज भारतवर्ष में चारित्रिक संकट चरम सीमा पर पहुँच गया है। मैं भारत के राष्ट्रवादी एवं क्रांतिकारी महापुरूष पंजाब केसरी लाल लाजपतराय के नाम पर चलने वाली ('लाजपतराय कॉलेज, साहिबाबाद-गाजियाबाद-उ॰प्र॰') नाम्नी शिक्षा-संस्था में हिंदी-विभाग के अन्तर्गत रीडर तथा अध्यक्ष के पद पर संवाएँ कर रहा हूं। लाल लाजपत राय ने 'राष्ट्रीय चरित्र' पर विशेपन: बल दिया था। मेरी यह निश्चित धारणा है कि-' हर व्यक्ति का चरित्र राष्ट्रीय चरित्र का मुलाधार है। हमारे देशवासियों को चाहिए कि वे ऐसे यशस्वी सदाचारी महापुरुस के जीवन से शिक्षा लें तथा आपने जीवन को 'सदा चारमय' वनाए।

पुर्न महामहिम राष्ट्रपति अवसर शंकरदयाल शर्मा साहब ('नवभारत टाइम्स', 11फरवारि, 1997) की मान्यतारही है कि-'' अेछे चारित्र के लोग महान् राष्ट्र का निर्मान नहीं कर यकते।

आज दिगभ्रमित देशवासियों को 'सही मर्ग' पर चलने की नितन्त आवशकता है। भारतिय जीवन-मूल्यों (गाँधीवादी मान्यताओं-सत्य, अहिंसा, समता, बंधुता तथा सदाचार आदि) को देशवासी 'आदर्श' मानकर जीनकर मे चलेंगे तो समाज का उत्थान निश्चय ही सम्थक होगा। हर व्यक्ति को रचनात्मक दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। हस संदर्थ में मेश निम्नस्थ मान्यता है-''जीवन में महत्त्वाकाँक्षी होना है जो, तथा तदर्थ प्रयत्नशील भोर हना है। रचनात्मक कर्म में लगा रहना है जो, जीवन सार्थक भी उसी का होना है।''

-रीडर एवं अध्यक्ष: हिन्दी-विभाग, लाजपत राय कॉलेज (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ) साहिबाबाद, (गाज़ियाबाद) उत्तरप्रदेश-201005.

जया की राज्यसभा सदस्यता रद्द होने से राजनीति में भूचाल

निर्वाचन आयोग की सिफारिश पर राष्ट्रपति डॉ॰ एपीजे अब्दुल कलाम ने लाभ का दोहरा पद रखने के मामले में सपा की सांसद तथा अभिनेत्री जया बच्चन राज्य सभा सदस्यता 14 जुलाई 2004 से खत्म कर दी है। राज्यसभा के इतिहास में अपनी तरह की यह पहला मामला है जब किसी सदस्य की करीब पौने दो साल की सदस्यता को अमान्य करार दिया गया है। सपा के अमर सिंह तथा भाजपा के बैंकटैया ने सोनिया सहित 40 अन्य विधायकों की सदस्यता दोहरे लाभ का पद रखने के कारण रद्द करने की माँग की है। जया की सदस्यता रद्द होने के बाद राष्ट्र तथा राज्यों की राजनीति में लाभ के पद को लेकर एक भूचाल आ गया है जो राजनीतिक दलों के चाहने पर भी थम नहीं पा रहा है।

बिहार विकास की ओर

सिद्धेश्वर

आज से चार महीने पूर्व जब से नीतीश कुमार नेतृत्व में नयी सरकार बनी है उसने बिहार राज्य में आमूल चूल परिवर्तन के प्रयास कर दिए हैं। इनमें माहौल बनाने से लेकर आधारभूत संरचना तैयार करने तक के बिंदू शामिल है। चाहे शिक्षा और स्वास्थ्य का सवाल हो अथवा विधि व्यवस्था का, राज्य के सर्वांगीण विकास के लिए योजनाओं को, कार्यान्वित करने का हर संभव प्रयास जारी है। राज्य को स्वस्थ बनाने तथा खुशहाल रखने के लिए प्रतिबद्ध नीतीश कुमार में आत्म विश्वास है और साथ ही यहाँ की जनता को भी उनमें भरोसा है मगर किसी सरकार का मुखिया जब कॉकस एवं चाटूकार से घिर जाता है तो उसके कदम, लड़खड़ाने लगते हैं। कारण कि कॉकर्स के लोग अपने स्वार्थ को साधने में उन्हें गलत रास्ते की ओर मोड़ देते हैं। चाटूकारिता राजनीति का बहुत पुराना रोग है। जबतक सत्ता मे बैठे हुकमरान चाटूकारों को तरजीह देते रहेंगे बनी बनाई संस्कृति भी बिगड़ जाएगी।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि इन चार महीनों में नीतीश सरकार ने जिस प्रकार से कामकाज को स्वरूप देना शुरू किया है, इसके अच्छे नतीजे दिखने लगे हैं। चाहे हैदराबाद में संपन्न अप्रवासी भारतीयों का सम्मेलन हो अथवा बिहार में चीनी मिलों को स्थापित करने का अच्छे परिणाम की उम्मीद बँधी है। अमेरिका में बसे करीब 250 बिहारी डॉक्टरों ने जो नीतीश कुमार को अमेरिका आने का न्योता दिया और 4000 डॉक्टरों का जिस प्रकार पिछले दिनों एपीकान का कांफ्रेंस में अमेरिका के 250 बिहारी डॉक्टरों ने लौटकर इसके स्वास्थ्य को ठीक करने का आश्वासन दिया उससे सकारात्मक परिणाम की आशा की जा सकती है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शरद पवार की बिहार यात्रा के वक्त कोई आधा दर्जन उद्योगपतियों का उनके साथ आकर बिहार की बंद पड़ी चीनी मिलों का मुआयना और संभावनाओं को तलाशना भी सकारात्मक पहल माना जाएगा। इसमें संदेह नहीं कि नई सरकार प्रदेश में नयी कार्य संस्कृति उत्पन्न करने में सफ़ल रही है। दूसरी ओर पंचायतों में महिलाओं और अति पिछड़ों को आरक्षण तथा भागलपुर दंगे की फिर से जाँच के लिए आयोग का गठन करने में नयी सरकार ने सामाजिक स्तर पर अपनी पकड़ मजबूत करने की कोशिश की है।

प्रशासनिक क्षेत्रों को गतिशील और पारदर्शी बनाने के खयाल से प्रशासनिक सुधार आयोग का कठन, प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति की घोषणा, सभी जिलों में रोजगार गारंटी योजना को लागू करना, राष्ट्रीय युवा महोत्सव, फिल्म महोत्सव का आयोजन, राज्य

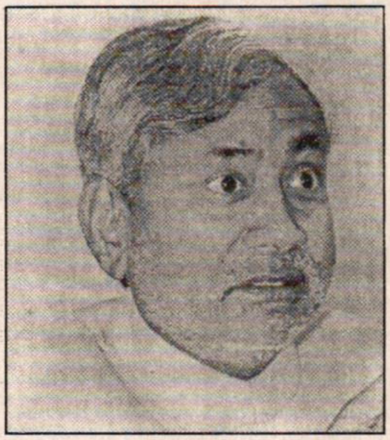

निवेश प्रोत्साहन बोर्ड का गठन, राज्य में एम्स की स्थापना सहित सात और नए मेडिकल कॉलेज खोलने का निर्णय, राष्ट्रीय विधि एवं प्रबंधन संस्थान की स्थापना आदि कुछ ऐसे निर्णय हैं जो सरकार की मंशा को स्पष्ट करते हैं।

जहाँ तक विधि-व्यवस्था ठीक करने का सवाल है पिछले चार महीनों में हुई वारदातों में कोई कमी तो नहीं आई है मगर हाँ, लोगों में जो दहशत का माहौल था वह अब नहीं के बराबर है। राज्य सरकार की नीयत साफ दिखती है। इसमें कतई संदेह नहीं कि इसके निर्णय राज्य की सेहत के लिए बेहतर हैं। इन्हीं फैसलों का नतीजा है कि धड़ल्ले से अपराधी पकड़े जा रहे हैं। नई सरकार ने 15 साल पुरानी परंपरा को झटके में बदल दिया। पटना सचिवालय में कभी कभार सामने वाला मुख्यमंत्री की बैठक प्रत्येक मंगलवार को अनिवार्य रूप से होती है। ऑफिस में 12 बजे आनेवाले अधिकारी-कर्मचारी अब दौड़ते हुए दस बजे दफ्तर पहुँचते हैं। पहले जहाँ एक टेबुल से दूसरे टेबुल तक पहुँचने में संचिकाओं को तीन दिन लगते थे, वहाँ आज हाथों-हाथ इधर-उधर पहुँच जाती हैं। अधिकारी ने भी अब पुरानी आदत को छोड़कर रूटीन वर्क पर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। सबसे बड़ी बात तो यह नजर आ रही है। कि अपराधियों को छोड़ने के लिए जो दबाब पहले शीर्ष से दिया जा रहा था, पुलिस अधिकारियों की यह शिकायत करीब-करीब दूर हो गई है। यहाँ तक कि विधायकों के करीबी रिश्तेदारों को भी अब जेल की सीकचों में बंद किया जा रहा है। पटना में सड़क पर होने वाली रंगदारी को रोकने का प्रयास भी जारी है। बिहार के विकास को पटरी पर लाने की बीमारी लंबे अरसे से है उसकी पहचान कर ली गई है। अब ठीक से इलायज अगर हो तो राज्य स्वस्थ होगा, इसमें कोई शक नहीं, क्योंकि शीर्ष नेतृत्व के स्तर पर नीयत में कोई खोट नहीं है। माहौल में जो खुशनुमा बदलाव आया है उसका स्वागत किया जाना चाहिए। वैसे भी 15 साल के कुशासन के अच्छे-बुरे कारणामों को इतने कम समय में बदलना आसान भी नहीं। पर इतना जरूर है कि नयी सरकार विकास की टिमटिमाहट को जगमगाहट में बदलने के लिए समय को देखते हुए अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करने के प्रति प्रतिबद्ध दिखती है और मंत्रिपरिषद के सदस्य भी अपने-अपने विभागों के कार्यों को बड़ी सर्तकता से देख तथा उसकी समीक्षा कर रहे हैं। दरअसल बिजली, पानी, सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, अपराध और खाली खजाने से लेकर प्राय: सभी क्षेत्रों में पिछले डेढ़ दशक से काम सुचारू रूप से न होने की वजह से राज्य में चारों ओर समस्याओं की भरमार है। राज्य के मुखिया नीतीश कुमार के बार-बार दिल्ली की दौड़ लगाने से अच्छा असर इस मायने में दिख रहा है कि न केवल योजना आयोग से उम्मीद से ज्यादा राशि मंजूर हुई है बल्कि प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह का ध्यान बिहार के विकास की

ओर आकृष्ट करने में वे सफल रहे हैं।

विकास के संदर्भ में एक बात और काबिलेगौर है कि हम अभद्र अंतरविरोधों और अश्लील विसंगतियों सहित मौजूदा हालात की नीयति मानने के ऐसे युग में जी रहे हैं जिसमें हमने अपनी किसी समस्या पर गंभीरता से न सोचने की आदत विकसित कर ली है। इससे हमें मुक्त होना होगा। नीतीश सरकार ने बिहारवासियों सहित पूरे देशवासियों में यह आत्मविश्वास भी पैदा किया है जिसके परिणामस्वरूप एक संवेदनशील एवं सजग दिमाग को राज्य के सवाल मथने भी लगे हैं। इससे यह आशा बँधती है कि मौजूदा लूजपुँज व्यवस्था में बदलाव लाकर नयी सरकार बिहार के विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन की दिशा में अग्रसर होगी और यहाँ के आम आदमी की सुध लेने में कोई कोर कसर नहीं उठा रखेगी। हालाँकि मौजूदा समय में जिस तरह की राज्य की अर्थव्यवस्था है उसमें सबसे ज्यादा मध्य वर्ग भी प्रभावित है। इसलिए इस पर भी सरकार का ध्यान जाना चाहिए, क्योंकि मध्य वर्ग का एक हिस्सा धीरे-धीरे गरीब तबके की श्रेणी में जा रहा है या फिर शामिल होने के लिए किनारे पर खड़ा है। सरकार छोटे-छोटे उद्योगों को स्थापित करके इस वर्ग को अपने लिए आगे बढ़ने की राह तलाशने का अवसर दे।

बिहार की नयी सरकार हवाई घोषणाओं से परहेज करते हुए अपने चुनावी घोषाणाओं के अनुरूप भागलपुर दंगे की पुन: जाँच के लिए पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश से उसने एक सदस्यीय आयोग का गठन कर दिया है। इसी प्रकार प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति के साथ-साथ उर्दू शिक्षकों की बहाली की प्रक्रिया भी इसने प्रारंभ कर दी है। इसके अतिरिक्त सूबे के एक लाख लोगों को रोजगार देने की घोषणा को यदि कार्यान्वित किया जाता है तो कई समस्याओं के समाधान में यह कारगर कदम होगा। मगर कठिनाई यह है कि यह सरकार जरूरत तो महसूस करती है, कदम उठाती है, पर संबंधित व्यवस्था के निर्माण का काम अधिकांश संदर्भों में उसी नौकरशाह पर छोड़ दिया जाता है, जो सारे अवमूल्यन के लिए जिम्मेदार हैं। इन नौकरशाहों के स्वार्थ व एकाधिकार की वजह से योजनाओं का व्यावहारिक स्वरूप सामने नहीं आ पाता है। यही कारण है कि तमाम रोकथाम संबंधी नए नियम-कानून असमय ही दम तोड़ जाते हैं या समस्याओं के समाधान में प्रभावी नहीं रहते। ऐसी स्थिति में प्रशासनिक प्रक्रिया में अधिक पारदर्शिता और जनसहभागिता ही एकमात्र विकल्प है। भ्रष्टाचार और अपराध पर प्रभावी नियंत्रण सिर्फ भाषणों व नियम कानून बनाने से स्थापित नहीं हो सकता, बल्कि प्रशासनिक प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी बनाने व अधिक जनसहभागिता द्वारा ही भ्रष्टाचार व अपराध पर प्रभावी नियंत्रण संभव हो सकता है। इससे पूरी नौकरशाही भी कठघरे में खड़े होने से बच सकेगी। पिछले दिनों पटना तथा उसके आसपास के इलाकों में हुई चार-पाँच चोरी-डकैती तथा रंगदारी माँगने की घटनाओं के दौरान पड़ोसियों द्वारा कोई एक दर्जन डकैतों एवं रंगदारों को खदेड़-खदेड़ कर पकड़ना और उसे पीट-पीटकर मृत्यु के कगार पर पहुँचाने जैसे समाचारों ने जनसहभागिता की सार्थकता को सिद्ध कर दिया है अन्यथा इसके पूर्व चोरी का शोर सुनकर कहाँ कोई पड़ोसी अपने घर से बाहर निकल पाता था?

बिहार की प्रगति के संदर्भ में एक बात और काबिलेगौर है कि पिछली सरकार के अनुभवों पर बार-बार पुनर्विचार करने की जरूरत है। कारण कि पिछले पंद्रह वर्षों में विकास की ओर ध्यान नहीं जाने के कई कारणों में से एक सत्ता पर बैठे हुकमरानों का कॉकस और चाटूकारों से घिरा रहना भी था। सत्ता परिवर्तन के बाद पिछले चार महीनों का अनुभव बताता है और बिहार की आम जनता के बीच जो बातें रोज-ब-रोज सुनने को मिल रही हैं और इसके मूलरूप में अथवा बुनियादी आधार और सरकार के बीच संवादहीनता की स्थिति बनती जा रही है। फलत: वह विकास के लाभ से वंचित दिखता है। इस स्थिति में यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि विकास कार्यों के लिए आ रहा धन सही लोगों तक पहुँचे। साथ ही इस बात पर भी ध्यान रखना होगा कि विकास की कोई भी प्रक्रिया संपूर्ण सार्थकता तभी प्राप्त कर सकती है, जब समाज के सभी तबकों तक उसका लाभ पहुँचे। इस स्थिति में विकास की उम्मीद अगर नीतीश कुमार से न की जाए तो भला किससे की जाए। इसलिए यदि श्री कुमार अपने इर्द-गिर्द के कॉकस और चाटूकारों से बचें तो बेहद आशाजनक परिणाम निकल सकते हैं। जरूरत इस बात की है कि वे अब तक के अनुभवों पर पुनर्विचार करें ताकि वे कहीं ज्यादा स्पष्ट आईने में अपनी उपलब्धियों और नाकामियों पर गौर कर सकें और इस राज्य को उस रास्ते पर ले जा सकें जिसका सपना आधुनिक बिहार की नींव रखनेवाले डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद, अमरकथा शिल्पी फणीश्वर नाथ रेणु तथा लोकनायक जय प्रकाश नारायण जैसे मनीषियों और स्वतंत्रता सेनानियों ने देखा था।

जो आमजन, सदियों से वंचित और उत्पीड़ित हैं मौजूदा अभिजात्य वर्गों द्वारा व्यवस्था में दखल देने से उन समूहों के हितों का कितना ध्यान दिया जाएगा इसी से जुड़ता है सरकार के बुनियादी आधार और समाज के आम ढाँचे का सवाल। समाज का वह तबका विकास की प्रक्रिया और प्रतिनिधिक सरकार में निष्पक्ष, निर्भय होकर कैसे हिस्सा लें, नयी सरकार के मुखिया को यह बड़ी सावधानी और सतर्क होकर तय करना है। ऐसे वक्त मुझे याद आती हैं डॉ॰ सुनील कुमार अग्रवाल की ये पंक्तियाँ-

जहाँ खड़ा हो रोक कर रास्ता अवरोध
बुलंद इरादों से वहाँ पर द्वार निकालो यारो

जो दे रहे हों पीड़ा, चुभन और टीस
चुन-चुन कर उर में बिधे वो खार निकालो यारो,

खा रही है जो नित-नित ही हिचकोले
उस कश्ती को भव के पार निकालो यारो।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि बिहार की नई सरकार के तीन-चार महीनों के कार्यकाल में राज्य इतिहास के एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव पर आ पहुँचा है। नई सरकार के कार्यों में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण हुआ है। आम लोगों के बीच आशा का संचार हुआ है और बिहार के प्रति देश और विदेश के नजरिए में बदलाव आया है। इस सकारात्मक वातावरण का लाभ उठाकर विकास की नई दिशा तय की जा सकती है।

बिहार अपराध के मामले में देश के अग्रणी राज्यों में एक है। नयी सरकार के विगत चार माह के लेखा-जोखा में 141 लोगों का अपहरण और 400 की हत्याएँ जहाँ इस बात की पुष्टि करते हुए यह दर्शाती है कि राज्य में अब भी अपहरण का धंधा फल-फूल रहा है, वहीं आर्म्स एक्ट के अंतर्गत जेल में बंद 200 अपराधियों को सजा दिलाना तथा आदतन अपराध करनेवालों एवं जमानत पर आजाद घुम रहे राजनीतिक

संरक्षण पानेवालों की जमानत रद्द करने के लिए उच्च न्यायालय पर दस्तक देना सरकार का प्लस प्वायंट है। कारण कि औद्योगिक और कृषि के क्षेत्र में परिवर्तन लाने तथा उद्यमियों को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान करने के लिए राज्य की कानून-व्यवस्था में अपेक्षित सुधार जरूरी है।

मगर पिछले दिनों राज्य सभा के लिए संपन्न चुनाव में किंग महेन्द्र जैसे उद्योगपति को जद(यू) का टिकट देकर श्री नीतीश कुमार ने क्या यह संदेश नहीं दिया है कि योग्यता की जगह धनबल का प्रभाव पार्टी के अंदर भी काम करने लगा है। उम्मीद यह की जा रही थी कि श्री कुमार कला-संस्कृति, पत्रकारिता, साहित्य तथा समाज के क्षेत्र में कामयाबी हासिल करनेवाले योग्य एवं साफ-सुथरी छबिवाले व्यक्ति को राज्यसभा एवं विधान परिषद का टिकट देंगे, किंतु किंग महेंद्र जैसे उम्मीदवारों से उम्मीदों को धक्का लगा है।

जहाँ तक बिहार में शिक्षा व्यवस्था का सवाल है, बिहार के नए मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भले ही बिहारियों की मेधा का बखान कर राज्य को गौरव दिलाने के जो भी प्रयास करें, मगर यहाँ की स्थिति यह है कि एक ओर जहाँ एक भी जिले में साक्षरता राष्ट्रीय दर के समीप नहीं पहुँच पाई है वहीं दूसरी ओर राज्य को तकनीशियनों की ज्यादा जरूरत होने के बावजूद बिहार सरकार तकनीकी शिक्षा में करीब 90 प्रतिशत की कटौती

करने का विचार कर रही है जिसके बाबत योजना आयोग की विभागीय रिपोर्ट में भी चिंता जताई गई है। बिहार में आज भी करीब 20 लाख बच्चे स्कूल से वंचित हैं। जो बच्चे स्कूल जा भी रहे हैं तो प्राथमिक स्तर पर 86 बच्चों को पढ़ाने के लिए सिर्फ एक शिक्षक नियुक्त है। योजना आयोग के अनुसार बिहार में शिक्षा की जो दशा है उसमें तुरंत 1,10,000 शिक्षकों की जरूरत है। इसके अलावा करीब एक लाख क्लास रूम भी चाहिए, लेकिन राज्य सरकार उसके लिए जमीन उपलब्ध कराने में असमर्थ है। मगर जिस जोश व खरोश के साथ पिछले दिनों पटना के ऐतिहासिक गाँधी मैदान में तथा उसके पूर्व विधान परिषद के एनेक्सी में क्रमशः बिहारवासी तथा विधायक योग सीखने तड़के ही पहुँचे, इससे इस बात का संकेत मिलता है कि नया बिहार अंगड़ाई ले रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने तो योग गुरू स्वामी रामदेव जी को बिहार के ब्रांड एंबेस्डर होने की बात कही है। स्वामी जी ने भी बिहारवासियों के हौंसले को बुलंद रखते हुए अपराधियों का डटकर मुकाबला करने को कहा है।

●

भगवान बुद्ध के 2550वें महापरिनिर्वाण वर्ष में

'नालंदा की विरासत' पर अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी

नालंदा की धरती से प्रवाहित होता है शांति का संदेश। शांति, अहिंसा, भाईचारा व विश्वबंधुत्व की दुनिया में अलख जगानेवाला और शिक्षा जगत में दुनिया को सुपथ दिखानेवाला नालंदा विश्वविद्यालय की पवित्र भूमि

नालंदा में विगत 12 फरवरी से 14 फरवरी को 'द हेरिटेज ऑफ नालंदा' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए जीवन पर्यंत न्याय के लिए संघर्षरत सत्मार्गी व शीर्ष बौद्ध धर्मगुरु दलाईलामा ने अज्ञानताओं को ही मनुष्य के सारे दुःखों का कारण बताया। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस अवसर पर दलाईलामा से राज्य के विकास व क्षेत्र में शांति के लिए आशीर्वाद माँगा।

उल्लेखनीय है कि इस संगोष्ठी को भूटान, चीन, हाँगकाँग, भारत, जापान, कोरिया, लाओस, मलेशिया, मंगोलिया, म्यांनमार, नेपाल, सिंगापुर, श्रीलंका, ताईवान, थाईलैंड, तिब्बत, ब्राजील, कनाडा समेत अन्य कई देशों से आए विद्वान बौद्ध भिक्षुओं ने संबोधित किया।

इसी क्रम में बुद्ध तपोभूमि पर महाबोधि सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा बोधगया में आयोजित भगवान बुद्ध की 2550वीं त्रिविध पावन जयंती का उद्घाटन करते हुए धर्मगुरु दलाईलामा ने करुणा और अहिंसा को बौद्ध धर्म का आधार बताया। उन्होंने मन के शुद्धिकरण पर बल दिया। इस अवसर पर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित 'सम्बोधि' पुस्तक का लोकार्पण भी हुआ।

नालंदा की संगोष्ठी में दूसरे दिन बिहार के राज्यपाल गोपालकृष्ण गाँधी ने अपने संबोधन में कहा कि आज के परिप्रेक्ष्य में बंदूक के साए में शांति स्थापित करना मुश्किल है। इस अवसर पर राज्य सभा सदस्य निर्मला देश पाण्डेय ने समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि जिस प्रकार गंगा की उत्स गंगोत्री है उसी प्रकार विश्व में नालंदा की धरती से प्रेम, शांति, ज्ञान, सद्भाव एवं बंधुत्व की धारा प्रवाहित हो रही है।

डॉ॰ गोपाल शरण सिंह, नालंदा

बिहार में युवा एवं फिल्म महोत्सव संपन्न

रचनात्मक दृष्टिकोण को लोगों के समक्ष रखने तथा देश के युवाओं को अपनी शक्ति और रचनात्मक सोच के लिए बिहार की राजधानी पटना में आयोजित 11वें युवा महोत्सव का उद्घाटन करते हुए केंद्रीय मंत्री मणिशंकर अय्यर ने इस तरह के आयोजन को बिहार के लिए गौरव व सम्मान की बात बतायी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इस अवसर पर जिस बिहार में अब तक कुछ नहीं होता था उसी बिहार में अब हर दिन कुछ न कुछ होता रहेगा। बिहार के खेल मंत्री जनार्दन

सिंह सिग्रीवाल ने कहा कि इस महोत्सव के माध्यम से खराब होती बिहार की छवि को खत्म करने की कोशिश की गई है। उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने युवाशक्ति को देश की वास्तविक पहचान करार दिया।

देश भर के राज्यों से लगभग चार हजार युवा प्रतिभागियों ने अपने हैरतअँगेज कारनामों से दर्शकों को सांस्कृतिक परिवेश का दर्शन कराया। इस महोत्सव ने 'अनेकता में एकता' की कहावत को चरितार्थ किया, क्योंकि भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के एक मंच पर हुए इस समागम में कुछ यूं देखने को मिला-

अलग भाषा, अलग वेश,
फिर भी अपना एक देश।
बिहार हो या गुवाहाटी,
फिर भी अपनी एक माटी।

डॉ॰ शाहिद जमील, पटना से

संचालक डॉ॰ शिवनारायण की पुस्तक 'विद्रोहिणी कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान' का लोकार्पण डॉ॰ पांडे ने किया।

कमजोर पर लिखा जाए और न कमजोरी को बख्शा जाए

–डॉ. गोविन्द व्यास

विगत 16 फरवरी को नई दिल्ली के हिंदी भवन में अक्षरम संस्था द्वारा आयोजित अशोक स्वतंत्र के प्रथम व्यंग्य काव्य-संग्रह चौपाल ढहाकों की के लोकार्पण समारोह की अध्यक्षता कर रहे डॉ॰ गोविंद व्यास ने कहा कि कमजोर पर न लिखा जाए और न कमजोरी को बख्शा जाए।

पुस्तक का लोकार्पण करते हुए सप्रसिद्ध व्यंग्यकार अशोक चक्रधर ने कवि स्वतंत्र को अश्लीलता से बचने वाला मौलिक हास्य-व्यंग्य का कवि बताया, जिसकी रचनात्मक प्रतिभा का स्विच कभी ऑफ नहीं होता।

इस अवसर पर आलोक पुराणिक, राकेश दुबे, राजेश कुमार श्रीवास्तव ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन अक्षरम के अध्यक्ष कवि राजेश चेतन तथा धन्यवाद ज्ञापन अनिल जोशी ने किया।

'समकालीन हिंदी पत्रकारिता और स्त्री विमर्श' पर उदयराज सिंह स्मृति व्याख्यान

विचार कार्यालय पटना। पिछले दिनों 'नई धारा' के संस्थापक एवं संपादक स्व॰ उदयराज सिंह की स्मृति में आयोजित उदयराज सिंह स्मृति व्याख्यान के तहत चर्चित लेखिका और दैनिक 'हिंदुस्तान' की संपादक मृणाल पांडे ने समकालीन हिंदी पत्रकारिता और स्त्री

विमर्श विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए 'स्त्री विमर्श' को पत्रकारिता की मुख्य धारा से जोड़ने की वकालत की।

हिंदी की सुप्रसिद्ध समालोचिका डॉ॰ भूपेन्द्र कलसी की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम की शुरुआत डॉ॰ रीना सहाय के मंगलाचरण से हुई। डॉ॰ पांडे ने एक निजी चैनल से कहा कि बिहार एक ऐसा राज्य है जो जागेगा तो पूरे सूबे में सुख-समृद्धि और खुशहाली आएगी। इस अवसर पर कार्यक्रम के

साहित्य अमृत द्वारा युवा प्रतिभाएँ सम्मानित

विचार कार्यालय, दिल्ली। भारतीय संस्कृति के सच्चे पुरोधा विद्यानिवास मिश्र की प्रथम पुण्य तिथि पर नई दिल्ली के हिंदी भवन में साहित्य अमृत की ओर से आयोजित समारोह में युवा हिंदी कहानी प्रतियोगिता के पुरस्कृत रचनाकार पंकज कुमार, आस्था नवल और शाकिर अमरोही को क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय तथा ओ.पी. ओझा, जयकुमार गुप्ता और दिलीप कुमार को सांत्वना पुरस्कार से तरूणाई के सर्जनात्मक कृतित्व और अभ्यर्थना के लिए प्रोत्साहित करने की दृष्टि से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर साहित्य अमृत के संपादक डॉ॰ एल.एम. सिंघवी, मृदुला सिन्हा तथा वागीश शुक्ल आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहित्यकार रामदरश मिश्र ने की।

साझा कृति 'मयुरा' का लोकार्पण

'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर के संपादकत्त्व में सद्यः प्रकाशित मनसिंह युगल किशोर प्रसाद एवं राजभवन सिंह की साझा कृति 'मयुरा' का लोकार्पण करते हुए सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं बी.एन. कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो॰ राम बुझावन सिंह ने कहा कि लोकार्पित पुस्तक में नवही, जैसे नए-नए पौराणिक शब्द का जिस प्रकार प्रयोग एवं विवेचन हुआ है उससे हिंदी साहित्य समृद्ध हुआ है।

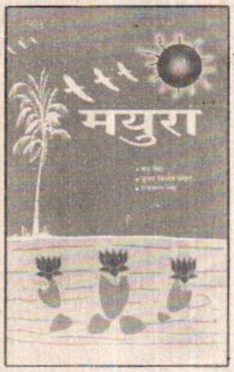

समारोह के मुख्य अतिथि तथा आर.एन. कॉलेज हाजीपुर (वैशाली) के पूर्व स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो॰ (डॉ॰) नवल किशोर प्र॰ श्रीवास्तव ने 'मयुरा' की समग्र रूप से समीक्षा के क्रम में इसे हिंदी भारती के भंडार में एक अभाव की पूर्ति का सफल प्रयास करार देते हुए कहा कि इसके कलाकारत्रयी ने जहाँ समकालीन वातावरण और परिस्थितियों का यथातथ्य चित्रांकन किया है, वहाँ तीनों ही अपने-अपने तेवर ओर अभिव्यक्ति में भिन्न दृष्टिगोचर होते हैं। इन्होंने 'मयुरा' छायावादक मर्मज्ञ का अर्थ आकाश में दमकता तथा हुआ विद्या प्रकाश बता। मगध विश्वविद्यालय के गुरु गोविंद सिंह महाविद्यालय के पूर्व हिंदी प्राध्यापक प्रो॰ (डॉ॰) दीनानाथ 'शरण' ने इस साझा कृति के तीनों लेखकों को सहृदय और सफल साहित्यकार बताते हुए कहा कि इन सभी की रचनाओं में उनके पाण्डित्य तो उद्भासित होते ही हैं, उनके व्यक्तित्व भी झलकते हैं।

काव्य चेतना के सशक्त हस्ताक्षर तथा ख्यातिप्राप्ति समीक्षक नचिकेता ने इस अवसर पर कहा कि यह कोई जरूरी नहीं कि कोई भी रचना किसी न किसी सिद्धांत पर ही आधारित हो। इसलिए पुस्तक के प्रकाशन के पूर्व याबाद में सिद्धांतों का प्रतिपादन आवश्यक नहीं दिखता। इसके संपादक ने अपने संपादकीय में मुक्ति बोध के शब्दों में सच ही कहा है कि इन रचनाकारों की संकल्पधर्मी चेतना का रक्तप्लावित स्वर बोलता है इस संग्रह में और यही इसकी सार्थकता है। अपने अध्यक्षीय उद्गार में भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी रहे संघ साहित्यकार राम उपदेश सिंह 'विदेह' ने कहा कि धैर्य और विश्वास से परिपूर्ण 'मयुरा' के इन तीनों गौण रचनाकारों ने हिंदी साहित्य के इतिहास में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है और साहित्य की समकालीन चेतना से अपने को जोड़कर रखा है।

प्रारंभ में 'मयुरा' के संपादक सिद्धेश्वर ने इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए अपने संपादकीय वक्तव्य में कहा कि सत्साहित्य ही किसी रचनाकार को उसकी पहचान बनाता है। अपने इस कथन को कवि दिनेश रघुवंशी की इन पंक्तियों को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया-

'साथ चलने का इरादा जब जवां हो जाएगा,
आदमी मिल आदमी से कारवां हो जाएगा।
तू किसी के पांव के नीचे तो रख थोड़ी जमीं,
तू भी नजरों में किसी की आसमा हो जाएगा।'

इसके पूर्व समारोह के मान्य अतिथिों एवं सभी श्रोताओं का स्वागत और अतिथियों के प्रति आभार प्रकट किया 'मयुरा' के राजभवन सिंह ने।

कालिदास के 'मेघदूत' की राम भरोसा द्वारा अनुदित कृति

'मेघदूतम् इन इंगलिश भर्स' का लोकार्पण

विचार कार्यालय, पटना। विगत 19 फरवरी को पिपुल्स कोओपरेटीव, पटना के कॉम्यूनिटी हाल में विश्वविख्यात कालिदास के खंडकाव्य 'मेघदूत की राम भरोसे' द्वारा अनुदित कृति 'मेघदूतम इन इंगलिश भर्स' का लोकार्पण किया हिंदी एंव संस्कृत के विद्वान राजपाल शास्त्री राकेश जी ने, पटना विश्वविद्यालय के पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष डा॰ उमाशंकर शंकर शर्माऋषि ने संस्कृत में लिखे कालिदास के मूल काव्य का अँग्रेजी

में अनुदित इस कृति के बारे में कहा कि इसमें छंद से अधिक ध्यान रखा गया है। इस अवसर पर 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने चर्चा करते हुए उनकी समझ से मेघदूत का हिंदी में पद्द अनुवाद करके उम्र के 85वें पड़ाव पर पहुँचे इस कवि से आज नई पीढी को प्रेरणा लेने तथा अपने प्रगाढ़ संबंधों की चर्चा करते हुए सिद्धेश्वर ने पुनः कहा कि उनके सन्निध्य में रहकर उन्हें कभी कुछ सीखने-समझने का अवसर मिला है। लोकार्पित पुस्तक पर पुरुषोत्तम उपाध्याय, डा॰ कामेश्वर उपाध्याय आदि ने भी अपने उदगार व्यक्त किए।

अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गौरवान्वित किया साहित्यकार अजातशत्रु, गीतकार मृत्यूंजय मिश्र 'करुणेश' आर. पी. घायल तथा बाबूलाल मधुकर ने।

- शिवकुमार, पटना से।

भारद्वाज की एक साथ आठ कृतियाँ लोकार्पित

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन के समागार में इसके अध्यक्ष इ॰ जगदीश पाण्डेय की अध्यक्षता में आयोजित एक समारोह में युवा रचनाकार की आठ कृतियों-द्वापर दृश्य, पंछी अब कुछ कहता है, सुहागरात, हैप्पी न्यूइयर भाई जी, बेटा बैंगचूर, छलकती नजर, परान के फोंकी और सुलभ हिंदी व्याकरण और रचना का लोकार्पण प्रो॰ बलराम तिवारी, डा॰सच्चिदानन्द सिंह 'साथी, सतीश राज पुष्करणा तथा कृष्णा नन्द कृष्ण के हाथों हुआ। इस अवसर पर नगर के कई साहित्यकार मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन डा॰ पुष्करणा तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो॰ हारून रशीद ने किया।

- लखन सिंह, पटना से।

सोनिया के इस्तीफे पर किसने क्या कहा

प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह ने सोनिया को देश की सबसे कद्दावर नेता करार देते हुए कहा कि उन्होंने इस्तीफा देकर नैतिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता का परिचय दिया है जिसकी कोई मिसाल नहीं है।

पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने सोनिया के इस्तीफे को एक अच्छी परंपरा की शुरूआत कही। इसी प्रकार प्रतिपक्ष के नेता लालकृष्ण आडवाणी ने कहा कि भाजपा की कड़ी प्रतिक्रिया के कारण ही सोनिया गाँधी को त्याग पत्र देने के लिए विवश होना पड़ा।

सोनिया गाँधी के इस्तीफे को रेल मंत्री लालू प्रसाद ने जहाँ राजनीतिक जीवन में उच्च आदर्श की परंपरा कायम करने की बात करते हुए उनके त्याग व बलिदान के कसीदे पढ़े, वहीं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने इसे मजबूरी में उठाया गया कदम करार देते हुए जया बच्चन की राज्य सभा से सदस्यता खारिज करने का स्वाभाविक परिणाम बताया, इसलिए इसे त्याग नहीं कहा जा सकता।

इसी प्रकार उमा भारती ने नकली त्याग बताते हुए कहा कि उन्होंने शर्म छुपाने के लिए ऐसा किया है।

आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू ने कहा कि सोनिया गाँधी उस जाल में फंस गई हैं जो उन्होंने जया बच्चन जैसे समाजवादी नेताओं के लिए बिछाया था। मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कहा कि सोनिया के पास इस्तीफा देने के अलावा कोई और विकल्प नहीं था।

सोनिया गाँधी के इस्तीफे के बाद काँग्रेस नेता डॉ॰ कर्ण सिंह ने जहाँ राज्य सभा और भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद के अध्यक्ष पद से इस्तीफा देते हुए कहा कि परिषद के अध्यक्षता लाभ का पद नहीं है वहीं सपा के राष्ट्रीय महासचिव अमर सिंह ने राज्यसभा से इस्तीफे की पेशकश ठुकरा दी है।

तमिलनाडु की मुख्यमंत्री जयललिता ने सोनिया के इस्तीफे को नाटक करार देते हुए कहा कि उन्होंने सहानुभूति बटोरेने की परिस्थितियों का फायदा उठाया। हाल ही में मनोनीत राज्यसभा की सदस्य कपिला वात्सायन ने भी इस्तीफा दे दिया है।

दरअसल लाभ पद पर चुने हुए जनप्रतिनिधियों का बने रहना जायज है या नहीं, असली मुद्दा है। अद्यतन जानकारी के अनुसार भाजपा के 10, काँग्रेस के 10 माकपा के नौ, सपा के पाँच और राजद, जद (यू) तथा शिरोमणि अकाली दल के एक-एक सांसद लाभ के पद पर आसीन हैं।

इसी प्रकार झारखंड विधान सभा द्वारा लाभ के पद को लेकर आनन-फानन में जिस प्रकार विधेयक पास कराया गया और उसको लेकर जिस तरह का बवाल हुआ, उसे अच्छी मिसाल कतई नहीं कहा जा सकता।

ऐसी स्थिति में जब भारतीय राजनीति की नैतिकता में लगातार गिरावट होती जा रही है, अनिल अंबानी ने राज्यसभा की सदस्यता से इसलिए इस्तीफा दिया कि सार्वजनिक जीवन में उन्हें उच्च मानदंड स्थापित करने हैं और पारदर्शिता, नैतिक मूल्यों, शुचिता व किसी विवाद को ध्यान में रखते हुए उन्होंने तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दिया है जबकि लाभ के पद को लेकर उठे विवाद में फिलहाल उनका नाम नहीं घसीटा गया था पर किसी के उँगली उठाने से पहले अंबानी ने यह कदम उठाकर आज के राजनेताओं के गाल पर तमाचा दिया है।

नई दिल्ली में अहिंसा समवाय द्वारा अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

नई दिल्ली। अणुव्रत महासमिति की इकाई अहिंसा समवाय द्वारा नई दिल्ली के अणुव्रत भवन सभागार में 26 मार्च को आयोजित एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में अहिंसा प्रशिक्षण की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए अहिंसा समवाय के संयोजक श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि मनुष्य की हिंसा विरोधी शक्तियों को निरंतर गति प्रदान करने के लिए अहिंसा प्रशिक्षण जरूरी है। अहिंसा समवाय की सार्थकता पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि अहिंसा समवाय मिले-जुले प्रयास की कार्य-संस्कृति को विकसित करने का एक सार्थक प्रयास है जिसके द्वारा सुख के साथ-साथ बोझिल दुःखों को भी बाँटने का कार्य किया जाता है। श्री सिद्धेश्वर ने देश के संकट और समस्या सहित चुनौतियों का सामना मिल-जुलकर करने की आवश्यकता पर बल देते हुए बहेलिये के उस षडयंत्रपूर्ण जाल की चर्चा की, जिसे खगवृंद ने मिलकर सामूहिक प्रयास से विफल किया था और सभी पक्षियों की जान बचाई थी।

अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के प्रभारी डॉ० आलम अली ने दो सत्रों में प्रशिक्षणार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण के क्रम में प्रेक्षाध्यान कराया। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं भारतीय रेल के पूर्व उपनिदेशक डॉ० सोमदत्त शर्मा 'सोम' ने प्रशिक्षण कार्यशाला को संबोधित करते हुए कहा कि जीवों की हत्या न करना ही केवल अहिंसा नहीं है, बल्कि आपके पास बैठे प्यासे को पानी पिलाना तथा भूख से कराहते हुए को दो रोटी देना भी अहिंसा है। उन्होंने पुनः अहिंसा के विविध स्वरूप पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए छोटे-छोटे प्रयासों को साकार रूप प्रदान करने पर बल दिया।

कार्यशाला के पांचवें सत्र में 'अहिंसा और शाकाहार' विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ० (श्रीमती) कुसुम लूनिया ने अहिंसा के लिए शाकाहार प्रवृत्ति को अपनाने की आवश्यकता जताई। उल्लेख्य है कि पांच सत्रों में आयोजित इस एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला में अहिंसक शक्तियों के एक मन के लोग तथा राष्ट्रीय विचार मंच सहित लगभग एक दर्जन समानधर्मी संस्थाओं के कुल तीस प्रतिनिधियों ने भाग लिया जिन्हें कार्यशाला के समापन सत्र में अहिंसा समवाय के संयोजक तथा नई दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' के संपादक श्री सिद्धेश्वर ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किया। तदुपरांत अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री श्री बाबूलाल गोल्छा ने आभार व्यक्त करते हुए 'विचार दृष्टि' के दिल्ली प्रतिनिधि श्री उदय कुमार 'राज' को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए विशेष रूप से धन्यवाद दिया।

-विचार प्रतिनिधि, दिल्ली से

प्रेरणात्मक प्रसंग

मोतिहारी जिले के चकिया प्रखंड स्थित भिरिखिया गाँव की 59 वर्षीया अनपढ़ गिरिजा देवी ने गंदी बस्तियों के विकास, मुसहर जाति के उत्थान और नशाखोरी के खिलाफ जीवन भर संघर्ष कर जो उदाहरण प्रस्तुत किया वह अन्य लोगों के लिए प्रेरणात्मक प्रसंग है। वह न तो हिंदी जानती है और न अँग्रेजी। केवल भोजपुरी में ही अपनी बात कहनेवाली गिरिजा देवी ने स्थानीय संस्था सामाजिक शोध एंव विकास केंद्र के मार्गदर्शन से भिरिखिया वार्ड सं०तीन की सदस्य के पद पर रहकर अपने जीवन के सैंतीस साल गंदी बस्ती में बिताते हुए यह मुकाम हासिल किया है कि उसे अमेरिकी संस्था डिविजन फाँर एवपांडेय आफ वीमन डिपार्टमेंट आर्फ इकोनामिक्स एंड सोसल अफेयर्स गिरिजा देवी को मुख्य वक्ता के रूप में अमेरिका के न्यूयार्क में 27 फरवरी से 10 मार्च तंक चलनेवाले अंतरराष्ट्रीय समारोह में आंमत्रित किया था। जहाँ वह पासपोर्ट उपलब्ध नहीं होने के कारण नहीं जा सकीं।

गंदी बस्ती में शिक्षा और स्वास्थ्य की चेतना जगाने के साथ-साथ नशाखोरी के खिलाफ समाज की महिलाओं को गोलबंद कर गिरिजा देवी ने लंबे समय तक मिटाकर ही चैन लिया। अंतरराष्ट्रीय सस्था ने कीचड़ कें खिले इस कमल को अमेरिका की संस्था न गुलामी का जीवन जी रही गिरिजा को सम्मानित किया।

प्रतिभा का सम्मान : मुंबई में मास्टर ब्लास्टर सचिन तेंदुलकर को टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक 35 शतक बनाने के लिए सोने का बल्ला भेंट करती स्वर कोकिला लता मंगेशकर।

रेणु की 85वीं जयंती

बिहार विकास कर सकता है रेणु की रचनात्मकता से सीख लेकर – बिहारविधानसभाध्यक्ष

मंच द्वारा पटना में विचार संगोष्ठी संपन्न

अमरकथा शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु न केवल एक सजग साहित्यकार थे, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन के सक्रिय सिपाही एवं समाजवादी जन आंदोलन के नायक भी। उन्होंने सामाजिक वेदना को अपनी कहानियों के माध्यम से कागज पर उतारने का काम किया। सिद्धांत एवं नीतियों के लिए समर्पित जीवन व्यतीत करनेवाले रेणु की रचनात्मकता से सीख लेकर बिहार विकास के मार्ग पर जा सकता है। ये उदगार हैं बिहार विधानसमाध्यक्ष श्री उदयनारायण चौधरी के जिसे उन्होंने रेणु के 85वें जयंती समारोह के अवसर पर राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा पटना के सिन्हा लाइब्रेरी सभागार में आयोजित एक विचार संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए व्यक्त किए।

श्री चौधरी ने बुद्धिजीवियों की जमात की तुलना लौंगी मिर्च से की जो आकार में भले ही छोटा हो लेकिन उसके सशक्त विचार समाज में सार्थक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने में सक्षम रहते हैं।

संगोष्ठी के मुख्य वक्ता कवि सत्यनारायण ने इस अवसर पर कहा कि साहित्यकार समाज का नवनिर्माण न कर नवनिर्माण के लिए मानसिक पृष्ठभूमि तैयार करता है, समाज की वास्तविक परिस्थितियों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट करता है। रेणु की याद को ताजा रखने तथा उनसे प्रेरणा ग्रहण करने के लिए मंच की ओर से इन्होंने पटना में निर्माणाधीन हिंदी भवन के सामने अथवा गाँधी मैदान के पश्चिमी छोर बैंक रोड (बी.पी. कोईराला पथ) चौराहा पर सरकार की ओर से रेणु की आदमकद प्रतिमा स्थापित करने संबंधित एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से पारित किया गया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में 'विचार दृष्टि' के संपादक तथा मंच के राष्ट्रीय महासचिव श्री सिद्धेश्वर ने कहा कि रेणु की साहित्यिक दृष्टि काफी व्यापक थी और उन्होंने अपनी रचनाओं में बिहार के गाँवों के बारे में समग्र दृष्टि डाली है। रेणु के बहुचर्चित उपन्यास 'मैला आँचल' का प्रमुख पात्र वावन दास बिहार के नवनिर्माण की बात करता है, विकास का सूत्र सुझाता है। बिहार आज जिस स्थिति से गुजर रहा है इसमें रेणु के साहित्य द्वारा सही मार्ग की पहचान हो सकती है और सही मार्ग की पहचान से ही इस राज्य का नवनिर्माण हो सकता है। उन्होंने पुन: कहा कि रेणु ने बिहारवासियों में परिवर्तन की व्याकुलता को राजनीति से आगे बढ़कर व्यवहार में लाने का प्रयत्न किया था। जे.पी. आंदोलन में जिस प्रकार उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लेकर बिहार को भ्रष्टाचार से मुक्ति दिलाने का संकल्प लिया उससे भोग-विलास और लालच से भरे आज के हमारे नेता सीख लेकर बिहार को विकास की पटरी पर ला सकते हैं। आत्मसम्मान से भरे रेणु ने 1971 में केंद्र सरकार से प्राप्त पदमश्री सम्मान को 1974 में वापस कर दिया था। आज वैसे साहित्यकारों को रेणु से सीख लेनी चाहिए जो पुरस्कार-सम्मान पाने के लिए किसी भी स्तर तक उतर जाते हैं। संगोष्ठी के विशिष्ट अतिथि तथा आर.एन. कॉलेज, हाजीपुर के पूर्व हिंदी विभागाध्क्ष प्रो॰ नवल किशोर प्र॰ श्रीवास्तव ने कहा कि रेणु ने कलम के साथ क्रांति का रास्ता अपनाया।

पटना उच्च न्यायालय के प्रखर अधिवक्ता तथा बिहार प्रशासनिक सुधार आयोग के सदस्य श्री वसंत कुमार चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि रेणु के साहित्य से राजनेताओं एवं जनता दोनों को सीखने की आवश्यकता है क्योंकि एक दृष्टि-संपन्न एवं ईमानंदार साहित्य सृजक रेणु की कथाओं में बिहार लोक जीवन और मानवीय सरोकार अपनी संपूर्ण विविधताओं में बोलते-बतियाते से लगते हैं। समाज के आगे-आगे चलनेवाले रेणु जी उस शासक की तरह थे, जो देश व राज्य की राजनीतिक सत्ता को समय-समय पर रास्ता दिखाने का काम किया।

पटना विश्वविद्यालय के उर्दू विभागाध्यक्ष प्रो॰ असलम आजाद ने अपने संबोधन में कहा कि रेणु ने अपने संवेदना से युक्त हृदय के तले पर बिहार के ग्रामीण अंचल में बसे लोगों की स्थिति को सही परिप्रेक्ष्य में देखा, महसूस किया और अपनी सारस्वत सर्जना में उकेरा। सिन्हा लाइब्रेरी के पुस्तकाध्यक्ष डॉ॰ रामशोभित प्र॰ सिंह ने कहा कि साहित्य को कला का उत्कृष्ट रूप माना जाता है। रेणु के साहित्य में कला का यह उत्कृष्ट रूप स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है और उसके तत्त्व सही मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं।

संगोष्ठी के निर्धारित विषय बिहार का नव-निर्माण और रेणु का प्रवर्तन करते हुए लोकतंत्र रक्षावाहिनी, बिहार के संयोजक प्रो॰ योगेन्द्र प्रसाद सिन्हा ने कहा कि यथार्थवादी जीवन दृष्टि और मानवतावादी चिंतन से भरे रेणु लोकतांत्रिक मूल्यों की परिरक्षा के लिए सतत संघर्षशील रहे ओर भ्रष्टाचार के विरुद्ध संकल्पित भी।

विचार दृष्टि के सांस्कृतिक प्रतिनिधि डॉ॰ अरुण कुमार गौतम के मंगलाचरण से प्रारंभ संगोष्ठी में पधारे अतिथियों एवं सभी श्रोताओं का स्वागत किया मंच के उपाध्यक्ष डॉ॰ एस.एफ रब ने तथा मंच के सचिव मनोज कुमार ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सफल संचालन किया मंच की बिहार इकाई के महासचिव तथा 'विचार दृष्टि' के उपसंपादक डॉ॰ शाहिद जमील ने।

मनोज कुमार, पटना से

•

पंजाब में तीन दिवसीय अणुव्रत कार्यशाला संपन्न

प्रस्तुति: बालकृष्ण भंडारी

अहिंसा यात्रा के प्रवर्तक आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में विगत 10 मार्च से 12 मार्च तक अणुव्रत महासमिति, दिल्ली तथा अणुव्रत समिति एवं अणुव्रत महिला समिति, जगराओं अनुमंडल में आयोजित अणुव्रत कार्यशाला संपन्न हुई जिसकी अध्यक्षता अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष तथा अणुव्रत पाक्षिक के संपादक डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट ने की। प्रत्येक दिन तीन कालांशों में शैक्षिक कार्यक्रम के अंतर्गत अणुव्रत दर्शन, संस्था संचालन, वक्तव्य कला, जीवन शैली, अहिंसा प्रशिक्षण तथा अणुव्रत कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा हुई। आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने अपने प्रवचन में जहाँ संयममय जीवन शैली अपनाने पर बल दिया, वहीं पंजाबवासियों में तेजी से पनपती भ्रूण हत्या तथा नशा जैसी सामाजिक दुष्प्रवत्तियों के लिए चिंता एवं क्षोभ व्यक्त किया।

कार्यशाला के समापन प्रवचन के दिन तो आचार्य प्रवर ने यहाँ तक कह डाला कि पंजाब में 'अहिंसा परमोधर्म:' के बदले 'हिंसा परमोधर्म:' कहा जाना उचित होगा। इसके सुधार के लिए पंजाबवासियों को केवल उनके आशीर्वाद लेने से नहीं, बल्कि उनके द्वारा अहिंसक जीवन शैली को व्यवहार में लाना होगा। युवाचार्य श्री महाश्रमण ने भी इस अवसर पर जीवन शैली के व्यावहारिक बदलाव पर जोर दिया। मुनिश्री सुखलाल ने अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हुए संकल्प शक्ति एवं असंप्रदायिक दृष्टि के विकास के साथ-साथ नैतिक और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा की बात कही।

मुनि मोहजित कुमार ने जीवन शैली पर अपनी बात प्रस्तुत करते हुए जहाँ व्यवहार की शालीनता, सबके प्रति संवेदनशीलता, अनुरागता, संयम, विनम्रता, श्रम तथा करुणा पर बल दिया, वहीं योगासन, सकारात्मक चिंतन, आत्म-चिंतन, समय-प्रबंधन, स्वभाव परिवर्तन, सृजनात्मक चेतना और आत्म संतुलन का अभ्यास करने की सलाह दी। उन्होंने अपना संबोधन इन पंक्तियों से समाप्त किया-

'जाम पीओ तो ऐसा कि फिर पीने की प्यास रहे।
जिंदगी जीओ तो ऐसी कि फिर जीने की आस रहे।।'

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट ने जहाँ वक्तव्य एवं संयोजन कला के आधार बिंदु पर कम बोलने, विषय पर बोलने, प्रभावी बोलने, नयापन रखने के साथ-साथ वेशभूषा, विषयज्ञान तथा वाणी संयम को प्रमुख माना, वहीं अणुव्रत के व्यावहारिक पहलू में संस्कार विहीनता और पारिवारिक अस्वस्थता के कई बिंदुओं पर प्रकाश डाला। राष्ट्रीय अणुव्रत शिक्षक संसद के उपाध्यक्ष मियाज बेग मिर्जा ने कार्यशाला को संबोधित करते हुए संस्था संचालन के विभिन्न आयामों को विस्तार से प्रस्तुत किया।

दिल्ली से पधारे अहिंसा समवाय के संयोजक तथा 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर ने इस कार्यशाला में अहिंसा प्रशिक्षण की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि समाज में हो रहे बदलाव और लोगों के नजरियों में सकारात्मक परिवर्तन के मद्देनजर प्रशिक्षण की व्यवस्था से न केवल लोगों की कमियाँ/खामियाँ दूर होंगी बल्कि हिंसा विरोधी शक्तियों को निरंतर गति प्रदान करते रहने से शांति स्थापित होगी और समाज में सद्भाव का वातावरण बनेगा, क्योंकि अहिंसा के विभिन्न स्वरूपों के प्रशिक्षण से समय और समाज के विवेक और अंतरात्मा को जगाने की भूमिका भी तैयार की जा सकेगी।

कार्यशाला समापन के दिन अणुव्रत समिति, जगराओं की अध्यक्षा श्रीमती रोजी गोयल की भूमिका भी अत्यंत सराहनीय इसलिए रही कि उनके परिवार के न केवल तीन पीढ़ियों के गोयल परिवार ने इस कार्यशाला को सार्थकता प्रदान करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ा, अपितु पंजाब के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित कुल अठारह अणुव्रत समितियों के प्रतिनिधियों को इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करने का अवसर प्रदान किया जिसका लाभ श्रोताओं को यह मिला कि पिछले तीन दिनों की कार्यशाला में व्यक्त विचारों द्वारा पंजाबवासियों में व्याप्त सामाजिक दुष्प्रवृत्तियों से मुक्ति पाने की जो बेचैनी छाई थी उसे राहत तब मिली जब पंजाब की ही एक जीवंत संभ्रांत एवं संपन्नमहिला प्रतिनिधि श्रीमती लक्ष्मी मित्तल ने अपने उद्‌गार में यह आशा व्यक्ति और लोगों को यह विश्वास दिलाया कि यह बात भी नहीं कि यहाँ के लोग नहीं सुधरने की कसम खाई है, बल्कि सच तो यह है कि रोजी गोयल जैसी महिलाओं ने जिस प्रकार लोगों को झकझोरना और आंदोलित करना प्रारंभ कर दिया है, हालात में शीघ्र ही सुधार की संभावना प्रबल हो गई है।

समापन कार्यशाला को सर्वश्री बाल कृष्ण भंडारी, जी. एल. नाहर आदि ने भी संबोधित किया। श्रीमती रोजी गोयल ने कार्यक्रम का संचालन कर अपनी संगठन क्षमता का परिचय दिया। अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं कार्यशाला में भाग लेनेवाले सभी प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

DENSA

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan & Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285, 54471, Fax: 55286

&

DANBAXY

PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDC Tarapur,

Dahisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 28974777, Fax: 28972458
MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

हैदराबाद की चिट्ठी

चंद्र मौलेश्वर प्रसाद

कभी गाँधीजी ने सादा जीवन उच्च विचार का संदेश दिया था, परंतु अब सारे देश में आडंबर सर्वव्यापी है चाहे शादी हो, मंदिर हो या फिर राजनीति जब तक ताम झाम नहीं आकषर्ण नहीं। गाँधीजी का नाम लेते नहीं अघाती कांग्रेस पार्टी ने हैदराबाद में इसी तामझाम की झलक दिखाई। अवसर था 21 जनवरी 2006 को आरंभ होनेवाला काँग्रेस पार्टी का अधिवेशन। सारे नगर को बैनरों और स्लोगनों से सजा कर दुल्हन बना दिया गया। अब इसमें कितना पार्टी का धन लगा और कितना सरकारी खाते से, यह तो किसी के भी अनुमान का विषय है। इतना खर्च करके यदि गरीब जनता की सुविधा के लिए कॉलेज, अस्पताल, वृद्धाश्रम आदि बनाया जाता तो क्या गाँधीजी का उद्देश्य सार्थक नहीं होता इस पर सभी राजनीतिक पार्टियाँ दृष्टि डालें तो संभव है कि जनता और देश का उत्थान हो।

प्रदर्शनी: कभी राजे-महाराजे इसी तामझाम के लिए बदनाम थे कि वे जनता का शोषण करके ऐश करते थे। ऐसे ही ऐश का एक प्रतीक था उनके जवाहरात का शौक-जो किसी की भी आँखों को चकाचौंध कर देता। हैदराबाद के निजाम का स्थान कभी संसार के प्रथम धनी में गिना जाता था। उनके द्वारा संग्रहित जवाहरात की प्रदर्शनी। एक जनवरी 2006 से आम जनता के लिए सालारजंग संग्रहालय में लगाई गई। इस प्रदर्शनी में 16 हजार करोड़ रुपये मूल्य के आभूषणों को देखा जा सकेगा जिसमें बहुचर्चित 400 करोड़ मूल्य का जैकब हीरा भी है जो आकार में विश्व के सातवें नंबर का माना जाता है।

साहित्य : सारे देश में हिंदी-उर्दू के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद की 125 वीं जयंती मनाई जा रही है। हैदराबाद में 9-10 जनवरी 2006 को दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ने दो-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया जिसमें देश से पधारे साहित्यकारों ने भाग लिया। इस अवसर पर प्रेमचंद की भाषाई चेतना नामक पुस्तक का भी विमोचन किया गया जिसके संपादक-द्वय हैं प्रो॰ दिलीप सिंह एवं प्रो॰ ऋषभदेव शर्मा।

हिंदी अकादमी, दिल्ली के उपाध्यक्ष एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ मुकुन्द द्विवेदी; दिल्ली विश्वविद्यालय की डॉ॰ विभा गुप्ता; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के प्रो. सत्यकाम; दिल्ली के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ॰ हीरालाल बाछोतिया; हिंदी अकादमी, दिल्ली के सचिव श्री नानकचंद; चेन्नई से दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा के कुल-सचिव प्रो॰ ऋषभदेव शर्मा, एन. सी. ई. आर. टी., नई दिल्ली के डॉ॰ लालचंद राम आदि के साथ-साथ स्थानीय साहित्यकारों ने इस दो-दिवसीय संगोष्ठी में भाग लिया। संगोष्ठी के अंत में 10-11 जनवरी 2006 को हिंदी अकादमी, दिल्ली के सौजन्य से प्रेमचंद के उपन्यास रंगभूमि का सफल मंचन दिल्ली से पधारे रंगकर्मियों ने प्रस्तुत किया जिसका निर्देशन सुरेन्द्र शर्मा ने किया।

बाल फिल्मोत्सव : पंडित जवाहरलाल नेहरू का जन्मदिन 14 नवम्बर बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है। 14 नवम्बर 2005 को हैदराबाद में 14 वाँ अंतरराष्ट्रीय बाल फिल्मोत्सव मनाया गया जिसमें देश-विदेश के बाल-चलचित्र का प्रदर्शन किया गया। एक सप्ताह तक चले इस उत्सव में 25 से अधिक देशों के 170 फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। विदेशी फिल्मों में अमेरिका फ्रांस, लंदन, रूस, चीन, जर्मनी, आस्ट्रेलिया, ब्राजील, ईरान, जापान, कनाडा, डेनमार्क, बंग्लादेश, हांगकांग, सिंगापुर आदि की फिल्में उल्लेखनीय रहीं।

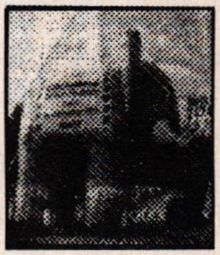

इस फिल्मोत्सव में ईरान ने 5 पुरस्कार प्राप्त किया परंतु सर्वश्रेष्ठ फिल्म के लिए 'स्वर्ण हाथी' और एक लाख रुपये नगद का पुरस्कार गया चीन की फिल्म 'चिल्ड्रन ऑफ नोमाड्स' के लिए रजत नंदी और 50 हजार रुपये का पुरस्कार दिया गया।

संगीत : आंध्र प्रदेश सांस्कृतिक विभाग तथा संगीत मार्तण्ड पद्म विभूषण पंडित जसराज के तत्वावधान में 30 नवम्बर को 33 वाँ पंडित मोतीराम पंडित, सत्यजीत तलवलकर, वी. पी. रमणामूर्ति, मुकुंद पाटेकर और सुरेन्द्र भारती के साथ गायन प्रस्तुत किया जिनका भरपूर आनंद देर रात तक श्रोता लेते रहे।

कला : हैदराबाद के लक्षणा आर्ट गैलरी में चित्रकार चित्रा के भित्ति कला व चित्रकला की कलाकृतियों की प्रदर्शनी दिसम्बर 2005 तक लगाई गई। इन चित्रों में सामाजिक स्तर पर घटनेवाली घटनाओं के अंतर्गत मनुष्यों के मध्य आत्मीय संबंधों को दर्शाया गया है।

चित्रकार ने मानवीय संवेदनाओं को अपनी कला के द्वारा सजीव रूप देने में सफलता पाई जिसके लिए प्रशंसकों ने चित्रा को बधाई दी।

संपर्क- 1-8-28, यशवंत भवन
अलवाल, सिकंदराबाद
500010 आं. प्र.

पद्मश्री के॰पी॰सक्सेना को व्यंग्यश्री सम्मान

विगत 13 फरवरी को नई दिल्ली के हिंदी भवन में पुरुषोत्तम हिंदी भवन न्याय समिति द्वारा व्यंग्य-विनोद के यशस्वी रचनाकार स्व॰ गोपाल प्रसाद व्यास की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित ''व्यंग्यश्री'' सम्मान समारोह-2006 में वरिष्ट साहित्यकार विष्णु प्रभाकर के हाथों, व्यंग्यकार पद्मश्री के॰पी॰ सक्सेना को व्यंग्यश्री सम्मान से नवाजा गया। मनोहर श्याम जोशी की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे डा॰ विश्वनाथ त्रिपाठी जिन्होनें अपने उद्गार में कहा कि साहित्यकार जब विषमता पर प्रहार करता है तब जाकर एक कालजयी रचना का जन्म होता है।

इस अवसर पर हिंदी भवन के संस्थापक पं॰ गोपाल प्रसाद व्यास की प्रतिमा का अनावरण करते हुए विष्णु प्रभाकर ने कहा कि स्व॰ व्यास जी के प्रयास का ही फल है यह हिंदी भवन और यह पुरस्कार योजना।

सम्मानित श्री सक्सेना ने व्यंग्य लेखन की कला पं॰ व्यासजी से ही सीखा और आज की छिछोरेपन एंव अश्लीलता के कारण ही उन्होंने कवि सम्मेलनों में जाना छोड़ दिया।

अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री जोशी ने कहा कि आज जो विषम परिस्थितियाँ हैं, हास्य से ज्यादा व्यंग्य की माँग करती हैं। कार्यक्रम का संचालन डा॰ हरीश नवल ने तथा हिंदी भवन के मंत्री गोविन्द व्यास के आभार व्यक्त किया।

विंदा करंदीकर को 39वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार

वर्ष 2003 का 39वाँ ज्ञानपीठ पुरस्कार आधुनिक मराठी कविता के मुर्धन्य प्रयोगधर्मी कवि विंदा करंदीकर को प्रदान किया गया। 23 अगस्त, 1918 को जन्में विंदा एक अच्छे निबंधकार, आलोचक और अनुवादक हैं। इन्होंने सृजन के सौंदर्य की परिपूर्णता की खोज और लेखकीय आत्मसंघर्ष अर्जित करते हुए एक लंबा सर्जनात्मक जीवन जीया है। इन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार, कबीर सम्मान व साहित्य अकादमी जैसे अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

मलयाली कवि प्रो॰ पणिक्कर को 'सरस्वती सम्मान'

के॰ के॰ बिड़ला फांउडेशन द्वारा प्रतिवर्ष दिया जानेवाला 'सरस्वती सम्मान' वर्ष 2005 के लिए सुप्रसिद्ध मलयाली कवि प्रो॰ के॰ अयुय्पा पणिक्कर को उनके संकलन अयुय्पा पणिक्कर कृतिकल-1990-99! के लिए दिया गया। सन् 1991 से दिए जा रहे इस सम्मान की राशि पाँच लाख रुपए है। यह पुरस्कार दस साल की अवधि में 22 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा को दिया जा रहा है।

कवि कुँवर नारायण को शलाका सम्मान

'तीसरा सप्तक' के कवि और 'आत्मजयी' के रचयिता कुँवर नारायण को साहित्य जगत में योगदान के लिए हिंदी अकादमी ने वर्ष 2005-06 का प्रतिष्ठित शलाका सम्मान से 29 मार्च को कमानी सभागार में मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के हाथों नवाजा गया। सम्मान स्वरूप उन्हें एक लाख ग्यारह हजार एक सौ एक रुपए, शॉल, प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

'काका हाथरसी सम्मान' हास्य कवि महेन्द्र अजनबी सहित अन्य 11 साहित्यकारों में अमर नाथ शुक्ल, इंदुजा अवस्थी, परमानंद पांचाल, प्रताप सहगल, तेज सिंह, देवेंद्र राज अंकुर, प्रकाश मनु, रेखा अग्रवाल, मीरा कांत, आलोक मेहता और राजशेखर व्यास को भी हिंदी भाषा एवं पत्रकारिता में विशिष्ठ सेवा के लिए 21 हजार रुपए नकद, शॉल, प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। इसके अलावा 10 साहित्यिक कृतियों को भी सम्मानित किया गया।

विचार कार्यालय, दिल्ली से।

'उजाले का शिल्पी' में जीवन का यथार्थ

डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ के अद्यतन कहानी संग्रह 'उजाले का शिल्पी' पर संपन्न विचार संगोष्ठी में साहित्यकार हिमांशु जोशी ने कहा कि इसमें जीवन का यथार्थ है। पत्रकार प्रभाष जोशी ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस संग्रह की कहानियों में मूल्य हैं, जीवन का सत्य है और कालजयी तत्व है। अपने संदेश में विष्णु प्रभाकर जी ने जहाँ इन कहानियों को मानवीय मूल्यों को समर्पित और मन को छूनेवाली बताया।

हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर डॉ॰ रामदरश मिश्र ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि इन कहानियों में डॉ धर्मेन्द्र ने जिन मूल्यों की बात की, उन्हें स्वयं जिया भी है। डॉ॰ विश्वनाथ त्रिपाठी ने ऐसे साहित्य की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इसमें स्वाधीनता आंदोलन की महान विरासत की झलक है। डॉ॰ परमानंद पांचाल ने कहा कि ये कहानियाँ आत्मीयता के साथ शुचिता का संदेश देती है। डॉ॰ आरती श्रीवास्तव के मंगलाचरण से प्रारंभ इस कार्यक्रम का संचालन करते हुए डॉ॰ रमाशंकर श्रीवास्तव ने विश्व प्रकाश के संस्मरणात्मक आलेख का पाठ किया और नमन प्रकाशन के नितिन गर्ग ने आभार व्यक्त किया।

- उदय कुमार 'राज', विचार प्रतिनिधि, दिल्ली से।

पद्‌मश्री डॉ॰ शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव : जिनकी साहित्य और राजनीति में वरेण्यता सदैव बनी रही

सिद्धेश्वर

स्वतंत्र भारत में आज जब राजनीति लोक सेवा न होकर स्वार्थ-सेवा हो गई है, पद्‌मश्री डॉ॰ शैलेन्द्र नाथ श्रीवास्तव इसी राजनीति में रहकर और कई बार सत्ता की कुसी पर रहते हुए भी न केवल प्रजातंत्र की नैतिकता और मूल्यवत्ता को टुकड़े-टुकड़े होने से बचाने का हर संभव प्रयास करते रहे, बल्कि हिंदी साहित्य को भी समृद्ध करने में उन्होंने अपना योगदान दिया। सभा-संगोष्ठियों में वे बराबर कहा करते थे कि राजनीति लोक सेवा के लिए है, जनता के संपूर्ण विकास के लिए है तथा जनतांत्रिक शक्तियों और प्रवृत्तियों के विकास के लिए है। इसी विचार के अनुरूप साहित्यकार और राजनीतिज्ञ दोनों की भूमिका में उनकी वरेण्यता सदैव बनी रही। अपनी इस भूमिका का निर्वहन करते हुए सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों से मुक्त होकर लोक-सेवा तथा लोक मंगल के लिए वे समर्पित रहे और अपने राजनीतिक दल भाजपा के पिछलग्गू तथा प्रवक्ता नहीं बन पाए। उन्होंने कभी भी संकीर्ण राजनीति का हिस्सा बनकर अपने दल के घोषणा-पत्रों और प्रस्तावों को साहित्य का जामा नहीं पहनाया। राजनीति में रहकर भी प्रो॰ श्रीवास्तव उसके न तो दास बने और ना ही अनुयायी अथवा सहचर। सत्ता की शक्तियों ने भी इस साहित्यकार को अपना गुलाम नहीं बना पाया और निर्भय होकर कई बार वे राजनीति के दंश को झेलते हुए जनता में जाग्रति उत्पन्न करते रहे। उनकी यह विचार दृष्टि उनके साहित्यिक-लेखों में स्पष्ट देखने को मिलती है। इनकी रचनाओं में सहनशील कारुणिकता दृष्टिगोचर होती है। इसी वजह से बुरे-से-बुरे व्यक्ति को भीतर भी एक अखंडित मनुष्यता की उदार करुणाशीलता की तलाश वे कर लेते थे।

डॉ॰ श्रीवास्तव की महत्ता इस बात में निहित है कि रचनाओं में साहित्यिक गहराई और मनोवैज्ञानिक बारीकियाँ इस प्रकार व्यक्त हुई हैं कि पाठकों के लिए वे सुलझी, सुगम और आकर्षक हैं, क्योंकि वे पेचीली और उलझन पैदा करने वाली नहीं है। इसके साथ ही उनकी कृतियों में जीवन-दर्शन का सहज आभास होता है, कारण कि कोई आदर्श ऊपर से चिपका दिया गया नहीं है। डॉ॰ श्रीवास्तव को साहित्य और शिक्षा विरासत में मिला था। उनके पिता प्रो॰ मुरलीधर श्रीवास्तव भी एक मुर्धन्य साहित्यकार एवं शिक्षाविद् थे। अपने पिता के पद्‌चिन्हों पर चलकर प्रो॰

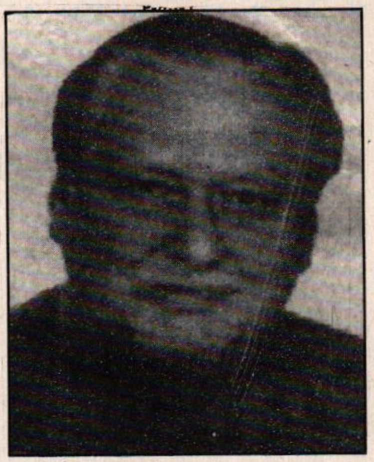

शैलेन्द्र जी भी एक लोकप्रिय शिक्षक, हिंदी साहित्य के ख्याति प्राप्त लेखक, कर्मठ सामाजिक व राजनीतिक कार्यकर्ता रहे। वे एक प्रखर विद्वान संघर्षशील जन प्रतिनिधि तथा आत्मीयता से भरे मित्र थे। पटना मध्य बिहार विधान सभा में पटना मध्य क्षेत्र तथा संसद में पटना संसदीय क्षेत्र का उन्होंने प्रतिनिधित्व भी किया। इसके अतिरिक्त तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति तथा बिहार अंतर विश्वविद्यालय बोर्ड के अध्यक्ष पद को भी उन्होंने सुशोभित किया। सन् 1958 में पटना विश्वविद्यालय से हिंदी की स्नातकोत्तर परीक्षा में उन्होंने प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। भारतीय संस्कृति के उपासक प्रो॰ श्रीवास्तव 'संस्कार भारती' के आजीवन राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर रहकर अपनी संस्कृति की रक्षा करने का हमेशा उन्होंने प्रयास किया।

प्रो॰ शैलेन्द्र जी सदैव कहा करते थे कि यदि आप भारतीय संस्कृति को हरी-भरी देखना चाहते हैं तो अपना पानी उसे दें। भक्त रैदास ने भी पानी की महत्ता को समझते हुए कहा था, प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी; प्रभु जी तुम दीया हम बाती', चंदन पानी के साथ यदि नहीं घिसे तो वह काष्ठ खंड मात्र है। इसी प्रकार बाती के बिना लौ की कल्पना नहीं की जा सकती है। ठीक उसी प्रकार व्यक्ति ही किसी संस्कृति की अभिव्यक्ति होता है। इस संदर्भ में डॉ॰ श्रीवास्तव ने व्यक्ति में करुणा को महत्त्व दिया। उनका मानना था कि आज के भौतिकवादी युग में करुणा के सूखते जाने से इस देश व समाज को एक करने में न कानून सफल है, न शिक्षा और न समतावादी राजनीति-दर्शन; क्योंकि ये सभी व्यक्ति को केंद्र में रखते हैं जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के स्तर पर भेद और असमानता में वृद्धि हो रही है जबकि भारतीय संस्कृति का प्रयत्न व्यक्ति को निरंतर विभाजित करना है बृहत्तर समष्टि में। करुणा के अभाव में सर्वमयता का कोई आधार नहीं बनता। करुणा के बिना सर्वमयता हवा में विचरण करती रहती है। करुणा से व्यक्ति अपने आप दूसरे को अपनी बाहों में समेट लेता है। यही कारण है कि शैलेन्द्र जी को गतिमय भारतीय संस्कृति में आस्था थी, रूढ़ियों में नहीं। जब आम्रपाली का अभिमान

जर्जर हो गया था तब भगवान बुद्ध ने अपने को साधने के लिए करुणा की और आम्रपाली को अंगीकारा। करुणा अनुग्रह नहीं, अपितु भारतीय संस्कृति की महाशक्ति है। करुणा को कमल कहा गया है। इस दृष्टिकोण से शैलेन्द्र जी का मानना था कि जब तक सर्व के लिए व्यक्ति के हृदय में और व्यक्ति के लिए सर्वमय के हृदय में करुणा की धारा उद्वेलित नहीं होती तब तक एकता महसूस नहीं की जा सकती।

डॉ॰ श्रीवास्तव एक संवेदनशील एवं विश्वनीय यथार्थ के अतिशयरहित संयमित साहित्यकार थे। वे कभी भी करुणा, सेक्स या आक्रोश की अतिशयता में नहीं गए। ऐसे साहित्यकार का प्रभाव भी अनंतकाल तक होता है। पद, पैसे, प्रभाव से संपन्न रहनेवाले व्यक्ति को ही जहाँ आज बड़ा माना जाता है, वहीं इन भिन्न आधारों पर ऊँचा स्थान निर्धारित करने के बाद भी डॉ॰ श्रीवास्तव ने अपने आपको कभी बड़ा नहीं समझा। कारण कि उन्होंने इस परंपरागत परिभाषा को खंडित कर एक नया, सहज, स्वाभाविक और मानवीय प्रतिमान यह उपस्थापित किया कि व्यक्ति के भीतर कितना बड़ा समाज है। यही कारण है कि समाज को जितना देना था, उन्होंने दिया। पिछले तीन दशक से मैं उनके इतने निकट रहा हूँ कि वे मुझे अनुज तुल्य समझने लगे थे। यद्यपि मैं उनके दल में कभी नहीं रहा फिर भी राजनीति में मैंने उनका जमकर साथ दिया। यहाँ तक कि जब मैं भारतीय लेवा एवं लेखा परीक्षा विभाग (Indian Audit & Accounts Department) के प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) कार्यालय, बिहार में विभिन्न पदों पर कार्यरत रहा उस अवधि में भी पटना संसदीय क्षेत्र से उनके चुनाव लड़ने पर निर्भय होकर मैंने नौकरी की बिना परवाह किए न केवल उनका प्रचार-प्रसार किया, बल्कि कई चुनावी सभा की अध्यक्षता भी की। नहीं यह सब उनकी आत्मीयता और मुझ पर उनके स्नेह-भाव के कारण ही मैंने किया कोई अनुग्रह भाव से नहीं। सजग नागरिक होने के नाते यह मेरा नैतिक व राष्ट्रीय दायित्व भी था।

डॉ॰ श्रीवास्तव के देहावसान के बाद आज जब मैं उनका स्मरण करता हूँ, तो उनकी मूल्य-निष्ठा एवं उनके गहन स्वाध्याय तथा सरस पांडित्य एवं अपनापन की छवि सहसा स्मृति पटल पर उभरने लगती है। अभी-अभी पिछले तीन माह पूर्व ही तो अणुव्रत आंदोलन के प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ के काव्य रूप पर दिल्ली के महरौली स्थित अध्यात्म साधना केंद्र के अणुव्रत सभागार में जब एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ था, तो प्रो॰ शैलेन्द्र जी ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था कि महाप्रज्ञ ने अपनी कविताओं के माध्यम से हिंदी की नई परिभाषा ही है कि हिंदी हृदय की भाषा है। इनकी अध्यात्म एवं भक्ति परक कविताएँ इतिहास के साथ-साथ समस्त मान्यताओं को भी चुनौती देती हैं। मेरा यह सौभाग्य था कि मैं भी इस अवसर पर उपस्थित था। उस दिन शैलेन्द्र जी के साथ हमने भोजन किया और लगभग पूरे दिन साथ-साथ दिल्ली में कई स्थानों का भ्रमण के दौरान बड़ी अंतरंगता के साथ विभिन्न मुद्दों पर हम दोनों की बातें होती रहीं। मुझे क्या पता था कि उनसे मिलने का वह आखिरी दिन था। उनके न होने की रिक्तता की वजह से मेरे मन में एक उदासी और विषाद की रेखा उभर आती है।

प्रो॰ शैलेन्द्र जी का स्मरण होते ही हमारे सामने आज के बदलते परिवेश में एक ऐसे सक्षम सर्जक की छवि उभरती है जिसने बदलते साहित्यिक-राजनीतिक परिदृश्यों को अपनी रचनाओं एवं विचारों के माध्यम से अंकित ही नहीं किया था, बल्कि अंकित करने में पहल भी की थी। साहित्यिक-राजनीतिक चेतना के वे द्रष्टा ही नहीं, भोक्ता भी थे। उनके पास पैनी अंतर्भेदी दृष्टि थी। वे सदैव अपने साहित्यिक-राजनीतिक परिवेश से जुड़े रहे और बिना परिवेश से जुड़े आदमी अपने को नहीं पहचान पाता। वसंत के बीच पिछले 12 फरवरी को हृदय गति रुक जाने के कारण वे अचानक चल बसे और जिस आसक्ति के साथ साहित्य व राजनीति से जुड़े उसे एकाएक निरासक्त होकर छोड़ दिया। अपनी पत्नी प्रो॰ वीणा श्रीवास्तव, एकमात्र पुत्र पारिजात सौरभ और दो पुत्रियों सहित हमारे जैसे हजारों शुभच्छुओं से सदा-सर्वदा के लिए उन्होंने विदा ले लिया।

मुझे अच्छी तरह याद है पिछले वर्ष बिहार विधान सभा के सभागार में आयोजित हमारे सद्यः प्रकाशित सेनूर्यू काव्य संग्रह 'जागरण के स्वर' के लोकार्पण समारोह में मुख्य अतिथि के पद से जब उन्होंने अपने उद्गार के जरिए हमारा मनोबल बढ़ाया था हमें सहलाया और हमें हमेशा क्रियाशील रहने की प्रेरणा प्रदान की भी तो मैं भाव-विरवल हो गया था। सच मानिए ऐसे ही श्रेष्ठ साहित्यकार की प्रेरणा पाकर हमारी क्रियाशीलता ने मुझे कभी निष्क्रिय नहीं होने दिया, हममें सदा जिजीविषा बनी रही। उन्हीं से मैंने भी सीखा है अपना सबकुछ लुटाकर रीत जाना और रीतकर भी धरती से प्रति दान की अपेक्षा न करना, बल्कि मिट्टी में मिल जाना मंगल घट की तरह।

वस्तुतः मेरे अस्तित्व की यह जिजीविषा मुझमें अदम्य साहस और ऊर्जा प्रदान करती है, जो किसी भी परिस्थिति में मुझे ढहने से रोकती है, अन्यथा कितने ही ऐसे अवसर आए जब मैं ढह सकता था। सच मानिए प्रो॰ शैलेन्द्र जी की प्रेरणा का ही प्रतिफल है कि मेरे भीतर की जिजीविषा मुझे संभाले हुए है। जड़ों में व्याप्त ऊर्जा मुझे अपने कर्म-पथ से विचलित होने नहीं देती। मेरे रग-रग में समाई कुछ कर गुजरने की उत्कुंठा मुझे उदासीन नहीं होने देती। प्रो॰ शैलेन्द्र जी के प्रति मेरे मन और हृदय में अनुभूति और सम्मान का जो रंग चढ़ा है यह नहीं छूटेगा, गंध का वह रिश्ता नहीं टूटेगा, ऐसी मेरी समझ है। कारण उनके द्वारा चढ़ाया गया साहित्य और राजनीति का वह रंग बहुत गहरा है और गंध का वह रिश्ता अटूट है।

कहना नहीं होगा कि इस देश के सामाजिक जीवन में धर्म का विशिष्ट स्थान रहा है, बल्कि सच तो यह है कि धर्म

शेष पृष्ठ 49 पर

बासुदेव नारायणः जिनका सान्निध्य सदैव स्मरणीय रहेगा

सिद्धेश्वर

एक शतक से अधिक अपनी जीवन-यात्रा का सफर तय कर मशहूर संगीतज्ञ पूज्य मामा बासुदेव नारायण जनवरी 2006 को पटना जिलांतर्गत बाढ़ अनुमंडल स्थित चौधरायनचक नामक अपने पैत्रिक गाँव में सदा के लिए मौन हो गए और अपने परिवार एवं सगे-संबंधियों सहित मेरे जैसे अनेक लोगों के लिए एक उज्ज्वल एवं अनुकरणीय विरासत छोड़ गए। मुझे अच्छी तरह याद है कि जब प्रवेशिका परीक्षा पास कर पटना कॉलेज, पटना में इंटरमेडियट के प्रथम वर्ष में मैंने नामांकन कराया था उन्हीं के सान्निध्य में मुझे रहने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन दिनों वे पटना के अशोक राज पथ स्थित पटना साइकिल वर्क्स का दायित्व बड़ी निष्ठा से संभाल रहे थे और कर्म को ही उन्होंने पूजा समझा था। सच मानिए तो गीता का सार 'कर्म ही पूजा है' का ज्ञान मुझे भी मामा जी से ही मिला और आज तक मैं उन्हीं के बताए रास्ते पर चल रहा हूँ। धार्मिक प्रवृति और निर्मल मन के हमारे पूज्य बड़े मामा स्व० बासुदेव नारायण ने अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन में न तो कभी शिथिलता बरती और न ही उनसे बचने का प्रयास किया।

अपने इलाके में सामाजिक मनोवृत्ति और अतिथि सत्कार के लिए प्रसिद्धि पाए नाना होरिल बाबू के सबसे बड़े सुपुत्र बासुदेव नारायण को संगीत में बड़ी दिलचस्पी थी। हारमोनियम पर जब कभी मैं उनके गीत सुनता था मेरे हृदय में एक आशा की हरियाली पैदा हो जाती थी। शुरू के दिनों में उन्होंने मुझे भी अँगुली पकड़कर हारमोनियम बजाने का अभ्यास कराया था जिसका परिणाम यह हुआ कि एक-दो गीतों के मुखड़े को आज भी हारमोनियम पर मैं गा-बजा लेता हूँ। उनके सान्निध्य के प्रसाद का फल मुझे अभी भी जीवंत और स्वस्थ बनाए रखा है जो सदैव स्मरणीय और प्रेरणास्पद रहेगा। पूज्य मामा जी जब कभी भी मेरे निवास आते थे तो मेरे बच्चों को संस्कृत के दो-चार श्लोक न केवल सुनाते थे, बल्कि उनकी कापियों पर लिखकर उन्हें याद करने को कहते थे। गीता और रामायण की छोटी-छोटी पुस्तकें भेंट करना वे कभी नहीं भूलते थे। उनके बोल-चाल, उनकी भाषा और उनकी अभिव्यक्ति इतनी

सरल और मीठी होती थी कि परिवार के हम सभी सदस्य उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनते थे। कथनी और करनी में सदा सामंजस्य रखनेवाले मामाजी मन, वचन और कर्म से एक थे और उनके वचनों में एक युग बोलता था। सचमुच अपने जीवन काल में ही वे एक मिथ की भाँति स्थापित हो गए। मैं महसूस करता हूँ कि मेरे हृदय में उनका नाम सदैव अमर रहेगा, क्योंकि उनके प्रति हमारे हृदय में हमेशा श्रद्धा व सम्मान रहा। आखिर तभी तो जैसे ही उनके बड़े सुपुत्र बालेश्वर के द्वारा चौधरायनचक गाँव से दूरभाष पर उनके निधन का मुझे समाचार मिला तत्काल उपलब्ध गाड़ी से बाढ़ स्थित उमानाथ घाट के लिए मैं रवाना हो गया और उनके दाह-संस्कार में सम्मिलित होकर उन्हें श्रद्धा-सुमन अर्पित किया। सच मानिए मामाजी की दिलकश आवाज का जादू आज भी मेरे सिर चढ़कर बोलता है और उन्हें स्मरण कर मुझे कुछ गुनगुनाने का मन करने लगता है। उनकी अपनी एक अलग जीवन शैली थी जिसके तहत उनका खान-पान, योग-ध्यान, नित गंगा-स्नान और संगीत का अभियान उन्हें औरों से अलग करता था। सत्य और अहिंसा के पुजारी मामा जी के आचरण, व्यवहार, स्वभाव और कर्मों ने मेरे जीवन को बहुत प्रभावित किया। इनके जीवन में मैंने एक चारित्रिक स्पष्टता देखी। अपनी कमियों, कमजोरियों और आदतों को लेकर इनमें न तो कोई खास दुराव ही रहा और न ही अपराध-बोध। भले ही ये अपने पारिवारिक जीवन की समस्याओं और समाज-मित्र वर्ग आदि पर अपना ध्यान केंद्रीत नहीं कर पाए, किंतु इनके आचरण और व्यवहार इनके नैतिकता-बोध और गहरे भारतीय संस्कारों से जुड़े रहे। अपनी जिंदगी में उच्च आदर्शों को ओढ़नेवाले सादगी - करुणा की प्रतिमूर्ति मामा बासुदेव नारायण सही मायने में सत्यान्वेषी थे जिनके लिए अपनी आत्मा की आवाज सर्वोपरि थी और जिसका पालन उन्होंने मरते दम तक किया।

विचारों को व्यक्ति के विचार का आईना माना जाता है। जीवन में विचारों और चिंतन का अपना एक विशेष महत्त्व है। मामाजी के व्यक्तित्व की यह विशेषता रही कि उनके विचार न केवल अच्छे थे, बल्कि उनके संपूर्ण जीवन में सार्थक विचारों और चिंतन का एक खास महत्व रहा। मैंने अनुभव किया कि व्यर्थ की सोच के पचड़े में पड़कर ये कभी तनावग्रस्त नहीं हुए। इनकी सोच सदैव सार्थक और सकारात्मक होती थी। इन्होंने मानवता के धर्म से बड़ा कोई धर्म नहीं माना। जिस प्रकार भारतीयता की मूल प्रवृति ही सबके लिए सुख की कामना है-

'सर्वेभवंतु सुखीनः, सर्वे संतु निरामयाः।' दरअसल इनकी विचारधारा प्रजातांत्रिक विवेक के आधार पर ज्यादा गढ़ी हुई थी। यही कारण है कि मानवीय जीवन में शुचिता और सार्वजनिक जीवन में पारदर्शिता पर ये सर्वाधिक बल देते रहे। इनके स्वयं के जीवन में भी ये गुण स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते थे जिसे केवल मैं ही नहीं, बल्कि इनके समकालीन भी महसूस करते रहे। इनकी नैतिक शक्ति और चारित्रिक पवित्रता बड़ी-से-बड़ी भौतिक शक्ति को अपने आगे झुकाने की ताकत रखती थी। बंधन-मुक्त जीवन, सच्चाई, सरलता, निर्मलता, सुख और दुख में अविचल अवस्था, निर्भयता, आत्मत्याग और अहिंसा से हमें साक्षात्कार में सहयोग मिलेगा, यही बासुदेव बाबू की अवधारणा थी। इनकी इस अवधारणा से सहमत होना इस लिए आवश्यक जान पड़ता है कि तेजी से बदलते इस उपभोक्तावादी-भौतिकवादी युग में शांति से जीने के लिए इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। इस लिहाज से इनके अनथक परिश्रम, लक्ष्य पर पहुँचने की व्याकुलता, कठिनाइयों से जूझने की ताकत से लोग प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं और निराशा के विरूद्ध आशा का संचार उनमें हो सकता है। इन्हीं सब कारणों से इनके साथ मेरा संबंध अनवरत रूप से प्रगाढ़ रहा। स्नेह के अपार सागर थे मेरे मामाजी। इनके स्नेह की शीतल छाया तले कोई भी सुख की नींद सो सकता था। इनसे मिलना सुख और संतुष्टि से भर जाना होता था। हमारे घर इनका आना घर के सदस्य का उपस्थित होना था। मेरे भीतर एक नयी स्फूर्ति का आना होता था उनका आगमन। ऐसे स्फूर्तिदायक और प्रेरणास्पद पूज्य मामा बासुदेव बाबू को मैं अपनी तथा 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी पावन-स्मृति को नमन करता हूँ।

●

........पृष्ठ 47 का शेषांक

सामाजिक जीवन का नियामक रहा है। यहाँ धर्म का बौद्धिक-पक्ष दर्शन से संबद्ध रहा है और भाव-पक्ष आचार एवं कर्मकांड से। प्रो॰ श्रीवास्तव का रुझान धर्म के बौद्धिक पक्ष से रहा, क्योंकि विदेशी संस्कृति और विचार धाराओं के पांव पसारते जाने की वजह से एक ओर जहाँ बौद्धिक-पक्ष दुर्बल होता गया, वहीं दूसरी ओर धर्म में कर्मकांड एवं अंध विश्वासों का प्रसार होता गया। इसी का दुष्परिणाम है कि धर्म और भक्ति निराश और भय से त्राण पाने के साधन मात्र बनकर रह गए। प्रो॰ श्रीवास्तव का ध्यान इसी सांस्कृतिक गतिरोध को दूर करने की ओर हमेशा रहा। इसी के मद्देनजर उन्होंने अपने विचारों को कुरूपता, शोषण, अनाचार, तीर्थव्रत, पंडा-पुरोहित-वर्ग की स्वार्थपरता, लोलुपता एवं पाखंडभरी मान्यताओं की कटु आलोचना की ओर केंद्रित किया। उन्होंने धर्म की रूढ़ परिकल्पना का निषेध करके नैतिकता का मानव-जीवन के संदर्भ में औचित्य स्थापित किया। इनके साहित्य में राष्ट्रीय चरित्र की गहरी समझ, अद्भुत ग्रहणशीलता और गतिशीलता का स्पंदन महसूस होता है। वे अपने समय और समाज की सच्चाई और चेतना से सही मायने में संपृक्त थे। रचनाओं में उनकी गहरी मानवीय दृष्टि और निम्न एवं मध्य वर्ग के प्रति संवदेना के लिए प्रो॰ शैलेन्द्र जी को भुलाया नहीं जा सकता। ऐसे वक्त मुझे याद आती है किसी कवि की ये पंक्तियाँ–

'वो चले भी गए और देखा नहीं
एक तमन्ना लबों पर मचलती रही।'

भारतीय संस्कृति और परंपरा को वे जितना समझते थे उतना ही परिवर्तन को भी। प्रो॰ श्रीवास्तव भारतीय जीवन मूल्यों के पक्षधर थे। भारतीय संस्कृति को वे सदा जीवा की रसगर्भ समझते थे। कहना नहीं होगा कि वे अपनी जड़ों से गहरे रूप से जुड़े थे और वहीं से उन्हें जीवन का रस मिलता था। एक ललित निबंध कार के रूप में, भाषा संस्कृति, साहित्य, समाज, और राजनीति के विमर्श में, चिंतक के रूप में तथा एक सुलझे व्याख्याता के रूप में उनके योगदान को भी विस्मृत नहीं किया जा सकता। मात्र 71 वर्ष की आयु में ही अपनी जीवन-यात्रा से मुक्ति पानेवाले इस साहित्यकार-राजनीतिज्ञ का मूल्यांकन अभी शेष है, उनकी समग्र संपूर्णता में उनका विश्लेषण अभी शेष है। शैलेन्द्र जी का मूल्यांकन तटस्थ दृष्टि से करने की आवश्यकता है।

मार्च, 1936 में बिहार के बक्सर जिले में जन्में डॉ॰ श्रीवास्तव का रचना कर्म विपुल मात्रा में तो नहीं, पर जो कुछ उन्होंने लिखा वे जनमानस की संवेदना की प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं- लिफाफा देखकर, ललित निबंधनिराला जीवन और साहित्य, अद्भुत रस और भारतीय काव्य शास्त्र (शोध प्रबंध), कलम उगलती आग का संपादन, बहुत दिनों के बाद, शब्द पके मन आँच में (कविता संग्रह), शिक्षा के नाम पर, समय और समाज, भारतीय कला संस्कृति (निबंध संग्रह-प्रकाश्य), दुर्गा सप्तशती (हिंदी काव्यानुवाद), इतिहास का सच और जयप्रकाश जी का निरंतर संघर्ष (जीवनी), ये रचनाएँ अद्वितीय ज्योति हैं, जो सदैव लोक को अलौकिक करती रहेंगी, ऐसा मेरा विश्वास है। राजनीति के एक पंडित और हिंदी साहित्य के मर्मज्ञ प्रो॰ शैलेन्द्र जी को मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ अनवर गाज़ियाबादी के इस शेर से-

'जब तक भी मेरे दिल पे तेरा अक्स न उभरा,
मैं तुझे कब से शीशा बदन देख रहा हूँ।'

●

पृष्ठ 50 का शेषांक........

अपने अनुज की यादों को संजोए हैं। उनकी पीड़ा की कल्पना की जा सकती है। सेवानिवृति के बाद अपने गाँव में ही शेष जीवन बिताने का राजेन्द्र बाबू का संकल्प इस बात का परिचायक है कि ग्रामीण परिवेश से उन्हें बेहद लगाव था। आखिर तभी तो हमारे बार-बार आग्रह के बावजूद पटना में रहना उन्होंने कभी पसंद नहीं किया। राजेन्द्र बाबू के शरीर त्यागने से हमारा एक सच्चा मार्गदर्शक खो गया, पर सत्य का शाश्वत तार लंबा और लंबा ही बढ़ता जाता है। मर कर भी अमर रहेंगे हमारे अग्रज और हमारे हृदय में युग-युग जीवित रहेंगे राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा जी। उ०प्र० के डेयरी विकास निगम में उच्च पद पर आसीन शिवेन्द्र के रूप में हमारे बड़े भाई एक नया पौध लगा गए जिसे सींच कर बड़ा पेड़ मैं देख पाऊँगा, यही मेरी अभिलाषा है और आकांक्षा भी। अपने परिवार और 'विचार दृष्टि' परिवार की ओर से मैं अपने बड़े भाई के प्रति अपार श्रद्धा निवेदित करता हूँ।

आर0 पी0 सिन्हा:
हमारी आस्था के एक और अग्रज अलविदा

सिद्धेश्वर

हर कदम के राही, हमारी आस्था के अग्रज और राह को प्रशस्त करनेवाले हमारे बड़े भाई राजेन्द्र प्रसाद सिन्हा का पिछले दिनों विदा हो जाना हमारे लिए एक अपूरणीय क्षति है। राजेन्द्र बाबू के हाथ हमारी पीठ पर तो रही ही उनके कदम भी साथ-साथ बढ़ते रहे। चौधरी उच्च विद्यालय, हुसेनपुर में हमसे दो साल के सिनियर उन्होंने राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर राँची विश्वविद्यालय से वर्ष 1960 में की और मैं पटना विश्वविद्यालय से 1962 में। इंडियन ऑडिट एण्ड एकाउंट्स डिपार्टमेंट के इक्जामिनर ऑफ लोकल एकाउंट्स में उनकी नियुक्ति सन 1962 में हुई और मैंने उसी विभाग के महालेखाकार कार्यालय में सन् 1964 में राँची में पद भार ग्रहण किया। एस०ए०एस की परीक्षा भी उन्होंने हमसे दो वर्ष पूर्व पास की। राँची में हम दोनों सपरिवार तबतक साथ रहे जबतक कि हमारा तबादला पटना नहीं हो गया। पटना आने के बाद मैं और मेरे परिवार के सभी सदस्य वंचित हो गए उनके स्नेह से, हालांकि जबतब अपनी उपस्थिति से वे हमें प्रोत्साहित करते रहे।

उनके जाने के बाद आज जब मैं उन्हें स्मरण करता हूँ तो उनसे जुड़ी यादें हमारे मानस-पटल पर एक-एक कर रेखांकित हो रहे हैं जिन्हें यहाँ शब्दों में बाँधना आसान नहीं। लंबे समय तक साथ रहने के कारण उनके विचारों को समझने-सीखने का मुझे सुयोग प्राप्त हुआ था। श्रद्धा और सम्मान की साधना जो मैंने उनके साथ रहकर सीखी वह मेरे लिए वरदान सिद्ध हुई और वह कभी सूखनेवाली नहीं, क्योंकि उन्होंने मुझे रचनात्मक शिक्षा प्रदान की। इनके काम पत्थर पर भी हरियाली से खुशहाली लाने के रहे। जब कभी किसी बात को लेकर उदास हुआ हमारे होठों पर मुस्कान लाना इन्हीं के बस की बात रही। उनका नाम वैसे तो राजेन्द्र प्र० सिन्हा था, पर अपने करीबियों में वे आर०पी०सिन्हा के नाम से जाने जाते थे।

राजेन्द्र बाबू समाज के उन गिने-चुने नागरिकों में थे। जो बौद्धिक गुणों से भरपूर तो थे ही, एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं समन्वय को बढ़ाते रहते थे। अपने पूर्वजों का मूल तलाशने और अतीत एवं वर्तमान में संबंध कायम करने की उन्होंने कोशिश की। समाज

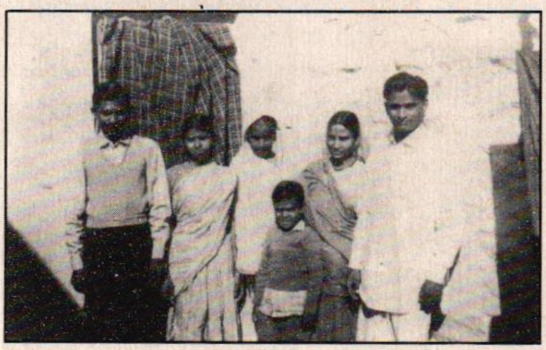

व राष्ट्र के हर अंग की खामियों और युवावर्ग में फैले असंतोष को देखते हुए उन्हें ऐसा प्रतीत होता था कि हम देशवासी लापरवाह हैं, जो रोशनी की किरण को स्वीकार किए बिना गुजर जाने देते हैं। वे हमेशा कहते थे कि समाज और राष्ट्र के रोग लाइजाज नहीं हैं, इसके लिए जरूरत है उसके कारणों की खोज कर उन अवरोधों को हटाने की और विकास की किरणों को आखिरी छोर तक पहुँचाने की। बदलते दौर में श्रद्धेय सिन्हा जी के ये विचार आज उतने ही प्रासंगिक हैं जितना इंसान का सांस लेना।

आर०पी०सिन्हा के व्यक्तित्व की खासियत यह कि सहजता और सौम्यता साफ झलकती थी। कोई आडंबर नहीं और न ही किसी बात की पर्दादारी। जबतक वे नौकरी में रहे, एक जुनून था काम करने का। नयी राह दिखी तो दौड़ पड़ा मंजिल छूने। उनका कहना था कि यदि आसमान छूना है तो जमीन पर रहना जरूरी है और सबसे पहले अपने प्रति ईमानदार बनो, तब सपने देखो ऐसे सपने पूरा करने में आनंद भी आएगा। मैं इस मायने में सौभाग्यशाली हूँ कि राजेन्द्र बाबू जैसे मुझे अग्रज मिले। हर किसी को ऐसा अग्रज नहीं मिलता, ऐसा इंसान मिलना आसान नहीं। राजेन्द्र बाबू मेरे लिए एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक एहसास थे जिनकी वजह से मेरे भीतर के स्फुरण और स्पंदन जीवित रहते थे।

लेखनी और वक्तव्य कला के धनी राजेन्द्र बाबू में प्रशासनिक क्षमता भी असाधारण थी। आखिर तभी तो अपने दफ्तर के प्रशासन विभाग में रहने के बावजूद अधिकारियों एवं सहकर्मियों के साथ इनका अटूट और गहरा संबंध था। वे सर्वप्रिय थे अपने आचरण और आचार-व्यवहार के कारण, अपनी सरलता और सहजता के कारण। क्रोध तो उनके चेहरे पर कभी किसी ने देखा ही नहीं। सहिष्णुता और करुणा भी उनमें कूट-कूट कर भरी थी। मूल्य-मर्यादाओं की प्रेरणा मैंने उन्हीं से ग्रहण की और लोकचेतना जगाने का प्रोत्साहन भी। सच कहा जाए तो राजनीति पर दो टूक विश्लेषण का गूढ़ भी मैंने उन्हीं से सीखा क्योंकि उसपर उनकी पकड़ अच्छी-खासी थी। अपने पांव में काँटे चुभो कर हमारा पथ-प्रशस्त करके उन्हें आनंद का अहसास होता था और इनकी धर्म पत्नी मेरी भाभी जी भी हमारी श्रीमती को स्नेह देने में प्रसन्नता का अनुभव। यही कारण है कि हमारे दिल में राजेन्द्र बाबू के लिए एक विशेष स्थान है।

बिहार प्रांत के नालंदा जिलांतर्गत नेपुरा गाँव में जन्में आर०पी० सिन्हा दो भाई थे।

शेषांक पृष्ठ 49 पर...............

ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना की क्या गारंटी

विचार कार्यालय, दिल्ली

ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना ने अब कानून का रूप ले लिया है। इस कानून के अंतर्गत ग्रामीण भारत के हर परिवार के कम से कम एक बालिग बेरोजगार अकुशल मगर कार्याध्यक्ष सदस्य को साल में कम से कम 100 दिन का रोजगार उपलब्ध कराया जाएगा। रोजगार की दिहाड़ी यानी मजदूरी 60 रुपये प्रतिदिन होगी कानून द्वारा रोजगार उपलब्ध कराना यानी रोजगार को कानूनी अधिकार बनाना इस योजना की विशेषता भी है और इसकी सीमा भी।

आज के दौर में भारत की जो सापेक्ष अर्थनीति है उसमें मुक्त और प्रतियोगितात्मक अर्थव्यवस्था का कोई स्थान नहीं है। इसलिए यह मान लेना कि इस योजना का क्रियात्मक सहजता और सरलता से हो जाएगा, मौजूदा भारतीय राजनीतिक-आर्थिक चरित्र के संदर्भ में नासमझी कही जाएगी। यहाँ महाराष्ट्र के सोलापुर के मूले गाँव में रोजगार गारंटी योजना लागू है लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि वहाँ कोई भी ग्रामीण काम पर नहीं है। वहाँ के ग्रामीणों से पूछने पर पता चला कि ठेकेदार बाहर से मजदूरों को बुलाकर काम पूरा करा लेते हैं और योजना का पेट कागजों से भर देते हैं। कमोवेश हर जगह यही स्थितियाँ देखी जा सकती हैं।

जो हो, योजना के प्रारंभिक चरण में दो सौ जिलों में जब इसे क्रियान्वित करने की बात कही गई है तो आशंका कानून को लेकर नहीं क्रियान्वयन को लेकर ही होती है। इस योजना के क्रियान्वयन को लेकर आशंकाएँ ये भी हैं कि जब कृषि क्षेत्र में रोजगार उपलब्ध नहीं है तो एक अकुशल ग्रामीण के पास सिवाय इसके कि वह ढुलाई, खुदाई, चिनाई जैसे काम करे, दूसरा कोई रास्ता नहीं रहता। सड़कें, पुल, भवन निर्माण जैसे कार्यों में ही रोजगार की संभावना बनती है। हालांकि इस तरह के कार्यों के माध्यम से ग्रामीणों को रोजगार उपलब्ध कराने का अब तक का अनुभव अच्छा तो नहीं रहा है। बिना कानूनी जामा पहनाए भी इस तरह की योजनाएँ लागू की गई हैं मगर उनसे न तो ग्रामीण क्षेत्रों की बेरोजगारी घटी, न गरीबी घटी और न वहाँ से पलायन रुका।

अब तक के अनुभवों से सबक यह मिलता है कि अधिकारियों और ठेकेदारों की गिरफ्त से बाहर रख योजनाओं में ग्रामीणों की सीधी भागीदारी जब तक नहीं बढ़ायी जाती और योजना को लागू कराने के लिए जब तक विशेष रूप से सक्षम और यथा संभव स्वच्छ

छवि के अधिकारियों का चयन नहीं किया जाता तब तक इन योजनाओं का क्रियान्वयन मुश्किल होगा। रोजगार यथा संभव ग्रामीणों के अनुभव आवश्यकता और रुचि के अनुरूप हो। साथ ही क्षेत्र की अर्थव्यवस्था में ढाँचागत सुधार लाने वाला हो। इसके अतिरिक्त योजना का सफल क्रियान्वयन इस बात पर भी निर्भर करेगा कि उसे भ्रष्टाचारियों और राजनीतिक हस्तक्षेप से कितना मुक्त रखा जाता है।

वास्तव में यह एक कठिन चुनौती है पर असंभव नहीं। इस समस्या का समाधान भी ग्रामीणों की चेतना का विकास और उनकी सक्रिय भागीदारी से ही हो पाएगा और सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के सही क्रियान्वयन के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत है। दरअसल राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना के कानून लागू करने पर पारदर्शिता होनी चाहिए लेकिन हकीकत स्थिति यह है कि ग्रामीण विकास मंत्रालय परेशान इस बात को लेकर है कि जिस मकसद से काम किया जा रहा था, उसमें योजना आयोग का रुख बिल्कुल ही गाँव गरीब के पक्ष में नहीं दिखता है, हालांकि प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह इस योजना में दिलचस्पी ले रहे हैं। सच तो यह कि विकास और जनकल्याण, चाहे वह नगर का हो या गाँव का उससे संबंधी किसी भी योजना की सफलता नौकरशाही के रवैए पर ही निर्भर करती है, यह नौकरशाही का रवैया ही है जिसके चलते सरकारी योजनाएँ लंबित होने के साथ ही लक्ष्य से भटकती हैं। वस्तुत: इन योजनाओं के भ्रष्टाचार से ग्रस्त होने का कारण भी मूलत: नौकरशाही ही है। केंद्र अथवा राज्य सरकारों को यह समझना ही होगा कि यदि नौकरशाही की कार्य संस्कृति में परिवर्तन नहीं लाया गया तो राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना हो या भारत निर्माण सरीखी योजनाओं के जरिए देश अथवा उसके गाँवों की तस्वीर में खुशनुमा रंग भरना मुश्किल ही होगा।

योजना आयोग की हाल ही में जारी एक रपट के अनुसार देश के 40 प्रतिशत किसान खेती से पीछा छुड़ाना चाहते हैं और 27 प्रतिशत किसानों का यह मानना है कि खेती लाभकारी व्यवसाय नहीं। यह बहुत ही गंभीर स्थिति है। भारत में कृषि की दयनीय दशा कृषि क्षेत्र की उपेक्षा का ही परिणाम है। इसलिए समय की माँग है कि कृषि क्षेत्र की समस्याओं पर चिंतित और दु:खी होने की बजाय किसानों की स्थिति को बेहतर बनाने की कोशिश की जाए ताकि अन्य ग्रामीण आबादी के स्तर में भी सुधार आए।

क्या इतना नाजुक है हिंदू धर्म

डॉ॰ बीबी गिरि

हम हिंदू उदारमना हैं यह प्रमाणपत्र हम खुद को बेहद उदारता से देते हैं। ऐसा करते वक्त हम अपनी कूप-मंडूकता, कृपणता एवं वर्गभेद-हिंसा को जानबूझ कर भूल जाते हैं। जात-पात, छुआ-छूत एवं ऊँच-नीच हमारी सोच में इस कदर भरी हुई है कि हमारा सामाजिक व्यवहार, आर्थिक व्यापार, राजनीतिक गतिविधि ही नहीं, वरन मंदिरों में प्रवेश के मामले में भी इस सोच की निंदनीय अभिव्यक्ति जब-तब होती रहती है। एक जन्मना ईसाई अमेरिकी लड़की एक भारतीय (हिंदू) से विवाह करती है। विवाह से पूर्व आर्यसमाजी मत से शुद्ध होकर हिंदू धर्म को अंगीकार करती हैं, परंतु उसे इसके बावजूद मंदिर में प्रवेश से रोक दिया जाता है यह कहकर कि वह जन्मना हिंदू नहीं है। थाईलैंड की राजकुमारी भारत आती है। भारत सरकार उन्हें प्रतिष्ठित इंदिरा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित करती है। राजकुमारी बौद्ध मत की अनुयायी और संस्कृत की विद्वान हैं। परंतु उन्हें पुरी एवं भुवनेश्वर के हिंदू मंदिरों में प्रवेश से रोक दिया जाता है। थाईलैंड के राजा को विष्णु का अवतार माना जाता है। प्रकारांतर से विष्णु की बेटी को हिंदू मंदिर में नहीं जाने दिया जाता है।

एक सर्वज्ञात विक्षिप्त व्यक्ति तिरूवनंतपुरम के एक हिंदू मंदिर में प्रवेश कर जाता है। जिससे पूरे मंदिर की पवित्र जल से धुलाई की जाती है। कारण कि वह ईसाई था। यह बौद्धिक दीवालिएपन का पराकाष्ठा है। ठीक वैसे जैसे मंटो ने टोबा टेक सिंह कहानी में दर्शाया है। सवाल उठता है कि क्या हिंदू मत इतना कमजोर है कि किसी विधर्मी के मंदिर आदि में प्रवेश मात्र से उसकी जड़ें हिल जाने का खतरा पैदा हो जाता है। वैसे तो सभी धर्म तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते हैं। परंतु हिंदू औरों से इस मायने में भिन्न हैं कि उनमें कर्मकांड की बहुलता है और ऊँच-नीच का भाव उसकी संरचना में अंतर्निहित है। ऐसे में, जाहिर है, भेदभाव होगा। बात हीं तक सीमित रहती तो भी गनीमत थी। हिंदू मत में तो छुआछूत भी है जो जितना निम्न जाति का वह छुआछूत का उतना ही अधिक शिकार होता है। निम्न जाति का निर्धारण इस आधार पर होता है कौन कितना गंदगी भरा काम करता है। वर्ण,

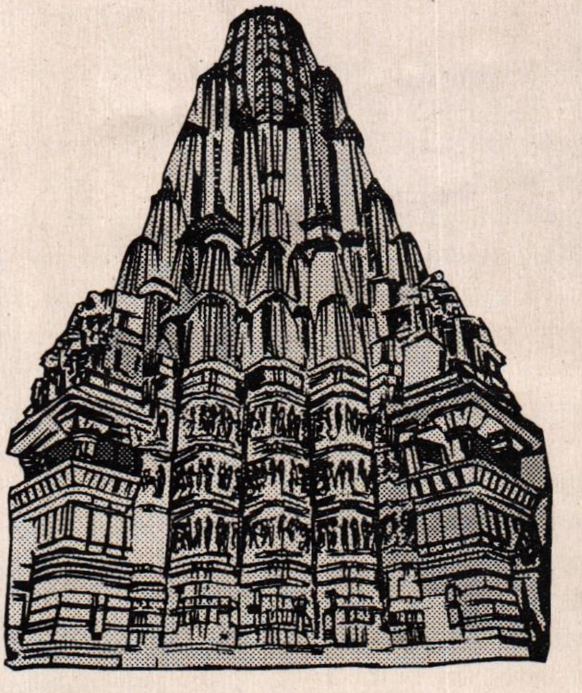

जन्म एवं पेशे को हिंदू मत में इस कदर गड्डमड्ड कर दिया गया है कि अमेरिका और यूरोप में जा बसे हिंदू भी इस बीमार सोच को ढोने में शर्मिंदगी महसूस नहीं करते हैं। 'गर्व से कहो हम हिंदू हैं' की नारेबाजी में वह पेशोपेश रहे हैं। अमेरिका एवं यूरोप से विश्व हिंदू परिषद को प्राप्त अपार धन एवं समर्थन इसे सिद्ध करते हैं। कल के दलित यदि ऊपर उठ भी गए तो उन्हें याद दिलाया जाता है कि तुम हो तो दलित ही।

कोई भी धर्मस्थल/पूजास्थल किसी भी मत विशेष का एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्षेत्र होता है। एक सम विशेष था आरती, नमाज, प्रार्थना के सम विधर्मी की प्रविष्टि निषेध की जाती है तो बात समझ में आती है परंतु शोध समय में यह पाबंदी क्यों? खानपान संबंधी या सबंधी या सामाजिक व्यवहार संबंधी कोई अन्य गतिविधि भी प्रतिबंधित की जाती है तो भी समझ में आती है, परंतु कुतर्कों के आधार पर किसी को प्रवेश न दिया जाए और जानबूझ कर बेइज्जत करने के इरादे से प्रवेश न करने दिया जाए तो यह सर्वथा निंदनी है। आमतौर पर हिंदू मंदिरों में जितनी गंदगी होती है उसके मुकाबले में जरा गुरुद्वारे को, मस्जिद को, गिरिजाघर को तो देखें। जो मत इतना संकुचित हो कि उसके अनुयायी होने का अधिकार मात्र जन्म के आधार पर मिलता हो तो वह मत फैल नहीं सकता। उसकी नियति मात्र सिकुड़ने तक ही रहती है। हिंदू मत का इतिहास इसका उदाहरण है। थाईलैंड एवं इंडोनेशिया में हिंदू संस्कृति की छाप देखने को मिलती है, परंतु वहाँ हिंदू नहीं हैं। जो मत पूजा-पाठ की जगह पर भेदभाव करता हो (जन्म के आधार पर, पेशे के आधार पर, समृद्धि के आधार पर) उसे कोई क्यों माने? भारत में इस्लाम के फैलाव में हिंदू मत में अंतर्निहित छुआछूत की भावना ने बहुत बड़ी भूमिका अदा की है। प्राचीन काल में भी

वैदिक से अवैदिक (जैन, बौद्ध) मतों की ओर निष्क्रमण के पीछे भी यही कारण था। स्व. इंदिरा गाँधी को पूरी के मंदिर में इसलिए प्रवेश नहीं करने दिया गया कि उन्होंने एक पारसी से शादी की। यह शादी वैदिक रीति से हुई उन्होंने धर्म नहीं बदला, इस तथ्य की जानबूझ कर अनदेखी की गई। न सिर्फ संकुचित सोच वरन राजनीतिक कारणों से इंदिरा जी को प्रवेश नहीं करने दिया गया। स्व. प्रभूदत्त ब्रह्मचारी और पूरी के शंकराचार्य सदा से नेहरू-गाँधी परिवार के तथा काँग्रेस के घोर विरोधी रहे हैं। इनका राष्ट्रीय स्वंसेवक संघ से प्रगाढ़ नाता रहा हैं इस तथ्य को भी नजरंदाज किया गया कि इंदिराजी उस वक्त देश की प्रधानमंत्री थीं, भारत एक पंथ-निरपेक्ष राष्ट्र है और विश्वास/मत का मूलाधिकार सार्वजनिक व्यवस्था की अनुरूपता के आधार पर ही सुनिश्चित है इससे भी अधिक इतिहास विरोधी एवं हिंदू विरोधी कृत्य तब किया गया जब ज्ञानी जैल सिंह को राष्ट्रपति होते हुए भी मंदिर में नहीं जाने दिया गया। प्रकारांतर से यह उस अकाली (जाट) सोच की ही अभिव्यक्ति थी कि सिख न तो हिंदू हैं और न ही मुस्लिम हैं। वह एक अलग कौम है। अकाली (जाट) मीरी एवं पीरी की बात करते नहीं थकते, परंतु अपने नियंत्रण वाले गुरुद्वारों में रामगढ़ियों एवं मजहबियों के प्रवेश का स्वागत भी नहीं करते हैं। यह एक अजीब स्थिति है। पंजाब/सिंध एवं पंजाबियों/सिंधियों में अनगिनत परिवार ऐसे हैं जिनमें हिंदू-सिख रिश्तेदार मिल जाएँगे। अगर वह एक ही नहीं है तो यह संबंध कैसे बनते हैं। इसी प्रकार आज के जैन मतावलंबियों के हिंदू (वैश्यों) से वैवाहिक संबंध होते हैं।

कुतर्क की पराकाष्ठा तो यह है कि भारत के जैन और बौद्ध को मंदिर प्रवेश को तो अनुमन्य घोषित किया जाता है परंतु विदेशी बौद्धों को प्रवेश नही दिया जाता । इस तथ्य को नकारा जाता है कि जब वहाँ बौद्ध धर्म पहुँचा तो वहाँ के मूल निवासी का कोई धर्म (पूजापाठ, जादूटोना, कर्मकांड का संगठित विधान) ही नही था आज भी भारत के अधिकांश आदिवासी ऐसे किसी मत के अनुयायी नहीं हैं। उनके अपने रीति-रिवाज हैं, भगवान हैं आदि-आदि। परंतु उन्हें स्वत: ही हिंदू मान लिया जाता है। कुछ समय से संघ के कुछ संगठन आदिवासी बहुल क्षेत्रों मे उनकी घर वापसी का अभियान चला रहे हैं।, उनका शुद्धिकरण हो रहा है। आखिर उन्हें प्रवेश का अधिकार होगा या नहीं और कथित घरवापसी के बाद वर्णो की व्यवस्था में उनका क्रम क्या पुन: निचले पायदान पर यानी अछूत का होगा, यह नहीं बताया जा रहा है। जिन्हें आज दलित कहते है उनके हिंदू मंदिरों में प्रवेश का आंदोलन चलता रहा है। तंग होकर, थक कर डा॰ अंबेडकर ने अपने अनुयायियों समेत बौद्ध मत स्वीकार कर लिया। परंतु हिंदू समाज के ठेकेदार हैं कि वह अपनी गुत्थिों को सुलझाने को ही तैयार नहीं हैं। अब वक्त आ गया है कि मंदिरों की सामाजिक उपादेयता पर विचार किया जाए। हिंदू मंदिर न तो भूखे को रोटी देते हैं और न ही आपातकाल में निराश्रित को आश्रय देते हैं और न ही आपातकाल में निराश्रित को आश्रय देते हैं जैसे उसे गुरुद्वारे में मिलता है। इसी प्रकार पूजा के क्रम में ऊँची हैसियत एवं पैसेवालों को अग्रणी होने का अलिखित अधिकार भी बंद होना चाहिए। यदि हिंदू मंदिरों के कर्ताधर्ता (पंडे-पुजारी-पुरोहित) यह सब करने को राजी नहीं हो तो बेहतर होगा कि इन मंदिरों की उनकी स्थापत्य की खूबसूरती एंव खूबसुरती के बावजूद नष्ट होने दिया जाए। आखिर मंदिरों में एकत्र अकूत धन-संपत्ति किसके लिए है? लोगों का चढ़ावा सार्वजनिक संपत्ति क्यों नहीं घोषित किया जाता? बात सिर्फ मंदिर प्रवेश की नहीं बल्कि हिंदू मत में लोच अभाव की है।

-महामेघा से साभार

राष्ट्रीय स्वाभिमान को धक्का, बापू की समाधि को सूँघा बुश का कुत्ता

विचार कार्यालय दिल्ली। पिछले दिनों अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश की भारत-यात्रा के दौरान जब राजघाट स्थित राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की समाधि पर जाने का उनका कार्यक्रम बना तो उसके पूर्व सुरक्षा की दृष्टि से अमेरिकी डाग स्क्वायड कुत्ता ने बापू की समाधि को सूँघा। जिस समाधि पर इस देश को लोग अपने शीश नबाते हैं, समाधि के जिन रास्तों पर राष्ट्राध्यक्ष जाते और पुष्प अर्पित करते हैं उस रास्ते पर चलकर बुश का कुत्ता पवित्र समाधि को सूँघता है। क्या इसे राष्ट्रीय अपमान नहीं कहा जाएगा? क्या इससे हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को एक बार फिर धक्का नहीं लगा।

आपको याद होगा पिछले वर्ष 'विचार दृष्टि' के संपादकीय में लिखा गया था कि भारत के तत्कालीन रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडीस के अमेरिका जाने पर दो बार उनकी जामा तलाशी ली गयी थी, यहाँ तक उनके कपडे और जूते भी उतरवा लिए गए थे, फिर भी उन्होंने कोई एतराज न जताकर न केवल अपने अपमान का घूँट पी लिया था, वल्कि हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान को ताख पर रख दिया था। उस अपमान को इस देश के वासी अभी भूल भी नहीं पाए थे कि पुन: हमारा राष्ट्रीय अपमान हुआ। समाचार तो यह भी आया कि भारत के प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह की भी जार्ज बुश से एयरपोर्ट पर मिलने के पूर्व अमेरिकी एजेंसी द्वारा जाँच की गयी जिसका खंडन किया गया।

अमेरिका को शायद यह नहीं पता है कि बापू की समाधि से हम देशवासियों की आस्था जुड़ी है, हमारी भावनाएं जुड़ी हैं। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों के विरोध के बावजूद अमेरिकी अधिकारियों ने जिस प्रकार बापू की समाधि के चारों ओर सुरक्षा जाँच के

नाम पर कुत्तों की परिक्रमा कराकर समाधि को सुँघाया गया, यह न केवल गाँधी बल्कि पूरे राष्ट्र का घोर अपमान है। संसद में इस घटना को लेकर पिछले दिनों जमकर हंगामा भी हुआ और

बुश से माफी माँगने की बात उठी पर सरकार ने इसे मानक सुरक्षा डील करार देकर रफा-दफा कर दिया। आखिर कब तक हम अपने देश के स्वाभिमान की कीमत पर अमेरिकी साम्राज्यवादियों के आगे नतमस्तक होते रहेंगे? यह प्रश्न आज यहाँ की आम जनता के समक्ष कौंध रहा है। इस शर्मनाक घटना पर सुप्रसिद्ध गाँधी वादियों ने भी अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि यदि बुश को अपनी जान की इतनी ही चिंता हो तो उन्हें राजघाट जाना ही नहीं चाहिए था। उधर अधिकारी को दोबारा समाधि तक जाने से रोकनेवाले गाँधी समाधि के सचिव रजनीश अचानक छुट्टी पर चले गए। महात्मा गाँधी के प्रपौत्र तुषार गाँधी ने भी इस चेतना को राष्ट्रीय शर्म करार देते हुए इस तरह की हरकत को भारतीयों के लिए अपमान बताया है।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि बापू की समाधि हमारे राष्ट्र की संपत्ति है और ऐसे में उसकी पवित्रता का ख्याल रखना हम सभी का कर्त्तव्य है। दरअसल हमारे राजनेता लालच में फँसे हुए लोग हैं इसलिए उन्हें नैतिक मानदंडों को ताक पर रखने में कोई कष्ट नहीं होता। ऐसी ही घटना पाकिस्तान में मुहम्मद अली जिन्ना की मजार पर हुई थी तो इस घटना ने पाकिस्तान में जन-आंदोलन का रूप ले लिया था।

बैंगलूर में हिंदी भाषा कुंभ संपन्न

विगत 3 फरवरी से 6 फरवरी तक केंद्रीय हिंदी निदेशालय, दिल्ली, मैसूर हिंदी प्रचार परिषद और अखिल कर्नाटक साहित्य परिषद के संयुक्त तत्त्वावधान में बैंगलूर में आयोजित द्वितीय हिंदी भाषा कुंभ संपन्न हुआ। इस कुंभ में हिंदी से जुड़े विभिन्न

पहलुओं पर कुछ आठ सत्रों में गंभीर विचार-विमर्श सहित हिंदी की वर्तमान स्थिति पर चर्चा हुई। कुंभ का उद्घाटन किया कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री धरम सिंह ने किया और कुंभ के कार्याध्यक्ष डॉ॰ रत्नाकार पांडे ने अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी को आगे बढ़ाने के लिए सभी भारतीय भाषाओं को आगे बढ़ाने तथा उन्हें समृद्ध करने पर बल दिया हिंदी को और संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के लिए महात्मा गाँध ी की तरह सदैव संघर्षरत रहने की आवश्यकता जताई। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि अगला विश्व हिंदी सम्मेलन हॉलैंड में होने जा रहा है।

इस अवसर पर कुंभ में नीदरलैंड से पधारे डॉ॰ मोहन गौतम ने भी इस बात पर जोर दिया कि हिंदी को भारत की अधिकृत राष्ट्रभाषा के रूप में संयुक्त राष्ट्रसंघ में अंगीकृत किया जाना चाहिए। सुप्रसिद्ध कवि व साहित्यकार बाल कवि वैरागी ने कहा कि हिंदी धैर्य की भाषा है। केंद्र सरकार के राजभाषा सचिव मदन लाल गुप्त ने भी हिंदी को अपने ही घर में ठीक करने की बात कही। डॉ॰ मैनेजर पांडे ने हिंदी को विज्ञान की भाषा बनाए जाने पर जोर दिया। 5 फरवरी को कर्नाटक के राज्यपाल टी.एन. चतुर्वेदी ने भी कुंभ को संबोधित किया।

विचार कार्यालय, बैंगलूर

समझो तो यह जीवन हीरा

लभदेव बटेजा

समझो तो यह जीवन हीरा
ना समझो कौड़ी कानी।
संतों का यह कहना है,
ऋषियों की यह वाणी।
समझो तो -------
क्या जीवन इसी को कहते हैं?
खाना, पीना और सोना,
यह जीना नहीं है प्यारे
इसको समझो जुर्माना।
सचमुच वह जग में जीता,
जो यश पाता है प्राणी।

समझो तो ....
औरों के जो काम आएण
धन्य है इसका जीना।
दुखियों के दुख में होता,
है छलनी है जिसका सीना।

संपर्क : एस-496, स्कूल ब्लॉक,
शकरपुर, दिल्ली-92

साभार स्वीकार

पुस्तकें

- सैनिकों के लिए हँसिकाएँ
- अनोखेलाल
  लेखिका-डॉ॰ सरोजनी प्रीतम
  हास्य अकादमी, सी-111
  न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-60
- प्राण काव्य: एक अभिव्यक्ति
  लेखक: मनोज कुमार
  प्रकाश: शिव ॐ साँई प्रकाशन
  95/3, वल्लभ नगर, इंदौर-452003
- अहिंसा प्रशिक्षण
  210, दीन दयाल उपाध्याय
  नई दिल्ली-110092
- कर्ज में डूबे हुए मुल्क
  की हम बात करें
- यह मेरा हिंदुस्तान नहीं
  व्यंग्य संग्रह लेखक: अभय जैन,
  मुंबई
- बिहार विधान-मंडल में
  गौरव पुरुष वीरचंद पटेल
  संपादक: विपिन विप्लवी
  प्रकाशक: वीरचंद पटेल सेवा-संस्थान
  बिहार, पटना
- दहेज विभिन्नताएँ सह-समाधान
  कब तक जलती रहेंगी बहुँए/बेटियाँ
  लेखक: क्रांति प्रसाद महतो
  प्रकाशक: झारखंड आदिवासी
  कुड़की समाज 'लाइफ' लीची बगान,
  लोवाडीह पो॰ नामकुम,
  राँची-834010
- मेघदूतम इन इंगलिस भर्स
  लेखक: राम भरोसा सिंह
  प्रदाशक: जानकी प्रकाशन, पटना
  अशोक राज पथ, चौहट्टा, पटना-4

पत्रिकाएँ

- बच्चों का देश-फरवरी 2006
  संपादक: कल्पना जैन,
  7, उषा कॉलोनी, मालवीय नगर,
  जयपुर-17
- अणुव्रत-जनवरी, फरवरी, मार्च 06
  संपादक: डॉ महेन्द्र कर्णावट,
  नई दिल्ली-110002
- तैलिक बंधु-दिसबंर 05, जनवरी 06
  प्र. संपादक: श्री कृष्ण शाह
  साहु समाज भवन, बिहारी साव लेन
  पटना-800004
- आपका भविष्य-अंक-44
  संपादक: डॉ॰ आर.बी. धवन
  एफ-265, गली नं. 22,
  लक्ष्मीनगर, दिल्ली-110092
- विवरण पत्रिका-जनवरी-मार्च 06
  संपादक: घोण्डीराव जाधव
  हिंदी प्रचार सभा, नामपल्ली,
  हैदराबाद-1
- चक्रवाक-जुलाई सितम्बर 05 संपादक:
  निशांतकेतु शब्दाश्रम, बी-970,पालम
  गुड़गाँव-122017
- प्रबुद्धवाणी-जुलाई 03 से मार्च 05
  प्र॰ संपादक: मोहन प्रेमयोगी
  प्रकाशक: प्रबुद्ध हिंदू समाज, पटना
- संकल्य - अक्टूबर-दिसंबर 05 प्रधान
  संपादक: प्रो॰ टी॰ माहन सिंह
  प्रकाशक: गोरखनाथ तिवारी सचिव,
  हिंदी अकादमी, हैदराबाद –
  फ्लैट न॰ 259 की/वी, ब्लाक नं॰11,
  तीसरी मंजिल, जनप्रिया टाउनशिप,
  मल्लापुर, हैदराबाद-76 (आँ॰प्र॰)
- महाभोजपुर-अक्टूबर-दिसंबर 05
  संपादक: विनोद कुमार देव
  ए-8, आनंद विहार कालोनी
  अम्बेडकर पथ, पटना-14
- साहित्य अमृत-फरवरी 06
  संपादक: डा॰लक्ष्मीमल सिंघवी
  प्रकाशन: 4/19, आसफअली रोड,
  नई दिल्ली-2
- मिसाप राज भाषा पविरात वर्ष-2
  अंक 37
  संपादक: विनय वीर
  5-4-674, कट्टी मंडी,
  हैदराबाद-50000/-

पाँच मुक्तक

जे॰ पी॰ शर्मा

From Beyond The Mind
Writer J.P. Sharma

दानी, दस्यु लुटेरे हों जब
चोर करें घर की रखवाली
ऐसे हैं भारत के नायक
छवि थी जिनकी सदा निराली

क्रूर, कुचक्र, कुचाली कटुता
कुंठित कण्ठ कलंकित काया
विषम विसंगति विवश वेदना
व्यंग्य-व्यथा नेता की माया

शपथ ले रहे भ्रष्टाचारी
भ्रष्टाचार मिटा देने की
सभी युधिष्ठिर धर्मराज हैं
अभिलाषा सत्ता पाने की

सत्ता, नाम साथ हो पैसा
भारत का नेता है ऐसा
हर वाणी से यही निकलता
नेता हूँ मैं गाँधी जैसा

खोज करें
भारत के अंदर
निर्धन एक मिले नहीं नेता
रूह चाटता, स्वांग रचाता
हिंसा करता शिक्षा देता

संपर्क: पूर्व प्रधानाचार्य
ए/6 ए, न्यू फ्रेंड्स कॉलोनी,
नई दिल्ली

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो

झारखंड

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

परीक्षा

प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रुपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

अहिंसा समवाय द्वारा राष्ट्रीय विचार मंच सहित अनेक समानधर्मी संस्थाओं की सहभागिता से 26 मार्च, 2006 को नई दिल्ली के अणुव्रत भवन सभागार में आयोजित अहिंसा प्रशिक्षण कार्यशाला के विभिन्न सत्रों की झाँकी

वर्ष : 8 अंक : 27 अप्रैल-जून 2006 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

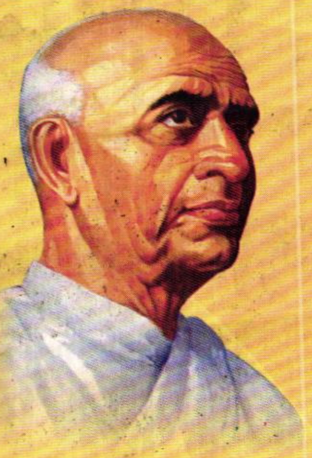

'विचार दृष्टि' के आठवें वर्ष में प्रवेश पर
हमारी शुभकामनाएँ

पटेल फाउंडेशन
सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित

संस्था का ध्येय है –

- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बनें।
आपका सहयोग अपेक्षित है।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली
फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

पटना हड्डी एवं रीढ़ रोग अस्पताल प्रा.लि.
Patna Bone & Spine Hospital Pvt. Ltd.

LOCOMOTION · THE ESSENCE OF LIFE

A Centre Dedicated to Advanced Care of Bone & Spine Surgery Only

1. टूटी हड्डियों को कम्प्यूट्रीकृत एक्सरे (IIT) के द्वारा बैठाने की सुविधा।
2. हाथ/पाँव की सभी हड्डियों के टूट बिना प्लास्टर, बिना ज्यादा चीर-फाड़ के क्लोज्ड इन्टर लौकिंग नेल (Close Interlocking Nail) द्वारा इलाज, ताकि मरीज तुरन्त चल सके।
3. छोटे छिद्र द्वारा (Arthroscopic) घुटने के अन्दर की खराबियों का इलाज।
4. जन्मजात, पोलियो, चोट के बाद टेढ़ी-मेढ़ी हड्डियों का इलिजारोब (Ilizarov) तकनीक द्वारा इलाज।
5. रीढ़ (गर्दन समेत) की हड्डियों एवं नस का ऑपरेशन, छोटे छिद्र (Microdiscectomy) द्वारा डिस्क प्रोलैप्स का ऑपरेशन।
6. रीढ़ की चोट की सम्पूर्ण एवं विशिष्ट चिकित्सा।
7. पूर्ण जोड़ प्रत्यावर्तन (Total Joint Replacement)।
8. वास्कुलर, न्यूरो, प्लास्टिक, फेसियोमैक्जिलरी, माइक्रो सर्जरी के विशेषज्ञों द्वारा एक दल के रूप में बहुअंगीय (Polytrauma) कठिन चोटों का इलाज।
9. हृदय, न्यूरो, छाती के औषधि विशेषज्ञों की देख-रेख।

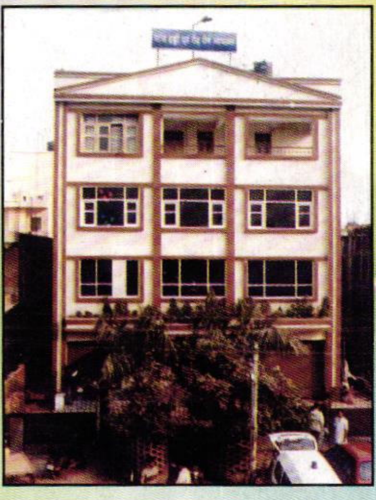

Dr. Vishvendra Kumar Sinha
M.B.B.S. (Pat.), D. orth. (Pat.) M.S. (orth.), FICS (USA) Ph.D. (orth.)

H-3, Doctors Colony, Kankarbagh, PATNA-800 020 Ph. : 2361180
एच.-3, डॉक्टर्स कॉलोनी, कंकड़बाग, पटना-800 020. फोन : 2361180

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर